जयपुर • कोटा • बीकानेर • उदयपुर • अजमेर • जालोर • हिण्डौनसिटी • चूरू

राष्ट्रदूत

epaper.rashtradoot.com

हिण्डौन सिटी

Rashtradoot

फोन:- 230200, 230400 फैक्स:- 07469-230600 वर्ष: 17 संख्या: 327 प्रभात हिण्डौन सिटी, मंगलवार 30 सितम्बर, 2025 पो. रजि.SWM-RJ-6069/2017-18 पृष्ठ 6 मूल्य 2.50 रु.

चीन खुले दिल और मुक्त हाथों से डॉक्टर, इंज़ीनियर व साइंटिस्टों का स्वागत कर रहा है

इससे भारत को दोहरा खतरा है, पहले तो जल्दी ही चीन अमेरिका को पछाड़कर विश्व की नम्बर वन ताकत बन सकता है, दूसरे एशिया के सामरिक संतुलन में चीन अब भारत से बेहिसाब भारी पड़ जायेगा

-अंजन रॉय-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

- इस दौड़ में चीन को दो बातों से मदद मिल रही है, पहली शीर्ष नेतृत्व (राष्ट्रपति शी जिनपिंग) स्वयं आगे बढ़कर स्वागत कर रहे हैं। दूसरी चीन के पास अथाह धन है, इसे फलीभूत करने के लिए। टॉप साइंटिस्ट को लुभाने के लिए चीन 5-5 लाख डॉलर का वार्षिक पैकेज ऑफर कर रहा है।
- चीन के इस प्रयास को सफलता इसलिए भी मिल रही है, क्योंकि वहाँ अंतर्राष्ट्रीय स्तर के कई संस्थान (इन्स्टीट्यूट) पहले से ही विद्यमान हैं, इन साइंटिस्टों को एब्ज़ॉर्ब करने के लिए।
- इसकी तुलना में भारत में कुछ संस्थाएँ हैं और धन भी है, किन्तु विदेश में स्थित इस टेलैंट को लुभाने के लिए संख्या में बहुत कम हैं।
- इस प्रकरण में एक और समस्या है कि इन भारतीय संस्थाओं में पहले से आधिपत्य जमाये लोग नये आने वालों के पैर आसानी से जमने नहीं देना चाहते।

नई दिल्ली, 29 सितंबर। डॉनल्ड ट्रम्प द्वारा एच-1बी वीज़ा के लिए लगाई गई बहुत ऊंची फीस भारत के लिए गंभीर सिरदर्द है। इसका असर केवल भारत के आईटी सेक्टर और अमेरिका को होने वाले सेवा निर्यात पर ही नहीं पड़ेगा, बल्कि यह भारत के लिए समग्र सुरक्षा परिवेश और रणनीतिक-कूटनीतिक परिदृश्य के लिए भी बड़ी चिंता है।

अन्य बातों के अलावा, अगर चीन अमेरिका से निकल रही बेहतरीन और शीर्ष प्रतिभाओं का अच्छा हिस्सा अपने देश में लाने में कामयाब हो जाता है, तो वह कम समय में अमेरिका पर अपनी तकनीकी रक्षा बढ़त को अधिक प्रभावी ढंग से हासिल कर पाएगा। यह केवल अमेरिका के लिए ही नहीं, बल्कि भारत के लिए भी तात्कालिक चुनौती बन सकती है।

ट्रम्प द्वारा प्रवासी वैज्ञानिकों और तकनीकी कर्मियों पर की जा रही सख्ती का जिक्र करते हुए सीएनएन ने एक प्रमुख चीनी वैज्ञानिक को उद्धृत किया, जो अब अपने देश लौट चुके हैं। उन्होंने कहा, चीनी विश्वविद्यालय, एक "कथित" विरोधी से मिले इस अवसर का सक्रिय रूप से लाभ उठाने के लिए हर संभव प्रयास कर रहे हैं। विदेशों में

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

प्र.मंत्री मोदी ने लिखी मैलोनी की आत्मकथा की प्रस्तावना

नयी दिल्ली, 29 सितंबर। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने कहा है कि "आई एम जॉर्जिया माई रूट्स माई प्रिंसिपल्स" इटली की प्रधानमंत्री जॉर्जिया मेलोनी की केवल आत्मकथा नहीं है, यह उनके "मन की बात" है।

प्रधानमंत्री ने मेलोनी की आत्मकथा "आई एम जॉर्जिया माई रूट्स माई प्रिंसिपल्स" की प्रस्तावना लिखते हुए कहा है, "भारत और इटली

- प्र.मंत्री मोदी ने लिखा, यह इटली की प्र.मंत्री मैलोनी की आत्मकथा मात्र नहीं, बल्कि उनके "मन की बात है।"

संधियों या व्यापार से कहीं ज़्यादा विरासत की रक्षा, समुदाय की मज़बूती और नारीत्व को एक मार्गदर्शक शक्ति के रूप में मानने जैसे साझे मूल्यों से बंधे हैं।" उन्होंने कहा कि दोनों देशों में परंपराओं के प्रति सम्मान और आधुनिकता को अपनाने की एक जैसी भावनाएं मौजूद हैं। मोदी ने इन साझे मूल्यों को अपनी और मेलोनी की व्यक्तिगत मित्रता का आधार बताया है।

उल्लेखनीय है कि इस आत्मकथा की भूमिका में मोदी के अलावा, अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने भी

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

एक बार फिर भूपेन्द्र सिंह हुड्डा कांग्रेस विधायक दल के नेता बनाए गए

कांग्रेस प्रभारी व महासचिव हरि प्रसाद ने हुड्डा खेमे के पुराने वफादार राव नरेन्द्र सिंह को प्रदेशाध्यक्ष घोषित किया

- रेणु मित्तल -
- राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो -

नई दिल्ली, 29 सितम्बर। भूपेन्द्र सिंह हूडा हरियाणा में कांग्रेस के निर्विवाद नेता बने हुए हैं, भले ही पार्टी के भीतर उनके विरोधियों ने पिछले विधानसभा चुनाव की हार के लिए उन्हें पूरी तरह जिम्मेदार ठहराते हुए उनके खिलाफ जोरदार मुहिम छेड़ रखी हो।

भूपेन्द्र सिंह हूडा को एक बार फिर हरियाणा में कांग्रेस विधायक दल (सीएलपी) का नेता नियुक्त किया गया है, जबकि उनके समर्थक राव नरेन्द्र सिंह को नया प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष (पीसीसी) बनाया गया है।

असल में पार्टी की जिम्मेदारी एक बार फिर हूडा को सौंप दी गयी है, क्योंकि हरियाणा में पूरा विधायक दल उन्हीं के साथ खड़ा है।

काफी समय बाद, कांग्रेस ने प्रदेश अध्यक्ष के रूप में किसी दलित को नहीं, बल्कि पिछड़े वर्ग के नेता चुना है। इसके साथ ही भूपेन्द्र सिंह हूडा राज्य में जाट नेताओं में सबसे कद्दावर नेता माने जाते हैं।

- हुड्डा के विरोधी खेमे अब तक यह प्रचार करते रहे हैं कि गत चुनावों में हार का कारण हुड्डा का त्रुटिपूर्ण टिकट वितरण रहा है।
- हुड्डा को विधायक दल का नेता बनाने के पीछे यह कारण है कि अधिकांश विधायक हुड्डा समर्थक हैं।
- काफी समय से कांग्रेस प्रयास करती रही है कि हरियाणा में दलित नेता हो, पर, वो अब भी यह नहीं कर पाई है।
- बहुत समय से रणदीप सिंह सुरजेवाला पद प्राप्त करने का प्रयास कर रहे थे, किन्तु वो हुड्डा खेमे के नहीं हैं, इसलिए उन्हें पद नहीं मिला। एक बार फिर सुरजेवाला, हरियाणा की राजनीति केन्द्रीय स्तर पर करने को मजबूर हैं।

पार्टी संगठन का पुनर्गठन पिछली विधानसभा चुनावों से ही लंबित था और अब आखिरकार एआईसीसी के हरियाणा प्रभारी बी. के. हरिप्रसाद ने सारी अटकलों को खत्म करते हुए, अहम पदों की मंजूरी दे दी है।

रणदीप सिंह सुरजेवाला हरियाणा में कोई पद पाने की कोशिश कर रहे थे, लेकिन चूंकि वे हूडा के विरोधी हैं, इसलिए उन्हें हरियाणा में कोई जगह नहीं मिल सकी।

सुरजेवाला को हरियाणा से बाहर ही अपनी राजनीति करने पर संतोष करना होगा।

अडानी को प्रॉपर्टीज़ बेचने के लिए सुप्रीम कोर्ट से अनुमति मांगी, सहारा ग्रुप ने

सहारा समूह का कहना है कि देनदारियां निपटाने व अवमानना कार्यवाही को खत्म करने के लिए संपत्ति बेचने की मंजूरी जरूरी है

-जाल खंबाता-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

- सुप्रीम कोर्ट इस मामले पर 14 अक्टूबर को सुनवाई करेगा।
- सहारा समूह ने कहा कि सहकारी समितियों के जमाकर्ताओं का बकाया चुकाने के लिए सुप्रीम कोर्ट ने 24,030 करोड़ रूपए सेबी के रिफंड खाते में जमा करने का आदेश दिया था, इसमें से 1600 करोड़ रूपए जमा कराए जा चुके हैं, बाकी कराने हैं।

नई दिल्ली, 29 सितंबर। सहारा इंडिया कमर्शियल कॉरपोरेशन लिमिटेड (एसआईसीसीएल) ने सुप्रीम कोर्ट का रुख किया है, ताकि उसे महाराष्ट्र के ऐम्बी वैली और लखनऊ के सहारा शहर सहित, विभिन्न संपत्तियाँ अदाणी प्रॉपर्टीज प्राइवेट लिमिटेड को बेचने की अनुमति मिल सके।

यह याचिका हाल ही में सुनवाई के लिए उल्लेखित की गई थी और संभवत: 14 अक्टूबर को सुनवाई के लिए सूचीबद्ध हो सकती है।

वकील गौतम अवस्थी के माध्यम से दायर याचिका में कहा गया है, "सहारा समूह अपनी विभिन्न संपत्तियों को अदाणी प्रॉपर्टीज प्राइवेट लिमिटेड को उस मूल्य और शर्तों पर पूर्ण रूप से बेचने के लिए तैयार है, जैसा कि 6 सितंबर 2025 को हस्ताक्षिरत टर्म शीट में उल्लेखित है।"

अंतरिम आवेदन में कहा गया है कि सुप्रीम कोर्ट के विभिन्न आदेशों और अनुमति प्राप्त करने के बाद, (एसआईसीसीएल) और सहारा समूह ने बड़ी कठिनाई से कुछ चल और अचल संपत्तियों को नकदी में बदला, जिसकी आय सेबी-सहारा रिफंड अकाउंट में जमा की गई।

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

चीन में विश्व का सबसे ऊंचा पुल बनकर तैयार

- जाल खंबाता -
- राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो -

नई दिल्ली, 29 सितम्ब। बीपन नदी के ऊपर 625 मीटर की ऊँचाई पर बना चीनी पुल जो अब दुनिया का सबसे ऊँचा पुल है, बन कर तैयार है, जो घाटी के पार यात्रा के समय को दो घंटे से घटाकर सिर्फ दो मिनट कर देता है।

चीन ने आधिकारिक रूप से

- 625 मीटर ऊंचे पुल से यात्रा का समय 2 घंटे से घट कर 2 मिनट रह गया है।

"हुआजियांग ग्रैंड कैन्यन ब्रिज" को जनता के लिए खोल दिया है। गुइझोउ प्रांत में स्थित यह अद्भुत वास्तुशिल्प संरचना, 625 मीटर की ऊँचाई पर स्थित है और चीन के सबसे कठिन भू-भागों में कनेक्टिविटी की परिभाषा ही बदल देती है।

28 सितंबर को, लाइव ड्रोन फुटेज में देखा गया कि कैसे वाहन इस विशाल पुल को पार कर रहे थे, जिसके नीले सपोर्ट टावर्स नीली सहायक बादलों में आंशिक रूप से छिपे हुए थे।

क्रिकेट मैच के बाद भारत-पाक नेताओं में छिड़ी ज़ुबानी जंग

सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म "एक्स" पर दोनों देशों के नेता एक दूसरे पर आरोप लगा रहे हैं

- श्रीनन्द झा -
- राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो -

नई दिल्ली, 29 सितंबर। यह एक दुर्लभ घटना है कि क्रिकेट के खेल के बाद, दो पडोसी देशों के राजनीतिक नेताओं के बीच ज़ुबानी जंग छिड़ जाए। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने सोशल मीडिया साइट एक्स पर एक पोस्ट में एशिया कप फाइनल में पाकिस्तान पर भारत की जीत को 'बैटल सिंदूर' से जोडते हुए लिखा कि नतीजा वही रहा, भारत की जीत। इसके बाद, पाकिस्तान के गृहमंत्री और एशियाई क्रिकेट परिषद के अध्यक्ष मोहसिन नक़वी ने मोदी की इस पोस्ट पर प्रतिक्रिया देते हुए कहा, अगर युद्ध आपके गर्व का मानदंड था, तो इतिहास हमेशा पाकिस्तान के हाथों आपकी अपमानजनक हार दर्ज करता है। कोई क्रिकेट मैच इस सच्चाई को बदल नहीं सकता। खेल में युद्ध को घसीटना सिर्फ हताशा दिखाता है और खेल की मूल भावना का अपमान करता है।

- प्रधानमंत्री मोदी ने एशिया कप फाइनल में भारत की जीत को ऑपरेशन सिंदूर से जोड़ा और लिखा, "नतीजा वही रहा, भारत की जीत।"
- इस पर पाकिस्तान के गृह मंत्री मोहसिन नकवी, जो एशियाई क्रिकेट परिषद के अध्यक्ष भी हैं, ने जवाब में लिखा, अगर युद्ध आपके गर्व का मानदंड था तो इतिहास पाकिस्तान के हाथों हुई आपकी अपमानजनक हार को दर्ज करता है।
- सोशल मीडिया भी भारत-पाक क्रिकेट मैच के दौरान दोनों टीमों के व्यवहार पर टीका टिप्पणियों से अटा पड़ा है।

सोशल मीडिया पर भारतीय और पाकिस्तानी टीमों के व्यवहार को लेकर ढेरों टिप्पणियां हो रही हैं। मैदान पर खिलाड़ी हैरिस रऊफ का इशारा, जिससे उसने यह जताने की कोशिश की कि पाकिस्तान ने ऑपरेशन सिंदूर के दौरान भारत के छह विमान मार गिराए थे। इसी प्रकार, भारतीय खिलाड़ियों का रवैया, जिन्होंने पाकिस्तानी खिलाड़ियों से हाथ मिलाने, उनके साथ फोटो खिंचवाने और यहां तक कि मोहसिन नक़वी से ट्रॉफी लेने तक से इनकार कर दिया। नक़वी मेडल और ट्रॉफी लेकर अपने होटल के कमरे में चले गए। कल वह अनोखा क्षण था, जब भारतीय टीम को बिना ट्रॉफी के ही जीत का जश्न मनाते देखा गया। सवाल यह उठता है कि अगर रिश्ते इतने कड़वे और तनावपूर्ण हैं, तो भारत ने पाकिस्तान के साथ खेलने का निर्णय किया ही क्यों था? इतिहासकार और खेल लेखक रामचंद्र गुहा के मुताबिक, प्रधानमंत्री मोदी ने खेल में राजनीति घुसाकर अपने पद की गरिमा कम कर दी और पाकिस्तानी नेताओं की संस्कृति के स्तर तक उतर गए। गुहा ने कहा कि भारत ने खेलने का फैसला इसलिए किया, क्योंकि बीसीसीआई वित्तीय लाभ कमाना चाहता था।

गुहा की दलीलें पूरी तरह गलत भी नहीं हैं। खेल और राजनीति परंपरागत रूप से अलग-अलग क्षेत्र रहे हैं और खेल भावना और आपसी सौहार्द की पवित्रता हमेशा बनाए रखी गई है। कुछ उदाहरण: सन् 1974 में भारत ने दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ क्रिकेट नहीं खेला था और यहां तक कि रंगभेद के खिलाफ

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

राहुल गांधी कोलंबिया पहुंचे

नयी दिल्ली, 29 सितंबर। दक्षिण अमेरिका के चार देशों की यात्रा पर गये लोकसभा में विपक्ष के नेता राहुल गांधी सोमवार को कोलंबिया की राजधानी बोगोटा पहुंचे।

कांग्रेस पार्टी ने एक्स पर एक पोस्ट में हवाई अड्डे पर गांधी के

- दक्षिण अमेरिकी देश कोलंबिया की राजधानी बोगोटा में राहुल छात्रों व व्यापारिक समुदाय से मिलेंगे।

स्वागत का एक वीडियो साझा करते हुए यह जानकारी दी।

पार्टी ने आगे कहा "गांधी कोलंबिया के बोगोटा पहुंचे। वे दक्षिण अमेरिका के दौरे पर हैं, जहां उनका चार देशों के राजनीतिक नेताओं, विश्वविद्यालय के छात्रों और व्यापारिक समुदाय के सदस्यों से मिलने का कार्यक्रम है।

पाक अधिकृत कश्मीर में न्याय की मांग अब पूर्ण बगावत का रूप ले चुकी है

हज़ारों की संख्या में उत्तेजित जनता सड़कों पर उतर आई है, कर्फ्यू व दबाने की कोशिशों के बावजूद

- सुकुमार साह -
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली 29 सितम्बर। पाक ऑक्युपाइड कश्मीर (पीओके) में तूफान उठ रहा है। वर्षों बाद पहली बार, हजारों नाराज़ नागरिक सड़कों पर उतर आए हैं वो भी कर्फ्यू और दमन को नज़रअंदाज़ करते हुए। अवामी एक्शन कमेटी (एएसी) द्वारा शुरू की गई न्याय की अपील अब एक पूर्ण जनविद्रोह बन चुकी है - इस्लामाबाद द्वारा दशकों से की गई उपेक्षा और शोषण के खिलाफ एक निर्णायक आंदोलन शुरू हो गया है। पाकिस्तानी सरकार ने क्षेत्र में भारी संख्या में सुरक्षा बलों की तैनाती कर दी है और आधी रात से इंटरनेट सेवाएं बंद कर दी हैं। पीओके एक गहरे राजनीतिक संकट के कगार पर खड़ा है।

भारत, जो जम्मू-कश्मीर सहित पूरे क्षेत्र को अपना अभिन्न अंग मानता है, के लिए ये विरोध एक रणनीतिक मोड़ है। यह असंतोष पाकिस्तान के उस पुराने दावे को झुठलाता है कि पीओके एक "संतुष्ट" इलाका है, यह आंदोलन इस्लामाबाद के नियंत्रण की आंतरिक कमजोरियों को भी उजागर करता है। नई दिल्ली इसे अपने रूख की पुष्टि के रूप में देखती है कि पाकिस्तान को इस क्षेत्र पर दावा करने का नैतिक अधिकार नहीं है। कि जब उसके खुद के कब्जे वाले इलाके ही असंतोष से उबल रहे हों, तो उसे कश्मीर मुद्दे पर बोलने का कोई हक नहीं है। साथ ही, पीओके में अस्थिरता नियंत्रण रेखा पर सुरक्षा जोखिम भी बढ़ा सकती है। पाक सरकार की सख्त कार्रवाई शरणार्थी संकट, सीमा पर तनाव या आंतरिक विद्रोह को बाहरी मोर्चे पर मोड़ने के लिए आतंकवादी गतिविधियों को बढ़ावा दे सकती है।

- पाक का यह प्रचार, कि पीओके एक खुशनुमा और संतुष्ट प्रदेश है, अब खोखला साबित हो गया है।
- इस समस्या से पाकिस्तान सरकार पुराने जाने-पहचाने तरीकों से निपटना चाहती है, दमन एवं अर्द्ध सैनिक बलों व सेना के इस्तेमाल से, यहाँ तक कि इंटरनैट व सोशल मीडिया पर पूर्ण नियंत्रण करके एरिया को अलग-थलग कर आवाज़ों को अपनी मौत मार देना चाहती है।
- यह बगावत सिर्फ युवाओं तक सीमित नहीं है, आम जनता सिविल सोसायटी और वकील आदि भी इसका मुखर समर्थन कर रहे हैं। मुज़फ्फराबाद के एक नामी वकील ने कहा है कि आंदोलन मतभेद ज़ाहिर करने का यह प्रजातंत्रीय तरीका है और इसे सुना जाना चाहिए।

इस विद्रोह के केन्द्र में है पाकिस्तान द्वारा क्षेत्र के लोगों को बुनियादी अधिकारों से वंचित रखना। यह ऐसी भावना है, जो न केवल इस्लामाबाद की आंतरिक स्थिरता पर बल्कि क्षेत्र में शक्ति संतुलन और भारत की सुरक्षा रणनीति पर भी दूरगामी प्रभाव डाल सकती है।

यह आंदोलन तब शुरू हुआ जब नीलम घाटी सार्वजनिक एक्शन कमेटी के नेता शौकत नवाज़ मीर ने पाक अधिकृत कश्मीर में अनिश्चितकालीन "शटर डाउन और चक्का जाम" हड़ताल की घोषणा की। उनका संदेश स्पष्ट था - वर्षों की उपेक्षा, भ्रष्टाचार और शोषण ने जनता को उबाल पर ला दिया है।

मुज़फ्फराबाद से मीरपुर तक, लोग अपने मूलभूत मानव अधिकारों की मांग कर रहे हैं - साफ पानी, बिजली, स्वास्थ्य सेवाएं, शिक्षा और स्थानीय प्राकृतिक संसाधनों पर स्वामित्व। जनता का गुस्सा पाकिस्तान की राजनीतिक व्यवस्था पर भी है, जिसने कथित रूप से विकास के लिए मिले फंड हड़प लिए और असहमति को दमन के ज़रिए दबा दिया।

पाक अधिकृत कश्मीर की सरकार का आंदोलन को बलपूर्वक कुचलने का बयान आग में घी डालने जैसा रहा है। वकीलों और नागरिक समाज के संगठनों ने भी आंदोलन को समर्थन दिया है और इसे एक वैध लोकतांत्रिक अभिव्यक्ति बताया है। मुज़फ्फराबाद के एक वरिष्ठ वकील ने कहा, जनता की मांगों को कुचला नहीं जाना चाहिए, बल्कि सुना जाना चाहिए। संवाद की बजाय इस्लामाबाद ने वही पुराना रास्ता चुना है - अर्धसैनिक रेंजरों की तैनाती, इंटरनेट बंद करना, और बड़े पैमाने पर गिरफ्तारियाँ करना।

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

घाटी में अस्थाई रूप से बंद पर्यटन स्थल फिर से खुले

जम्मू, 29 सितंबर। जम्मू-कश्मीर प्रशासन ने सोमवार को कश्मीर घाटी के उन सात प्रमुख पर्यटन स्थलों को दोबारा खोल दिया है, जिन्हें 22 अप्रैल को पहलगाम में हुए आतंकी हमले के बाद एहतियातन बंद कर दिया गया था।

यह निर्णय शुक्रवार को उपराज्यपाल मनोज सिन्हा की

- इसमें कश्मीर संभाग के सात व जम्मू के 5 क्षेत्र शामिल हैं। इन्हें पहलगाम के अटैक के बाद बंद कर दिया गया था।

अध्यक्षता में हुई यूनिफाइड हेडक्वार्टर की बैठक के बाद लिया गया। आज यूएचक्यू की बैठक में सुरक्षा की विस्तृत समीक्षा और चर्चा के बाद, जम्मू और कश्मीर डिवीजनों में अस्थायी रूप से बंद किए गए कई पर्यटन स्थलों को फिर से खोलने का आदेश दिया गया है।

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

CMYK

विचार बिन्दु

सुन्दर चेहरा सबसे अच्छा प्रशंसापात्र है। –रानी एलिज़ाबेथ

सोनम वांगचुक होने के मायने

26 सितंबर 2025 को लद्दाख में सोनम वांगचुक को देशद्रोह के आरोप में राष्ट्रीय सुरक्षा कानून के अंतर्गत गिरफ्तार कर लिया गया। इसके एक दिन पूर्व लेह में लद्दाख के युवाओं द्वारा भाजपा के राज्य कार्यालय पर पथराव किया गया एवं आगजनी की गई। उपद्रवी भीड़ पर पुलिस द्वारा गोली चलाई गई, जिसमें चार युवाओं की मृत्यु हो गई और 50 अन्य घायल हो गए।

यह उल्लेखनीय है कि सोनम वांगचुक तब से यह आंदोलन चला रहे थे जब से लद्दाख को जम्मू कश्मीर से अलग एक संघ शासित प्रदेश घोषित किया गया था। उनकी मांग थी कि लद्दाख की सांस्कृतिक विशेषताओं और भौगोलिक स्थिति को देखते हुए उसे पूर्ण राज्य का दर्जा दिया जाए एवं साथ ही इसे भारतीय संविधान की अनुसूची 6 में शामिल किया जाए। इस अनुसूची में सम्मिलित होने का तात्पर्य है कि भूमि के प्रबंधन और निष्पादन का अधिकार स्थानीय स्तर की स्वायत्त शासी संस्था को मिल जाता है और वहां की सांस्कृतिक विरासत और विशिष्ट पहचान को बनाए रखने के विशेष प्रयास सरकार द्वारा किए जाते हैं। वर्तमान में असम, त्रिपुरा, मिजोरम और मेघालय छठी अनुसूची में सम्मिलित हैं।

लद्दाख एक सीमावर्ती क्षेत्र है और चीन एवं पाकिस्तान से इसकी सीमा लगती है। यहां के नागरिक देश के सर्वाधिक शांतिप्रिय नागरिकों में गिने जाते हैं। जो भी पर्यटक इस क्षेत्र में जाते हैं वे वहां की सादगी और आवभगत से अभिभूत होकर लौटते हैं। मुझे भी 2018 में लद्दाख जाने का अवसर मिला था और मैंने इस धारणा को पूरी तरह सही पाया।

ऐसे शांतिप्रिय क्षेत्र में पुलिस की गोली द्वारा लोगों का मारे जाना एक अप्रत्याशित घटना थी। इस घटना के लिए सोनम वांगचुक को दोषी मानते हुए उन्हें गिरफ्तार कर लिया गया और जोधपुर के सेंट्रल जेल में बंद कर दिया गया। लद्दाख में कर्फ्यू लगा दिया गया और इंटरनेट सेवाएं भी बंद कर दी गई हैं। उन पर आरोप है कि उन्होंने लोगों को हिंसा के लिए उकसाया।

जितने भी वीडियो सोशल मीडिया पर उपलब्ध हैं, उनमें सोनम वांगचुक स्वयं, लगातार यह अपील करते दिखाई दे रहे हैं कि उनका आंदोलन अहिंसक है और वह किसी भी प्रकार की हिंसा का समर्थन नहीं करते हैं। उन्होंने इस हिंसा की निंदा की और अपना आमरण अनशन भी समाप्त कर दिया।

गत 5 वर्ष में उनके द्वारा अनेक बार अपनी मांगों के समर्थन में शांतिपूर्वक अनशन किए गए। उन्होंने 125 लोगों के साथ दिल्ली तक की पदयात्रा की (यह अलग बात है कि उन्हें दिल्ली में प्रवेश नहीं करने दिया गया), किंतु कभी भी उन्होंने हिंसा का सहारा नहीं लिया। यह एक विडंबना ही है कि केंद्र सरकार ने उनसे इस बारे में कोई बात नहीं की एवं उनकी मांगों का कोई सकारात्मक समाधान निकालने का प्रयास नहीं किया।

इससे पहले कि पाठक सोनम वांगचुक के बारे में कोई राय बनाएं, उनके लिए कुछ तथ्य प्रस्तुत करने उपयुक्त होंगे।

सोनम वांगचुक का जन्म लद्दाख के अलेची गांव में 1966 में हुआ एवं उन्होंने श्रीनगर के राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान से 1988 में मैकेनिकल इंजीनियरिंग में डिठाी प्राप्त की। इसके बाद उन्होंने आर्किटेक्चर में फ्रांस से विशेष डिप्लोमा भी किया। उन्होंने पहले सेकमोल (स्टूडेंट्स एजुकेशनल एंड कल्चरल मूवमेंट ऑफ लद्दाख) और बाद में "इंस्टिट्यूट ऑफ़ हिमालयन अल्टरनेटिव्स" के नाम से संस्था स्थापित की। उनका उद्देश्य लद्दाख क्षेत्र की भौगोलिक और सांस्कृतिक विरासत के अनुसार शिक्षा के लिए काम करना था, ताकि पढ़ाई के साथ-साथ अपने पर्यावरण की रक्षा भी विद्यार्थी कर सकें।

पाठकों को याद होगा कि 3 ईडियट्स फिल्म जो कि अत्यधिक सफल फिल्म मानी जाती है, सोनम वांगचुक की शिक्षा सम्बंधित सोच पर ही आधारित थी। फिल्म के अंत में उन्हें शायद दिखाया भी गया। वे पर्यावरण के संरक्षण और अपनी सांस्कृतिक पहचान को बचाए रखने के आंदोलन में लगातार लगे रहे। वे 1996 से लगातार लद्दाख को अलग राज्य बनाने की मांग कर रहे थे। लद्दाख में अधिकांश व्यक्ति बौद्ध धर्म को मानते हैं। वांगचुक ने लेह में एक ऐसा स्कूल बनाया जिसका निर्माण स्थानीय जलवायु को ध्यान में रखकर स्थानीय सामग्री से किया।

उन्हें उनके नवाचारों के लिए दुनिया के विभिन्न देशों से न केवल सम्मान मिला अपितु उन्हें अपनाया भी गया। उनकी एक शैक्षिक संस्था है जिसके माध्यम से वह निरंतर इस क्षेत्र में कार्य कर रहे हैं।

यह उल्लेख करना उचित होगा कि कुछ वर्षों पूर्व सोनम वांगचुक ने एक विशेष प्रकार के मोबाइल टेंट का निर्माण किया जो शून्य से 15-20 डिग्री नीचे तक के तापमान में भी अन्दर से गरम रहता है। यह नवाचार उन्होंने विशेष रूप से लद्दाख में तैनात भारतीय सैनिकों के उपयोग के लिए किया था।

अगस्त 2019 में जब लद्दाख को अलग संघ शासित क्षेत्र घोषित कर दिया गया, तो सोनम वांगचुक ने भारत सरकार की सराहना की थी एवं इसके लिए प्रधानमंत्री मोदी को धन्यवाद भी दिया था। उसके बाद उन्होंने लद्दाख को पूर्ण राज्य का दर्जा देने और इसे संविधान की छठी अनुसूची में शामिल करने का आंदोलन प्रारंभ किया। लंबे संघर्ष के बाद भी जब वहां के लोगों को इस बारे में कोई विशेष सफलता मिलती हुई नहीं दिखाई दी तो उनका उद्वेलित होना स्वाभाविक था। इसके बावजूद भी वांगचुक ने लगातार अपने आंदोलन को अहिंसक ही बनाए रखा।

सोनम वांगचुक नवाचारों के प्रति एवं अपने देश के प्रति कितने समर्पित है और कितने शांतिपूर्ण तरीके से अपने कार्य को कर रहे थे उसका मूल्यांकन उन्हें मिले कई प्रकार के सम्मानों से किया जा सकता है। उन्हें कई प्रकार के सम्मान प्राप्त हुए, जिनमें प्रमुख निम्न प्रकार हैं:–

1. रेमन मैग्सेसे अवार्ड, 2018

उनकी गिरफ्तारी का क्या प्रभाव उस क्षेत्र के युवाओं पर होगा, यह तो आने वाला समय बताएगा। संभव है, इसके बाद लद्दाख क्षेत्र को राज्य घोषित करने और उसे संविधान की छठी अनुसूची में सम्मिलित करने की मांग धीरे-धीरे समाप्त हो जाए। किंतु ऐसा करके, क्या सरकार उस क्षेत्र के निवासियों का और स्वयं देश का भला करेगी? इसका उत्तर तो लोगों को स्वयं खोजना है।

शिक्षा एवं समुदाय के साथ उत्कृष्ट कार्य करने के लिए

2. संतोक बा मानवतावादी पुरस्कार 2023

यह पुरस्कार उन्हें शिक्षा और स्थाई शैक्षणिक सुधारों के लिए दिया गया

3. रोलेक्स इंटरनेशनल अवार्ड फॉर एंटरप्राइज, 2016

यह पुरस्कार उन्हें उनके प्रोजेक्ट– 'बर्फ का स्तूप' के लिए दिया गया जो लद्दाख में पानी की कमी दूर करने के लिए बनाए गए।

4. अंतरराष्ट्रीय टेरा पुरस्कार, 2016

यह पुरस्कार उन्हें SECMOL में मिट्टी की वास्तुकला के लिए दिया गया

5. उपेन्द्र नाथ ब्रह्मा सोल्जर ऑफ ह्यूमैनिटी अवार्ड 2023

मानवता के क्षेत्र में उनके योगदान के लिए

6. ग्लोबल अवार्ड फॉर सस्टेनेबल आर्किटेक्चर, 2017

7. जी क्यू (GQ) मैन ऑफ दी ईयर, 2017

सामाजिक उद्यमिता के क्षेत्र में उनके कार्य के लिए

8. यूनेस्को चेयर अर्थेन आर्किटेक्चर अवॉर्ड, 2014

यूनेस्को द्वारा पृथ्वी आधारित वास्तुकला के लिए

9. अशोका फेलोशिप

10. आई आई टी मंडी द्वारा "एमिनेंट टेक्नोलॉजिस्ट" अवार्ड

उन्हें कई विश्व विद्यालयों ने मानद डॉक्टरेट की उपाधि भी प्रदान की

सोनम वांगचुक ने 1988 में लद्दाख के छात्रों के शैक्षिक और सांस्कृतिक आंदोलन की स्थापना की और तब से वे लगातार इसका नेतृत्व कर रहे हैं।

उन्हें शैक्षिक नवाचार के लिए कई संस्थाओं एवं सरकारों द्वारा विजन डॉक्यूमेंट बनाने के लिए कहा गया। इनका यह मानना है कि स्थानीय परिवेश और पर्यावरण के अनुसार शिक्षा को पुनः परिभाषित किया जाना चाहिए। वे अंग्रेजी पद्धति की शिक्षा को लद्दाख क्षेत्र में थोपने के विरोध में थे।

इंडियंस फॉर कलेक्टिव एक्शन सम्मान सेन फ्रांसिस्को, विद्यालयों द्वारा मानद डॉक्टरेट की डिग्री भी प्रदान की गई।

उन्होंने 1994 में सरकार और समुदाय के सहयोग से शिक्षा में सुधार के लिए "ऑपरेशन न्यू होप" नाम से एक कार्यक्रम प्रारंभ किया, जिसका उद्देश्य नई प्रकार की नवाचारी शिक्षा पद्धति को स्थापित करना था।

ऊपर दिए गए विवरण से यह तो स्पष्ट होगा कि सोनम वांगचुक शिक्षा और सांस्कृतिक क्षेत्र में नवाचार के माध्यम से कई प्रयोग कर रहे थे जिन्हें स्थानीय समुदाय का भी बहुत समर्थन मिल रहा था। अपने क्षेत्र की पहचान बनाए रखने के लिए ही लद्दाख शिक्षा और सांस्कृतिक आंदोलन के माध्यम से लगातार कार्य कर रहे थे।

जब 24 सितंबर को हिंसक वारदात हुई तो सोनम वांगचुक ने न केवल इस पर बहुत दुख प्रकट किया अपितु इसकी निंदा भी की। उन्होंने यहां तक कहा कि 5 वर्ष के उनके अहिंसक आंदोलन को इन हिंसक घटनाओं ने बहुत क्षति पहुंचाई है। उन्होंने अपना आमरण अनशन भी इसीलिए समाप्त किया। जब 26 सितंबर को वे एक प्रेस वार्ता को संबंधित करने वाले थे, उसके पहले ही उन्हें राष्ट्रीय सुरक्षा कानून में गिरफ्तार कर जोधपुर जेल में बंद कर दिया गया है।

सोनम वांगचुक की संस्था का एफ सी आर ए का लाइसेंस रद्द कर दिया गया है। उन पर यह आरोप लगाया गया है कि उन्होंने विदेशों से पांच लाख रुपए कमाए। वांगचुक ने कहा कि वे लद्दाख में गिने-चुने व्यक्तियों में है जो आयकर देते हैं। उल्लेखनीय है कि लद्दाख में आयकर देय नहीं है। उनकी कमाई का माध्यम उनके द्वारा किए गए नवाचार एवं उनके पेटेंट विदेशियों द्वारा खरीदना रहा है।

उनकी गिरफ्तारी का क्या प्रभाव उस क्षेत्र के युवाओं पर होगा, यह तो आने वाला समय बताएगा। संभव है, इसके बाद लद्दाख क्षेत्र को राज्य घोषित करने और उसे संविधान की छठी अनुसूची में सम्मिलित करने की मांग धीरे-धीरे समाप्त हो जाए। किंतु ऐसा करके, क्या सरकार उस क्षेत्र के निवासियों का और स्वयं देश का भला करेगी? इसका उत्तर तो लोगों को स्वयं खोजना है।

सोनम वांगचुक के बारे में उपरोक्त विवरण इसी उद्देश्य से दिया गया है कि पाठक उनके बारे में स्वयं निर्णय कर सकें कि क्या वे वास्तव में देशद्रोही हैं? क्या सरकार के विरुद्ध आवाज उठाना या सरकार से अहिंसक आंदोलन के माध्यम से मांग करना देशद्रोह है? देश में कई ऐसे व्यक्ति हैं जो तथाकथित देशद्रोह के आरोप में अनिश्चित काल से जेलों में बंद हैं।

अब देखना यह है कि लद्दाख की समस्या का हल, भारत सरकार किस प्रकार निकालती है? लोकतंत्र में समस्या का हल, नागरिकों के मौलिक अधिकारों के हनन और दमन के बजाय संवाद के माध्यम से हो, तो अधिक अच्छा होगा। जब सरकार अपने ही नागरिकों से बात नहीं करेगी, तो फिर समस्या का हल कैसे निकलेगा? प्रधानमंत्री मोदी ने तो स्वयं कहा है कि आलोचना लोकतंत्र की आत्मा है। देश की सुरक्षा की दृष्टि से भी यह आवश्यक है कि सीमा वर्ती क्षेत्रों में रहने वाले लोगों का विश्वास सरकार जीते। सबको लद्दाख की वासियों की समस्या का हल शांतिपूर्वक संवाद से निकलने की आशा है, जिसकी पहल तो सरकार को ही करनी होगी।

–अतिथि सम्पादक,
राजेन्द्र भाणावत
(पूर्व आई.ए.एस. अधिकारी)

शक्ति और भक्ति आराधना का त्रिवेणी संगम– पोकरण का प्रसिद्ध मां आशापूरा मंदिर

जुगल किशोर बिस्सा

पोकरण परमाणु नगरी पोकरण से करीब तीन किलोमीटर पश्चिम दिशा में स्थित मां आशापूरा मंदिर भक्तों की मनोकामनाएं पूर्ण करने वाला सिद्ध शक्तिपीठ है। यह मंदिर नौ दुर्गा मंदिरों में प्रमुख माना जाता है और शक्ति व भक्ति का अनूठा संगम प्रस्तुत करता है।

ऐतिहासिक पृष्ठभूमि :- भाट बही के अनुसार संवत 1315 माघ सुदी तीज को बिस्सा कुलदीपक लुणभाण जी बिस्सा प्रतिदिन कच्छ-भुज जाकर मां आशापूरा की पूजा-अर्चना करते थे। वृद्धावस्था में कठिनाई होने पर उन्होंने मां से निवेदन किया कि उनका परिवार जैसलमेर जिले के रूदवा गांव में निवास करता है और वहां से दर्शन करना कठिन है। भक्त की भक्ति से प्रसन्न होकर मां ने वचन दिया– आगे-आगे लुणभाण जी चलेंगे और पीछे-पीछे मैं चलूंगी, किंतु यदि पीछे मुड़कर देखा तो मैं वहीं ठहर जाऊंगी।

घनगौर जंगलों के बीच चलते हुए

मां के अनन्य भक्त शिरोमणि लुणभाणजी बिस्सा को संदेह हुआ कि मां वास्तव में साथ चल रही हैं या नहीं। संदेहवश पीछे देखने पर मां आशापूरा वहीं पृथ्वी में समा गईं। उस स्थान पर आज भी दुपट्टा चिन्ह मौजूद है और मां का भव्य दरबार सजा हुआ है। मंदिर में अखंड घी की ज्योति प्रज्वलित रहती है।

जोधपुर, जैसलमेर, बीकानेर, फलोदी, मुंबई, कोलकाता और गुजरात सहित देशभर से श्रद्धालु यहां दर्शन करने पहुंचते हैं। साल में दो बार भव्य मेले का आयोजन होता है, जिसमें हजारों भक्त शामिल होते हैं। करीब 700 वर्षों से बिस्सा परिवार मंदिर की सेवा व देखरेख करता आ रहा है। पूजनीय डुगरदास जी बिस्सा और मोहनलाल जी बिस्सा ने लगभग 100 वर्षों तक मां की पूजा-अर्चना व व्यवस्था संभाली। वर्तमान में मां आशापूरा नीज मंदिर ट्रस्ट पोकरण प्रबंधन करता है।

मंदिर परिसर की सुविधाएं : विशाल हॉल, 30 कमरे, स्नान-शौचालय, बिजली-पानी व प्याऊ की व्यवस्था। यात्रियों के ठहरने के लिए धर्मशाला भी बनाई गई है। नेशनल हाईवे से सीधा सड़क मार्ग व रोशनी की सुविधा उपलब्ध। सरकारी रिकॉर्ड के अनुसार मां आशापूरा दरबार की करीब 35 बीघा जमीन दर्ज है। परिसर में बने सुंदर तालाब व हरियाली भक्तों को आकर्षित करते हैं। भक्तों की आशाएं पूर्ण करने वाला यह पावन स्थल आज पोकरण की शक्ति और भक्ति आराधना का त्रिवेणी संगम है। जगत जननी मां आशापूर्णा का यह मंदिर पूरे देश में श्रद्धा और आस्था का प्रतीक बन चुका है।

–जुगल किशोर बिस्सा,
प्रेस रिपोर्टर पोकरण

अनावश्यक स्पीड ब्रेकर बनाना अनुचित

प्रो. कैलाश सोडाणी

स्पीड ब्रेकर देश भारत में आपका स्वागत है। स्पीड ब्रेकर का अविष्कार प्रसिद्ध भौतिक वैज्ञानिक नोबेल पुरस्कार विजेता आर्थर होली कॉम्पटन ने 1950 में किया। सड़क पर स्पीड ब्रेकर वाहनों की गति को कम करने के लिए बनाये जाते है, विशेष रूप से उन जगहों पर जहाँ दुर्घटनाओं का खतरा अधिक होता है, जैसे-स्कूल, अस्पताल या आवासीय क्षेत्रों के पास सड़क सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए। ब्रिटेन में, इन्हें मजाकिया अन्दाज में 'स्लीपिंग पुलिस आफिसर्स' कहा जाता है। दुर्घटनाओं को रोकने के लिए बने स्पीड ब्रेकर आज दुर्घटना का कारण बनते जा रहे हैं। स्पीड ब्रेकर अपने लक्ष्य से विचलित ही नहीं विपरीत हो चुके हैं। दुनिया में भारत के विशाल एवं खुबसूरत सड़क नेटवर्क पर स्पीड ब्रेकर एक कील ठोकने का काम कर रहे हैं। लोगों के भय एवं हादसों का कारण बन गये हैं। चिन्ता का विषय यह है कि शानदार सड़कों एवं गाड़ियों के बावजूद चाल धीमी होती जा रही है। देश का लगभग 87 प्रतिशत यात्री यातायात और 60 प्रतिशत माल यातायात सड़क परिवहन से होता है।

स्पीड ब्रेकर के मानक तय है। स्पीड ब्रेकर कहाँ बनने चाहिये यह लिखा हुआ है। स्पीड ब्रेकर की सड़क से ऊँचाई निश्चित कर रखी है। स्पीड ब्रेकर दूर से दिखाई देंवे, इसलिए कलर तथा डिजाइन निर्धारित है। भारतीय सड़क कांग्रेस ने 1996 में स्पीड ब्रेकर बनाने के सम्बन्ध में दिशा निर्देश बनाए। इन निर्देशों के मुताबिक एक आदर्श स्पीड ब्रेकर की ऊँचाई 10 सेंटीमीटर, लम्बाई 3.5 मीटर और कर्वेचर रेडियस 17 मीटर होनी चाहिये। इन मापदण्डों का पालन मात्र राष्ट्रीय राजमार्ग प्राधिकरण द्वारा निर्मित सड़को पर ही हो रहा है। जो कुल सड़कों का केवल 2 प्रतिशत ही है।

98 प्रतिशत सड़कों पर स्पीड ब्रेकर बनाने के मामले में मापदंडों का खुला उल्लंघन हो रहा है। विदेशों में सैंकडों-हजारों किलोमीटर सड़क यात्रा में भी स्पीड ब्रेकर के दर्शन दुर्लभ है। हमारे देश में पहली समस्या तो यह है कि स्पीड ब्रेकर किसी की भी इच्छा से, कहीं पर भी बनाये जा सकते है। दूसरा इनकी ऊँचाई तथा डिजाइन निर्धारित मापदंडों के अनुसार नहीं हैं। बिना मापदंड के बने हुए स्पीड ब्रेकर स्वयं ही दुर्घटना का कारण बनते जा रहे है। लाखों किलोमीटर सड़कों का नेटवर्क, जिस पर हमें गर्व है, अभिमान है, को स्पीड ब्रेकर्स ने बोना बना दिया। हमारे देश में वी.आई.पी. एवं पुलिस अधिकारियों के घरों के बाहर, थानों एवं विद्यालयों के सामने स्पीड ब्रेकर के दर्शन अवश्य होंगे। स्वच्छता मामले में देश में पहला स्थान सुशोभित करने वाला शहर इन्दौर की चाल को वहाँ अनावश्यक बने हुए स्पीड ब्रेकर्स ने बहुत धीमा कर दिया। परिणामस्वरूप जिला प्रशासन ने निर्णय लिया कि बिना सक्षम अनुमति के स्पीड ब्रेकर बनाये जाने पर एक लाख रु. का जुर्माना लगेगा। यहाँ मैं एक उदाहरण देना चाहूँगा। उदयपुर में मेरे आवास के पास ही सेंट मैरी स्कूल है। उसके मुख्य द्वार के बाहर तीन दिशाओं में सड़के बनी हुई है। तीनो सड़कों पर स्पीड ब्रेकर बने हुए है। 24 घण्टे में यहाँ से गुजरने वाले मेरे जैसे मुसाफिरों को कष्ट तो होता है। इस कष्ट को कम करने के लिए मेरा सुझाव है– विद्यालय खुलने एवं बंद होने के समय एक-एक घंटा मोबाइल अवरोधक लगा देना चाहिए। जिससे विद्यार्थी भी सुरक्षित रहेंगे और मुसाफिर भी 22 घण्टे आराम से यात्रा करेंगे। सड़कों की आर्थिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका को पहली बार रेखांकित किया माननीय अटल बिहारी वाजपेयी ने। उन्हीं की सोच एवं दूरदृष्टि से देश आज फोर लेन, सिक्स लेन, एट लेन तथा एक्सप्रेस हाइवे पर तेजी से दौड़ रहा है। हमारी अर्थव्यवस्था को जबरदस्त गति प्रदान की है। अनावश्यक स्पीड ब्रेकर बना-बना के इस गति को कम करने की धृष्टता नहीं करना चाहिये। नागरिकों को भी ट्राफिक नियमों का सख्ती से पालन करना चाहिये। देश को गतिमान बनाए रखने के लिये अनावश्यक एवं बिना मापदंड के स्पीड ब्रेकर बनाने की रफ़्तार को रोकना ही, समय की मांग है।

–प्रो. कैलाश सोडाणी,
पूर्व कुलगुरु, वर्धमान
महावीर खुला विवि, कोटा

वित्तीय समावेशन में राजस्थान अग्रणी

आमजन की अब बैंकिंग सेवाओं से लेकर सामाजिक सुरक्षा तक सार्वभौमिक पहुंच

चेतन प्रकाश मण्डावरिया

भारत जैसे विविध और विशाल प्रजातात्रिंक देश में, सशक्त राष्ट्र निर्माण की पहली शर्त है कि हर नागरिक को आर्थिक सशक्तिकरण हेतु समान अवसर देना। आर्थिक समावेशन और सामाजिक सुरक्षा इसी उद्देश्य को साकार करने के दो सबसे महत्वपूर्ण माध्यम हैं। वित्तीय समावेशन और सामाजिक सुरक्षा को मजबूत करने के उद्देश्य से भारत सरकार द्वारा 1 जुलाई 2025 से 30 सितंबर 2025 तक चलाए जा रहे त्रैमासिक देशव्यापी संतृप्ति अभियान में राजस्थान ने उल्लेखनीय उपलब्धि हासिल की है, जिनका प्रभाव केवल आँकड़ों तक सीमित नहीं है, बल्कि करोड़ों ज़िंदगियों में स्थायी बदलाव लाने की क्षमता रखता है। अभियान की प्रगति के अनुसार, 26 सितंबर 2025 तक राजस्थान में 85,82,997 लोगों को लाभान्वित किया जा चुका है, जो देश में सर्वाधिक है। वर्तमान संतृप्ति अभियान के दौरान राजस्थान दिनांक 25.09.2025 तक कुल 84,89,142 लाभार्थी के साथ उत्तर प्रदेश (76,54,213 लाभार्थी), बिहार (68,11,351 लाभार्थी) ओडिशा (53,15,454 लाभार्थी) और मध्य प्रदेश (51,26,863 लाभार्थी), जैसे राज्यों को पीछे छोड़ते हुए प्रथम स्थान पर है।

राज्य स्तर पर शिविरों के आयोजन की बात करें तो, वर्तमान संतृप्ति अभियान के तहत दिनांक 25.09.2025 तक राजस्थान की 11,200 ग्राम पंचायतों में से 10,903 ग्राम पंचायतों में अभियान के अंतर्गत शिविर आयोजित किए जा चुके हैं। वहीं, उत्तर प्रदेश की 57,000 ग्राम पंचायतों में से 53,848 में शिविर लगाए जा चुके हैं। यह प्रदर्शन न केवल राजस्थान की प्रतिबद्धता को दर्शाता है, बल्कि यह भी सिद्ध करता है कि सरकार, सामाजिक न्याय और समावेशी विकास की दिशा में ठोस कदम उठा रही है। सरकार की यह रणनीति उन नागरिकों, विशेष रूप से ग्रामीण, गरीब और असंगठित क्षेत्र के लोगों तक पहुँचने पर केंद्रित रही है, जो अब तक वित्तीय समावेशन एवं सामाजिक सुरक्षा की दृष्टि से वंचित थे। राज्य सरकार के सभी हितधारकों के साथ समन्वयपूर्ण तरिके से किये गये गंभीर प्रयासों के परिणामस्वरूप राज्य में जो बदलाव आया है, उसकी झलक स्पष्ट रूप से नजर आ रही है। इस अभियान के अंतर्गत राजस्थान ने सरकार की प्रमुख बैंकिग सेवाओं/योजनाओं की पहुँच को लगभग सार्वभौमिक स्तर तक पहुँचाया है। किसी भी जन कल्याणकारी योजना की पहली आवश्यकता है कि प्रत्येक व्यक्ति का एक बैंक खाता हों। बिना बैंकिंग पहुँच के, लाभार्थी न केवल सरकारी योजनाओं से वंचित रह जाते हैं, बल्कि वे आर्थिक रूप से असुरक्षित भी रहते हैं। दिनांक 30.06.2025 तक राज्य में 3.71 करोड़ प्रधानमंत्री जन-धन खाते है। वर्तमान संतृप्ति अभियान में दिनांक 26.09.2025 तक 7,47,737 से अधिक जनधन खाते ऐसे नागरिकों के लिए खोले गए, जो पहले कभी बैंकिंग सेवाओं से नहीं जुड़े थे। यह संख्या केवल एक आंकड़ा नहीं है, बल्कि यह संकेत है उस नए विशवास का, जो एक असहाय ग्रामीण महिला को, एक वृद्ध किसान को, या एक असंगठित मजदूर को पहली बार आर्थिक पहचान और सुरक्षा प्रदान करता है। राजस्थान ने इस पहलू को विशेष प्राथमिकता दी और राज्य भर में लाखों नागरिकों को जीवन और दुर्घटना बीमा के दायरे में लाया है। प्रधानमंत्री जीवन ज्योति बीमा योजना एवं प्रधानमंत्री सुरक्षा बीमा योजना अन्तर्गत दिनांक 30.06.2025 तक राज्य में क्रमशः 1.20 करोड़ एवं 2.70 करोड़ व्यक्ति नामांकित है। यही नहीं, दिनांक 26.09.2025 तक 1,40,784 नागरिकों को अटल पेंशन योजना से जोड़ना इस बात का प्रमाण है कि अब असंगठित क्षेत्र के श्रमिक भी वृद्धावस्था के लिए सुरक्षित भविष्य का निर्माण कर रहा है।

जन आधार प्लेटफॉर्म आज राजस्थान में सुशासन की एक सशक्त नींव बन चुका है, जो सामाजिक सुरक्षा और समावेशी विकास को मजबूती से आगे बढ़ा रहा है। अब पेंशन, छात्रवृत्ति, बीमा राशि, खाद्य सुरक्षा या कृषि सब्सिडी – सभी लाभ सीधे लाभार्थी के आधार-लिंक्ड बैंक खाते में ट्रांसफर किए जाते हैं। इससे भ्रष्टाचार, देरी, और फर्जी लाभार्थियों की समस्या लगभग समाप्त हो गई है। इस प्रक्रिया ने न केवल राज्य के वित्तीय संसाधनों को बचाया, बल्कि जनता में सरकार के प्रति विश्वास भी मजबूत किया है। डिजिटल युग में वित्तीय समावेशन के साथ ही डिजिटल सुरक्षा भी अनिवार्य हो गई है। राजस्थान ने यह महसूस किया कि जितनी तेजी से डिजिटल लेन-देन बढ़ रहे हैं, उतनी ही तेजी से साइबर धोखाधड़ी के खतरे भी बढ़ रहे हैं। इसलिए राज्य ने एक व्यापक साइबर सुरक्षा जागरूकता अभियान चलाया, जिसमें नागरिकों को साइबर सुरक्षा के प्रति सजग किया गया।

यह पहल अनूठी इसलिए भी है क्योंकि यह केवल तकनीकी समाधान नहीं, बल्कि सामाजिक चेतना की नींव पर खड़ी है। इसके कारण राजस्थान में साइबर अपराध की दर देश के अन्य राज्यों की तुलना में काफी कम है – यह राज्य के सतर्क नागरिकों और जागरूक प्रशासन दोनों की संयुक्त उपलब्धि है।

राज्य सरकार ने योजनाओं के क्रियान्वयन को केवल शासकीय स्तर पर सीमित नहीं रखा, बल्कि उसे ग्राम पंचायतों, स्वयं सहायता समूहों (एप्डे), स्थानीय बैंक प्रतिनिधियों, बैंक मित्रों और फ्रंटलाइन अधिकारियों और सामाजिक कार्यकर्ताओं के सहयोग से ज़मीनी स्तर तक पहुँचाया। हर गाँव में वित्तीय साक्षरता शिविर, नामांकन अभियान, और तत्काल शिकायत समाधान व्यवस्था शुरू की गई, जिससे लोगों को न केवल जानकारी मिली बल्कि विश्वास और जन भागीदारी की भावना भी उत्पन्न हुई। महिला सशक्तिकरण को भी इस अभियान का केन्द्रीय स्तंभ बनाया गया, जिससे नारी वर्ग को आर्थिक निर्णयों में अधिक सक्रिय भूमिका मिली। आज राजस्थान वित्तीय-समावेशन एवं सामाजिक सुरक्षा के क्षेत्र में न केवल देश में अग्रणी राज्य बन चुका है, बल्कि उसने यह साबित कर दिया है कि यदि सही नीति, तकनीकी नवाचार, प्रशासनिक समन्वय और जन-भागीदारी को एक साथ जोड़ा जाए, तो स्थायी और सर्वसमावेशी परिवर्तन संभव है। अब यह आवश्यक है कि यह संतृप्ति अभियान हर गाँव, हर नगर, और हर परिवार तक पहुँचे। राज्य सरकार सभी नागरिकों से आह्वान करती है कि वे पात्र व्यक्तियों तक सभी सरकारी योजनाओं का लाभ पहुंचाने में सहयोग प्रदान करें, अपने परिवार और समुदाय को जागरूक करें, और इस अभियान को जनांदोलन बनाएं। ग्राम स्तर के नेता, शिक्षक, स्वंयसेवी संस्थाएं और प्रशासनिक अधिकारी – सभी को मिलकर यह सुनिश्चित करना है कि राजस्थान का कोई भी नागरिक वित्तीय सुरक्षा और गरिमापूर्ण जीवन से वंचित न रह जाए।

–चेतन प्रकाश मण्डावरिया,
संयुक्त शासन सचिव,
(संस्थागत वित्त एवं पीपीजी),
आयोजना विभाग, राजस्थान सरकार, शासन सचिवालय, जयपुर

राशिफल मंगलवार 30 सितम्बर, 2025

पंडित अनिल शर्मा

आश्विन मास, शुक्ल पक्ष, अष्टमी तिथि, मंगलवार, विक्रम संवत 2082, पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र बुधवार प्रातः 8:06 तक, शोभन योग रात्रि 1:03 तक, बव करण सायं 6:07 तक, चन्द्रमा धनु राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य-कन्या, चन्द्रमा-धनु, मंगल-तुला, बुध-कन्या, गुरू-मिथुन, शुक्र-सिंह, शनि-मीन, राहु-कुम्भ, केतु-सिंह राशि में।

आज दुर्गाष्टमी महाष्टमी, भौमाष्टमी, सरस्वती पूजन, अन्नपूर्णा परिक्रमा सायं 6:07 पर पूर्ण होगी।

श्रेष्ठ चौघड़िया: चर 9:20 से 10:48 तक, लाभ-अमृत 10:48 से 1:46 तक, शुभ 3:14 से 4:43 तक।

राहूकाल: 3:00 से 4:30 तक। सूर्योदय 6:23, सूर्यास्त 6:11

मेष

परिवार में शुभ संदेश प्राप्त होंगे। शुभ कार्यों से संबंधित यात्रा हो सकती है। धार्मिक स्थान की यात्रा संभव है। व्यावसायिक कार्यों के लिए भागदौड़ रहेगी।

वृष

चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। शुभ कार्यों में व्यवधान हो सकते हैं। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। आज बनते कार्य बिगड़ सकते हैं।

मिथुन

परिवार में धार्मिक-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। आज परिजनों के सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

कर्क

व्यक्तिगत परेशानियों से राहत मिलेगी। दिनचर्या में सुधार होगा। विवादित मामलों का निपटारा हो सकता है। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

सिंह

परिवार में शुभ-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। आज महत्वपूर्ण कार्यों के संबंध में उचित सोच-विचार हो सकता है। व्यावसायिक कार्यों से संबंधित आर्थिक समस्या का समाधान हो सकता है।

कन्या

घर-परिवार में धार्मिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। परिवार में सुख-सुविधाएं बढ़ेगी। व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता बनी रहेगी। आर्थिक स्थिति में सुधार होगा।

तुला

व्यावसायिक वार्ता सफल रहेगी। व्यावसायिक प्रयासों में उचित सफलता मिलेगी। आर्थिक मामलों में संतुलन बनाए रखना ठीक रहेगा। परिवार में शुभ संदेश प्राप्त होंगे। धार्मिक कार्यों में भाग ले सकते हैं।

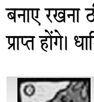

वृश्चिक

आर्थिक कारणों से अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक आय में वृद्धि होगी। व्यक्तिगत कार्यों से संबंधित यात्रा संभव है।

धनु

घर-परिवार में धार्मिक-सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं। धार्मिक कार्यों में भाग ले सकते हैं। परिवार में आपसी सहयोग-समन्वय बना रहेगा। व्यावसायिक/आर्थिक मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा।

मकर

घर-गृहस्थी के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है। पारिवारिक कार्यों के कारण बाहर जाना पड़ सकता है। धार्मिक कार्यों पर धन खर्च हो सकता है।

कुंभ

आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। संभावित स्त्रोत से धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे।

मीन

व्यावसायिक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। व्यावसायिक मामलों में उचित परामर्श मिल सकता है। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। घर-परिवार में आज धार्मिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं।

सार-समाचार

हनुमानजी ने उजाडी अशोक वाटिका किया लंका-दहन

भरतपुर (निस)। श्रीराम लीला समिति द्वारा आयोजित प्राचीन श्री लक्ष्मण जी मंदिर (वेंकटेश जी) के प्रांगण में श्री रामलीला महोत्सव में सोमवार को लंका-दहन प्रसंग का शानदार मंचन हुआ। हनुमानजी सीताजी की खोज में शत योजन में फैले समुन्द्र को लांघते व अन्य सभी बाधाओं को पार करते हुए श्रीराम के अमोघ वाण की तरह छलांग भरते हुए लंका के द्वार पर पहुॅच जाते हैं, वे वहां लंका की रक्षिका लंकिनी को बठासम मुष्टि प्रहार से धरती पर पटककर लंका में प्रवेश करते हैं। रावण के अनुज विभीषण से भेंट होती है व सीताजी का पता पूछकर अशोक वाटिका में अशोक वृक्ष के ऊपर छिपकर लघु रूप में बैठ जाते हैं। इसी बीच रावण अपनी रानियों सहित वहां आकर सीताजी को अनेक लुभावने प्रलोभन देकर उसे अपनाने के लिए मनाता है किन्तु सीताजी तिनके की ओट कर उसे फटकार लगाती है जिससे क्रुध होकर रावण सभी राक्षिसयों को आदेश देता है कि सीता को यंत्रणा देकर महीने भर में रावण को अपनाने के लिए बाध्य किया जावे। रावण के जाने के बाद त्रिजिटा नाम की राक्षसी अपना सपना सभी राक्षिसयों को सुनाती है जिससे वे भयभीत होकर सीताजी के चरणों में गिर जाती हैं तभी हनुमानजी दुखी सीताजी के समक्ष वृक्ष के ऊपर से प्रभु की मुद्रिका गिरा देते हैं तथा स्वयं भी उनके सामने आकर अपना परिचय देकर उन्हें शीघ्र ही लंका से मुक्त कराने का आश्वासन देते हैं। सीताजी की आज्ञा पाकर वाटिका के फल खाने के बहाने से वे वाटिका के रखवारे राक्षसों का वध कर, रावण के बेटे अक्षय कुमार का भी बध कर वे पूरी वाटिका का विध्वंस कर डालते हैं। समाचार सुनकर रावण का ज्येष्ठ पुत्र मेघनाथ वहां आता है परस्पर युद्ध में हनुमानजी को अजेय जानकर ब्रह्मास्त्र का प्रयोग कर उन्हें नागपाश में बांधकर रावण के दरबार में प्रस्तुत करता है। रावण और हनुमान में परस्पर रोचक संवाद होता है। रावण विभीषण के परामर्श पर हनुमानजी की पूँछ जलाने का आदेश देता है। हनुमान अपनी पूँछ की आग से पूरी लंका को ही जला डालते हैं। इस प्रकार राक्षसों के मन में अत्यन्त भय व्याप्त कर हनुमान सीताजी के सम्मुख पुनः पहुॅचकर सीताजी को बहुत प्रकार से समझाकर उनसे पहचान के रूप में चूडामणि लेकर वहां से श्रीराम के पास जाने के लिए प्रस्थान कर जाते हैं। लीला स्थल पर लायंस क्लब ब्रज के अध्यक्ष ओमप्रकाश गुप्ता अचार वाले, सतीशचंद मित्तल, राजेश्वर सिंह, कृष्ण भगवान व अन्य सदस्य एवं महिलाओं के द्वारा भगवान की आरती की गई। श्रीराम के जयघोष के साथ लीला सम्पन्न हुई।

विवाह सम्मेलन की तैयारियों को लेकर बैठक संपन्न

करौली, (निंस.) महात्मा ज्योतिबा फुले विकास संस्थान करौली के त्वावधान में छात्रावास परिसर में आगामी माली,सैनी,कुशवाहा समाज के सातवें सामूहिक विवाह सम्मेलन की तैयारियों को लेकर रविवार को संस्थान के सेमिनार हॉल में बैठक आयोजित हुई। बैठक की अध्यक्षता संस्थान अध्यक्ष प्रेमसिंह माली ने की। इस दौरान अध्यक्ष प्रेमसिंह कहा कि समाज में आर्थिक विषमता को दूर करने और सहयोगी भावना को बढ़ावा देने के लिए सामूहिक विवाह जैसे आयोजन महंगाई के इस दौर में अत्यंत आवश्यक हैं। उन्होंने समाज बंधुओं और भामाशाहों से छात्रावास निर्माण एवं सामूहिक विवाह सम्मेलन के सफल संचालन के लिए तन,मन,धन से सहयोग देने तथा विवाह योग्य जोड़ों का अधिक से अधिक पंजीयन कराने की अपील की।बैठक के दौरान भामाशाह सेवानिवृत्त प्रधानाध्यापक श्यामलाल माली ने सेमिनार हॉल की छत के लिए एक लाख एक सौ एक रुपए की राशि भेंट की। जगन्नाथ सरपंच और पांचपुरा अध्यक्ष शंकर माली ने एक-एक ट्रॉली गिट्टी, मुनेश इलेक्ट्रिकल्स की ओर से सीमेंट हेतु 7,100 रुपये जबकि पातरी से नेमीचंद माली और हुकमसिंह माली ने 5,100-5,100 रुपये का योगदान दिया। सभी भामाशाहों का माला पहनाकर सम्मान किया गया। इस अवसर पर संस्था सचिव रामगोपाल माली, कोषाध्यक्ष कल्याणलाल माली, सरपंच रमजी, अध्यक्ष भगवती माली (बहादुरपुर), नेमीचंद माली (कस्बा), शंकर माली (पांचपुरा), तुलसीराम सैनी (कर्मचारी संघ अध्यक्ष), कमरपाल सैनी (शाखा प्रबंधक यूनियन बैंक), पूर्व पार्षद नाहर सिंह, हरिचरण ठेकेदार,भंवरलाल (पूर्व अध्यक्ष),शिवदयाल, व्याख्याता पप्पूलाल, भंवर सिंह, धर्मी, शिवचरण मेंबर सहित कई पदाधिकारियों ने सम्मेलन को सफल बनाने के लिए अपने विचार व्यक्त किए।

सपोटरा विधायक की जन सुनवाई में शिक्षकों ने सौंपा मांग पत्र

करौली (निंस.) रविवार विधायक हंसराज मीना के बालोंती स्थित कार्यालय पर जनसुनवाई कार्यक्रम में बिजली,पानी,सड़क,विद्यालय विकास एवं शिक्षक सम्मेलन में आए प्रस्तावो का शिक्षा मंत्री के नाम शिक्षक संघ अम्बेडकर के प्रवक्ता गंगाराम प्रजापत के नेतृत्व में संघ के पदाधिकारियों ने ज्ञापन मांग पत्र सौंपा। उन्होने बताया कि शिक्षकों की पदोन्नित,स्थानांतरण,गैर शैक्षिक कार्यों से मुक्ति,शिक्षकों की वेतन विसंगति दूर करना,प्रबोधक पदनाम परिवर्तन,एवं बंचित प्रबोधको की पदोन्नित,एवं एसटी, एस सी रोस्टर लागू करने , आंगन बाड़ी में एनटीटी शिक्षक भर्ती करने,तथा शिक्षा विभाग के संविदा कर्मचारियों को स्थाई करने की मांग की है तथा हाल ही में संगठन के दूरस्थ स्थानांतरित प्रधानाचार्यों की परिवेदना लेकर रिक्त पदों पर समायोजित किया जाए आदि मांग सम्मिलित की है ज्ञापन देने वालों में कमल माली,भगवान लाल शर्मा आदि उपस्थित रहे।

परिजनों को सौंपा शव

भरतपुर (निस)। पथैना में सोमबार को एक महिला की ओर से आत्म हत्या कर लिए जाने की सूचना पर खेड़ली मोड़ पुलिस ने मृतका का पोस्टमार्टम करा कर शव परिजनों को सौंप दिया। खेड़ली मोड़ थाना पुलिस ने बताया कि थाना इलाके के गांव पथैना से एक महिला के आत्महत्या की सूचना पर खेड़ली मोड़ थाना पुलिस गई। जहां पर मृत मिली गुड़िया उर्फ बबली पत्नी जसवंत सिंह जाट के शव को भुसावर के सरकारी अस्पताल की मोर्चरी पर पोस्टमार्टम के लिए भेजा। जहां पर खेड़ली मोड़ थाना पुलिस ने मृतका गुड़िया उर्फ बबली पत्नी जसवंत सिंह जाट के शव का भुसावर के सरकारी अस्पताल में चिकित्सकों की टीम से पोस्टमार्टम करा कर शव परिजनों को सौंप दिया।पुलिस ने मौके पर जाकर मृतका के पीहर पक्ष तथा गांव पथैना निवासी मृतका के ससुराली जनों को आपस में समझाइस कर मृतका के शव का अंतिम संस्कार कराया गया ।हस्ताक्षर अभियान जारी

भरतपुर (निस)। पीसीसी के आव्हान पर पूरे प्रदेश में चलाये जा रहे हैं वोट चोर - गद्दी छोड हस्ताक्षर अभियान कार्यक्रम के तहत भरतपुर जिले के सभी ब्लॉको में हस्ताक्षर अभियान को गति देने के लिए जिला प्रभारी राजेश चौधरी की सहमति से जिला अध्यक्ष दिनेश सूपा के निर्देशानुसार जिला कांठोस कमेटी की ओर से प्रत्येक ब्लॉक पर 2--2 प्रभारियों की नियुक्ति की गई है। जिला संगठन महासचिव योगेश सिंघल ने बताया कि इस कार्य के लिए पीसीसी द्वारा प्राप्त प्रिंटेड परफॉर्मा ब्लॉक अध्यक्षों को उपलब्ध करा दिया गया है।जिस पर ब्लॉक कार्यकारिणी के पदाधिकारीयों सहित आम कार्यकर्ताओं एवं नागरिकों के हस्ताक्षर करवाकर जिला कांठोस के माध्यम से पीसीसी कार्यालय में जमा कराने होंगे। जिलाध्यक्ष दिनेश सूपा ने समस्त ब्लॉक प्रभारियों को तुरंत अपने अपने प्रभार वाले क्षेत्रों में जाकर हस्ताक्षर अभियान को 14 अक्टूबर 2025 तक पूरा करवाने को निर्देशित किया है। प्रभारियों की सूची निम्न प्रकार हैं,बयाना- विष्णुदत्त शर्मा, मेघसिंह सरपंच। रूपवास- मनोज पटेल, हरिसिंह नागर। भरतपुर- मनोज शर्मा,बृजभूषण जाटव। सेवर- जगदीश बंजी,राजेंद्र सारस्वत। नदबई- श्रीभगवान कटारा,हरिमोहन शर्मा। उच्चेन- चंद्रकेश राजावत, जगदीश चतुर्वेदी। डीग- श्रीचन्द्र गॉड,लक्ष्मण केन। कुम्हेर- रामेश्वर सैनी,सुरेश पदयात्री। नगर- राजीव कुम्हेर, रमेश धावई। कामा- श्रीराम जाटव, छोटू पेंघोर। पहाड़ी- दीपेन्द्र बुराबई, मुकेश जाटव पार्षद।खोह- रघुवीर सिंह,इशाक। वैर- ज्ञानेश शर्मा,किशन पप्पू। भुसावर- हरभान सिंह, कमल सैनी।

दो पटवारी किये निलंबित

करौली, (निंस.) जिला कलक्टर नीलाभ सक्सेना ने बताया कि पंचायत मुख्यालय जहांगीरपुर के पटवारी उमराव सिंह व पंचायत मुख्यालय गुनेसरा के पटवारी संजय शर्मा के विरूद्ध अनुशासनात्मक कार्यवाही विचारार्थ है। उन्होने बताया कि राजस्थान सिविल सेवा नियम 1958 की धारा 13 के तहत प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए तहसील करौली की पंचायत मुख्यालय जहांगीरपुर के पटवारी उमराव सिंह व पंचायत मुख्यालय गुनेसरा के पटवारी संजय शर्मा को तत्काल प्रभाव से निलंबित किया गया है।

गोल्ड मेडलिस्ट कुमारी पायल कटारा का विभिन्न सामाजिक संगठनों ने किया सम्मान

भरतपुर (निस)। स्वागत की बेला मन हर्षित करने वाली होती है और जब यह अवसर नारी शक्ति के सम्मान का हो तो बात ही कुछ अलग होती है ऐसा ही स्वागत अभिनंदन का शुभ अवसर श्री ब्राह्मण सभा भरतपुर के पूर्व जिला अध्यक्ष एवं प्रमुख समाजसेवी कौशलेश शर्मा के नेतृत्व में विभिन्न सामाजिक संगठनों द्वारा सुभाष नगर की पावन धरा पर आयोजित किया गया।

यह अनुपम अवसर सुभाष नगर की बिटिया पायल कटारा द्वारा महाराजा सूरजमल बृज विश्वविद्यालय मास्टर ऑफ आर्ट होम साइंस में गोल्ड मेडल प्राप्त करने पर और राज्यपाल द्वारा सम्मानित होने पर था। पायल कटारा की उपलब्धि थी खास इसलिए सब अपने पहुंच गए आसपास और हृदय की गहराइयों से गौरान्वित होकर नारी शक्ति उभरती प्रतिभा पायल कटारा का किया सम्मान और की हृदय की अनंत गहराईयों से उज्जवल भविष्य की कामना के साथ साफा, माला,दुपट्टा तथा भरतपुर के आराध्य देव श्री बांके बिहारी महाराज की तस्वीर भेंट कर किया गया। पायल कटारा के परिवारजन और शुभचिंतकों ने अतिथि देवो भव की प्राचीन गौरवशाली परंपरा का निर्वहन करते हुए आगंतुक विप्र बंधुओं एवं साथियो का भव्य स्वागत सम्मान कर मेल मिलाप का एक अनुपम उदाहरण पेश किया। इस अवसर पर ब्राह्मण सभा के पूर्व जिला अध्यक्ष कौशलेश शर्मा ने अपने उद्बोधन में कहा कि नारी वंदनीय है सम्माननीय है और कोई विशेष उपलब्धि जब अर्जित करती है तो समाज गौरांवित होता है और प्रगतिशील समाज की पहचान भी होती है। और बिभिन्न सामाजिक संगठनों द्वारा बालिका सम्मान महिला का सशक्तिकरण की दिशा में अनुपम कदम है।

इसी कड़ी में पेंशनर समाज के जिला अध्यक्ष डोरी लाल शर्मा ने कहा कि हमें एक-दूसरे के साथ भाईचारे और प्रेम के साथ रहना चाहिए और समाज में भाईचारा स्थापित करने के लिए एक-दूसरे की मदद करनी चाहिए साथ ही आप हम अपने आस-पास सद्भाव और सादगी का माहौल बनाएं। सम्मानित होने पर पायल शर्मा ने कहा कि अपनों के बीच इतनी बड़ी संख्या में शुभचिंतक देख आज मैं बहुत खुश हूं मुझे नई ऊर्जा, नई शक्ति सहज प्राप्त हुई है आगे में अपने जीवन में कुछ नया और करने की कोशिश करूंगी आपका आशीर्वाद दुआएं मुझे शक्ति देती रहे।

इस गरिमा मय उपस्थिति में गवाह बने प्रमुख समाजसेवी एवं ब्राह्मण सभा के पूर्व जिला अध्यक्ष कौशलेश शर्मा, ब्राह्मण सभा के जिलाध्यक्ष डॉक्टर लोकेश शर्मा, पेंशनर समाज के जिला अध्यक्ष डोरी लाल शर्मा, सर्व ब्राह्मण समाज के जिला अध्यक्ष ताराचंद शर्मा, टाइम बैंक ऑफ़ इंडिया के जिला अध्यक्ष सतीश शर्मा, सेवानिवृत पूर्व निदेशक नेमीचंद शर्मा, वरिष्ठ समाजसेवी छिद्दी लाल शर्मा, शिक्षिवद शिशुपाल लवानिया, विप्र फाउंडेशन के जिलाध्यक्ष डॉ. सुशील पाराशर, डी ओ आई टी के सेवानिवृत अतिरिक्त निदेशक कमल किशोर शर्मा, सेवानिवृत्ति वरिष्ठ लेखाकार ईश्वरी चंद शर्मा, जय श्री बांके बिहारी सेवा समिति के अध्यक्ष हरिगोविंद मिश्रा, ब्राह्मण सेवा समिति तिलक नगर के वरिष्ठ सदस्य पंडित बनबारीलाल शर्मा, एलआईसी के लाल चन्द शर्मा, सेवानिवृत्ति शिक्षा विभाग हरिचरण शर्मा, सेवानिवृत्त सहायक अभियंता देवकीनंदन शर्मा, सेवानिवृत्त अमीन रामेश्वर शर्मा, अन्नपूर्णा रसोई रसोई संचालक विष्णु शर्मा, समाजसेवी. अजीत लवानिया, वरिष्ठ अध्यापक रामेश्वर शर्मा, ब्राह्मण सभा भरतपुर कार्यकारिणी के सदस्य पुष्पेंद्र बरसानियां, वरिष्ठ समाजसेवी सुरेश शर्मा, फ्यूचर पॉइंट इंस्टीट्यूट के निदेशक पवन पाराशर, समाजसेवी लक्खो तिवारी, डॉक्टर भगवान सिंह, (गायत्री परिवार के सदस्य) आदि सहित अनेक विप्र बन्धु मौजूद रहे। कार्यक्रम के अंत में योगेंद्र कटारा ने आगंतुक सभी का आभार व्यक्त किया।

भगवती जागरण में धार्मिक भजनों पर श्रद्धालुओं ने जमकर लगाए ठुमके

करौली, मां करणपुर गुमानो सेवा समिति करौली के तत्वावधान में शहर के नगाडखाना दरवाजा स्थित श्री राधा-गोपाल जी महाराज मंदिर परिसर में नवरात्रि की छठ पर हस्त निर्मित प्रतिमा की पूजा-अर्चना कर आतिशबाजी के साथ महाआरती की गई। इसके बाद रात्रि को मां भगवती का जागरण का आयोजन किया गया। इस दौरान भजन गायक कलाकारों ने एक से बढ़कर एक भजनों की प्रस्तुतियां देते हुए मां भक्तों को ठुमके लगाने पर मजबूर कर दिया। इससे पूर्व गुमानो माता की फूल बंगला व छप्पनभोग की झांकी सजाई गई। आयोजन समिति के अध्यक्ष प्रहलाद गुप्ता व पदाधिकारी गिर्राज तिवारी ने बताया कि कार्यक्रम का शुभारंभ समिति के अध्यक्ष व पदाधिकारियों ने करणपुर वाली गुमानो माता की पूजा - अर्चना करने के साथ अखंड ज्योत प्रज्वलित कर किया। वहीं गायक कलाकार रिंकू गुप्ता करौली ने भगवान गणेश जी की आराधना करते हुए गणपति वंदना की।

उन्होंने तेरे दर पर सर झुकाया ओ शेरोवालिए, बिगड़ी मेरी बना दे ओ शेरों बाली मईया, प्यारा सजा है तेरा द्वार भवानी भक्तों की लगी है कतार भवानी सहित अन्य भजनों की प्रस्तुतियां भी दी। भजन गायिका वर्षा कुंतल दिल्ली ने आते ही कार्यक्रम में धूम मचा दी। उन्होंने जरा फुल बिछा दो अंगना में मेरी मैया आने वाली है, मैया की चुनर उड़ उड़ जाए पवन मोरी धीरे चलो री, वीरों के वीर बजरंगी की जय हो, के अलावा कैला माता के लांगुरिया गाकर उपस्थित महिला-पुरुषों को ठुमके लगाने पर मजबूर कर दिया।

शेखर शर्मा जयपुर, लखन गामा भरतपुर सहित अन्य राज्यों के प्रमुख भजन गायक कलाकारों ने एक से बढ़कर एक माता की भेंट व लांगुरियाओं की प्रस्तुतियां दी। देर रात तक चले कार्यक्रम में सैकड़ों श्रद्धालु रात भर भजनों का आनंद लेते हुए झूमते रहे। वहीं माता के कई भजन प्रस्तुत करते हुए सुबह तारा रानी की कथा सुनाकर कार्यक्रम का समापन किया गया। इससे पूर्व मां करणपुर गुमानो मां सेवा समिति करौली के पदाधिकारियों ने गायक कलाकारों का माला पहनाने के साथ माता की चुनरी उड़ाकर स्वागत किया। कार्यक्रम के दौरान करणपुर वाली गुमानो माता की सजीव झांकी भी सजाई गई। वही रात भर जमकर आतिशबाजी की गई इस अवसर पर अंशु जिंदल, हर्ष गुप्ता, केशु जिंदल, तेजेंद्र सिंह, विष्णु चंद शर्मा, मयंक शर्मा, रौनक शर्मा, अमन शर्मा, मेहुल शर्मा उर्फ मोनू, दिनेश गुप्ता, प्रकाश शर्मा, अंकित गुप्ता, भैरव लाल गुप्ता, यतेंद्र प्रताप बना, मोहित गर्ग, राहुल गर्ग, आयुष जिंदल आदि उपस्थित थे।

प्रतियोगिता का आयोजन

करौली, (निंस.) जिला स्तरीय और रोल प्ले एवं लोक नृत्य प्रतियोगिता का आयोजन स्वामी विवेकानंद राजकीय मॉडल स्कूल ब्लॉक करौली में किया गया। प्रधानाचार्य गोविंद सहाय प्रजापत ने बताया कि राजस्थान राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद उदयपुर,एनसीईपी,एनसीईआरटी नई दिल्ली के निर्देशानुसार इस प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। प्रातः के सत्र में मां सरस्वती की प्रतिमा के समक्ष प्रधानाचार्य गोविंद सहाय प्रजापत, अनीता मीणा उप प्रधानाचार्य,मुकेश कुमार मीणा ने दीप प्रज्वलन और माल्यार्पण करके कार्यक्रम की विधिवत शुरुआत की।मीडिया प्रभारी राजेश कुमार मीना ने बताया कि रोल प्ले प्रतियोगिता में स्वामी विवेकानंद राजकीय मॉडल स्कूल ब्लॉक करौली के ठ्ठुप परी गुप्ता,परी मित्तल,अंजू जाटव,संजना जाटव ने प्रथम स्थान प्राप्त किया।

प्रतियोगिता में करौली विद्यालय की टीम रही प्रथम

■ **जिला समन्वयक राजेन्द्र दीवान ने बताया कि शाखा स्तर पर विजेता रहने पर शिवा एकेडमी सीनियर सेकेंडरी स्कूल के छात्र मेघांश शर्मा और नमन अवस्थी की टीम ने करौली शाखा की ओर से प्रतिनिधित्व किया।**

करौली, (निंस.) भारत विकास परिषद् राजस्थान पू. प्रान्त द्वारा हिंडौन सिटी में आयोजित प्रांत स्तरीय भारत को जानो क्विज प्रतियोगिता के सीनियर वर्ग में करौली शाखा की ओर से शिवा एकेडमी सीनियर सेकेंडरी स्कूल करौली की टीम विजेता रही है।

जिला समन्वयक राजेन्द्र दीवान ने बताया कि शाखा स्तर पर विजेता रहने पर शिवा एकेडमी सीनियर सेकेंडरी स्कूल के छात्र मेघांश शर्मा और नमन अवस्थी की टीम ने करौली शाखा की ओर से प्रतिनिधित्व किया। विजेता टीम को परिषद् के राष्ट्रीय संस्कार गतिविधि प्रभारी मुकेश लाठी,क्षेत्रीय संयुक्त सचिव डॉ शिव दयाल मंगल, प्रांतीय अध्यक्ष एडवोकेट हर्षवर्धन शर्मा, सचिव हेमन्त गर्ग, कोषाध्यक्ष विष्णु मथुरिया ने पारितोषिक व प्रमाण पत्र प्रदान किए।भारत को जानो प्रकल्प प्रभारी पुरुषोत्तम शर्मा ने बताया कि प्रतियोगिता में सात राउंड में भारत की संस्कृति, ज्ञान विज्ञान, धर्म, इतिहास, राजनीति, संविधान आदि से संबंधित रोचक प्रश्न पूछे गए।कार्यक्रम में प्रान्त आइटी प्रभारी योगेन्द्र सिंहल, सीताराम शर्मा एडवोकेट, अध्यक्ष तुलसी दास गोयनका, जिला समन्वयक राजेन्द्र दीवान,कोषाध्यक्ष गोविन्द लोहे वाले, सहसचिव विजय गुप्ता, शचि सिंहल, अखिलेश गुप्ता, शिक्षक मनोज कुमार शर्मा उपस्थित रहे।

हरिदत्त कॉलेज ऑफ फार्मेसी ने जागरूकता रैली निकाली

■ **विद्यार्थियों को मिली पर्यटन सामग्री।**

भरतपुर (निस)। विश्व पर्यटन दिवस' के अवसर पर श्री हरिदत्त कॉलेज ऑफ फार्मेसी के विद्यार्थियों एवं शिक्षकों द्वारा 'आमजन जागरूक रैली' निकाली गई थी। विद्यार्थियों को ज्ञान पुस्तिका एवं पोस्टर्स के वितरण कार्यक्रम में मुख्य अतिथि एडवोकेट अलभ्य शर्मा रहे।

इस मौके पर एडवोकेट अलभ्य शर्मा ने अपने रोचक किस्सों के द्वारा बच्चों को अनुशासित रहने के लाभ बताये। आर.टी.डी.सी भरतपुर और श्री हरिदत्त ठ्ठुप ऑफ इन्स्टीट्यूशन्स के साझे प्रयासों के द्वारा सभी छात्र-छात्रओं को डीग, धौलपुर, भरतपुर घने के पक्षियों की चेकलिस्ट बुकलेट एवं राजस्थान के सभी शहरों के पर्यटन स्थलों के मनोहर पोस्टर्स विद्यार्थियों को वितरित किये गये। आर.टी.डी.सी. भरतपुर की ओर से भी देवदत्त चौधरी ने पर्यटन विकास के लिए सामठाी उपलब्ध कराई।

यशवन्त सिंह, विनोद छारिया और सुनील राजपूत ने श्री हरिदत्त कॉलेज ऑफ फार्मेसी की ओर से उनका स्वागत मालाओं, सॉल एवं बॉके-बिहारी की प्रतिकृती से किया। इस मौके पर विभागाध्यक्ष विनोद छारिया ने आर.टी.डी.सी, भरतपुर से वादा किया कि श्री हरिदत्त फार्मेसी कॉलेज के विधार्थी पर्यटन विकास एवं पर्यावरण सुरक्षा एवं सामुदायिक चेतना के क्षेत्र में हमेंशा साथ देगें और अपने शहर भरतपुर का नाम ऊचाँ करेंगे।

पुरूस्कार वितरण समारोह में सन्दीप खण्डेलवाल, नगेन्द्र सिंह, कृष्णवीर सिंह, करन कुमार, प्रमोद कुमार गुप्ता, अठावाल, विवेक लोधा, खेमराज, गोपाल प्रसाद, नेहा ओमार एवं विनोद अवस्थी उपस्थित थे। दीपक राजपूत, दीपक पाँचाल, नरेन्द्र, धनेशा, संजय सैनी, बृजेश, सुशील सिकरवार, और अनिशा को 'विशेष पर्यटन पुरूस्कार' से नवाजा गया।

भरतपुर में विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन

भरतपुर (निस)। राजस्थान ठाामीण बैंक के क्षेत्रीय कार्यालय भरतपुर द्वारा स्वच्छता ही सेवा अभियान के अंतर्गत आज आदर्श विद्या मंदिर स्कूल जवाहर नगर, भरतपुर में नगर निगम आयुक्त श्रवण कुमार विश्नोई की अध्यक्षता में विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में स्वच्छता के प्रति जागरूकता फैलाने हेतु नुक्कड़ नाटक, स्लोगन प्रतियोगिता, चित्रकला प्रतियोगिता तथा कविता प्रतियोगिता का सफलतापूर्वक आयोजन किया गया। विद्यार्थियों ने उत्साहपूर्वक भाग लेते हुए स्वच्छता का संदेश दिया। नगर निगम आयुक्त श्रवण कुमार विश्नोई ने बच्चों की प्रस्तुतियों की सराहना करते हुए कहा कि स्वच्छ भारत का सपना तभी साकार होग।

आजादी से आज तक कांग्रेस ने लड़ी लोकतांत्रिक मूल्यों को बचाने की लड़ाई

करौली, (निंस.) अखिल भारतीय कांठोस कमेटी द्वारा चलाए जा रहे, वोट चोर - गद्दी छोड़ हस्ताक्षर अभियान की शुरुआत कांग्रेस पार्टी डेटा सेल के राष्ट्रीय संयोजक विशाल मीना खूबपुरा द्वारा विधानसभा क्षेत्र सपोटरा के बूथ संख्या 1 पितरामपुरा के गाँव खांडेपुरा से शुरुआत की। इस दौरान खांडेपुरा ठाम की चौपाल पर बूथ संख्या 1 ,2 ,3 के अंर्तगत निवास करने वाले कांठोस जनों को इकट्ठा किया गया एवं उन्हें लोकसभा में विपक्ष के नेता राहुल गांधी के नेतृत्व में चुनाव आयोग व भाजपा सरकार की मिलीभगत कर वोट चोरी ख़लिफ़ चलाए जा रहें हस्ताक्षर अभियान के वारे में अवगत कराया। विशाल मीना ने अपने संबोधन में कहा की भाजपा व चुनाव आयोग मिलकर वोटों की विभिन्न तरीकों से चोरी कर रहें है साथ ही विशाल मीणा ने कहा की वोट चोरी रोकना सिर्फ कांठोस पार्टी की ही जिम्मेदारी नहीं, यह भारत हर उस नागरिक की जिम्मेदारी जो भारत देश के लोकतांत्रिक मूल्यों और संविधान में विश्वास करता है, कांठोस पार्टी का इतिहास स्वतंत्रता संठााम से लेकर आज तक देश के लोकतांत्रिक मूल्यों को बचाने का हैं, कांठोस पार्टी ने अपने उद्देश्य में हमेशा देश के लोकतांत्रिक मूल्यों को प्राथमिकता पर रखा हैं, क्युकि कांठोस पार्टी का मानना है कि अगर देश में लोकतंत्र ही नहीं बचेगा तो चुनावों का फायदा ही क्या हैं। सरकारें आएगी एवं जाएगी, लेकिन देश में लोकतंत्र व संविधान का जिंदा रहना बहुत जरूरी है, और वोट चोरी को रोकना देश के लोकतंत्र की हत्या को रोकना हैं, इसलिए सभी को इस हस्ताक्षर अभियान में भाग लेने की अपील की। यह हस्ताक्षर अभियान सपोटरा विधानसभा क्षेत्र के प्रत्येक बूथ को कवर करेगा। प्रत्येक बूथ पर कांठोस कार्यकर्ता एवं आमजन को जागरूक कर हस्ताक्षर अभियान से जोड़ा जाएगा।अभियान की अध्यक्षता युवा कांठोस के जिला उपाध्यक्ष दिनेश गुर्जर ने की, मीटिंग में युवा कांठोस के जिला सचिव रामहरी गुर्जर, राजवीर, विमल गुर्जर,राजेंद्र बैरवा, विश्राम बैरवा, मनोज गुर्जर, मुंशी बैरवा, पप्पू योगी, भगवान सिंह, नरेश योगी, मुनेश गुर्जर, देवी बैरवा उपस्थित रहें।

सार-समाचार

वायु सेना दिवस सम्मान समारोह में नरेंद्र निर्मल की पुस्तकों का विमोचन

भरतपुर (निस)। द कॉन्स्टिट्यूशन क्लब ऑफ राजस्थान, जयपुर में वायु सेना सम्मान समारोह 2025 का आयोजन राजस्थान कर्मचारी चयन आयोग के अध्यक्ष मेजर जनरल (रिटायर्ड) आलोक राज पीवीएसएम, एवीएसएम,वीएसएम के मुख्य आतिथ्य एवं एडीजी एसओजी,राष्ट्रपति पदक से सम्मानित आईपीएस वीके सिंह एवं एयर फोर्स स्टेशन जयपुर के स्टेशन कमांडर ठ्ठुप कैप्टन विनय भारद्वाज के विशिष्ट आतिथ्य में सम्पन्न हुआ।अतिथि मंडल में एयर मार्शल (रिटायर्ड)जगदीश चंद्र पीवीएसएम, एवीएसएम, वीएसएम,मेजर जनरल (रिटायर्ड) अनुज माथुर वीएसएम, एयर वाइस मार्शल (रिटायर्ड) ए के शर्मा, एयर कमोडोर (रिटायर्ड) चंद्रमौली की गरिमामई उपस्थिति रही भारतमाता के चित्र पर अतिथियों द्वारा माल्यार्पण एवं दीप प्रज्वलन से आरम्भ हुए कार्यक्रम में ऑपरेशन सिंदूर में शहीद हुए सार्जेंट सुरेंद्र मोगा की वीरांगना सीमा मोगा एवं सार्जेंट भले सिंह का सम्मान हुआ। साहित्य के क्षेत्र में अपनी विशिष्ट पहचान बनाने वाले एयर वेटरन एवं साहित्यकार नरेंद्र ष्निर्मलष् के काव्य संठाह 'श्री राधे' एवं 'गिरधारी' के साथ साहित्य अकादमी उदयपुर के सहयोग से प्रकाशित काव्य संठाह 'धूप -छाँव' विमोचन किया गया तथा शॉल एवं प्रतीक चिह्न से सम्मान किया गया। निर्मल की गजल संठाह 'आग़ाज़' के साथ जवाहर लाल नेहरू बाल साहित्य अकादमी जयपुर द्वारा प्रकाशित 'मित्री जाएगी स्कूल' तथा राजस्थान ब्रजभाषा अकादमी जयपुर द्वारा 'ब्रजभाषा साहित्यकार दर्पण रूनरेंद्र निर्मल' पुस्तक भी प्रकाशित हो चुकी है। कार्यक्रम में बड़ी संख्या में एयर वेटरन्स उपस्थित रहे।

कवि सम्मेलन हुआ

हलैना भरतपुर (निस)। अग्रवाल महासभा एवं नवयुवक अग्रवाल समाज की ओर से कस्वा हलैना में मनाए जा रहे महाराजा अग्रसेन जयन्ती महोत्सव के तहत 28 वां राष्ट्रीय कवि सम्मेलन हुआ, जिसकी अध्यक्षता महासभा के संरक्षक ओमप्रकाश गुप्ता ने की, जबकि मुख्य अतिथि ट्रोमा सेन्टर हलैना के प्रभारी डॉ.अमित अठावाल एवं विशिष्ट अतिथि अग्रवाल समाज छौंकरवाडा कला के अध्यक्ष रामकिशोर गुप्ता,सोमेश्वर पहलवान,रवि गुप्ता रहे। कवि-कवित्रियों ने ओजस्वी ,हास्य,करूणा रस में काव्यपाठ, गीत,चुटकुले आदि की प्रस्तुतियां देकर श्रोताओं को भावविभोर व लोटपोट कर दिया। कवि सम्मेलन की शुरूआत दौसा से आई कवित्री सपना सोनी ने मां शारदा,गणेश व अठासेन वन्दना के साथ की। जिन्होने भगवान श्रीकृष्ण-राधा एवं मेवाड की महारानी मीराबाई के प्रेम की प्रस्तृतियां दी। वही भरतपुर के कवि ललतेष कुशवाहा ने हास्य की कविताओं से लोटपोट करते हुये गाय की व्यथा सुनाई, आगरा के कवि मोहित सक्सैना ने देशभक्ति, आगरा के लटूरी लट्ठ ने मातृ भाषा हिन्दी की जीवनी,हाथरस के पदम अलवेला ने पति-पत्नी के प्रेम, मेनपुरी के सतीश मधुप व विनोद राजयोगी ने गीत व मां की ममता पर प्रस्तुतियां दी। मंच का संचालन हास्य कवि लटूरी लट्ठ ने एवं आभार प्रकट मास्टर ओमप्रकाश गुप्ता ने किया। इस अवसर पर अठावाल समाज के पदाधिकारी सुरेशचन्द जिन्दल,अशोक गुप्ता दवा वाला,पंचायत समिति सदस्य संजय गुप्ता,पूरनमल जिन्दल,रवि गोयल,रविजिन्दल,अनिल गोयल, डिम्पल सिंघल, गोविन्द गुप्ता, मास्टर महेश जिन्दल, दिनेश जिन्दल, सतीश दरोगा, विष्णु मित्तल आदि ने अतिथि व कवि-कवित्रियों का स्वागत किया।

संजय शर्मा सम्मानित

भरतपुर (निस)। भरतपुर शहर के मोहल्ला गोपालगढ़ निवासी संजय शर्मा पुत्र सुशील चंद्र शर्मा को ऑस्ट्रेलिया में क्रिकेट के क्षेत्र में राष्ट्रीय पुरस्कार मिलने पर जिला क्रिकेट संघ भरतपुर द्वारा भरतपुर पधारने पर संजय शर्मा का भव्य स्वागत और सम्मान किया गया। जिला क्रिकेट संघ भरतपुर के सचिव शत्रुघन तिवारी बताया कि संजय शर्मा को क्रिकेट और सामुदायिक सेवाओं में उनके उत्कृष्ट योगदान के लिए कई प्रतिष्ठित सम्मान प्राप्त हुए हैं। उन्हें क्रिकेट जगत में ऑस्ट्रेलिया द्वारा मल्टीकल्चरल क्रिकेट एम्बेसडर नियुक्त किया गया है और इन्क्लूज़न और डायवर्सिटी के लिए राष्ट्रीय पुरस्कार से सम्मानित किया गया है। इसके अतिरिक्त ऑस्ट्रेलियन कैपिटल टेरिटरी सरकार ने उन्हें लोकल लीजेंड अवार्ड प्रदान किया, जबकि क्रिकेट क्षेत्र में ऑस्ट्रेलियन कैपिटल टेरिटरी ने उनके निरंतर प्रयासों और सेवाओं की सराहना करते हुए आउट स्टैंडिंग सपोर्ट टू स्पोर्ट अवार्ड से नवाज़ा गया था इन पुरस्कारों ने ना केवल उनके समर्पण को मान्यता दी है बल्कि खेल और बहुसांस्कृतिकता के क्षेत्र में उनके अथक प्रयासों को भी उजागर किया है। स्वागत समारोह के दौरान जिला क्रिकेट संघ के अध्यक्ष विष्णु लोहिया उपाध्यक्ष राजकुमार जैन एवं अजय कुमार शर्मा संयुक्त सचिव अरुण कुमार गुप्ता कोषाध्यक्ष मुनेंद्र तिवारी सदस्य राहुल लोहिया, बीनू सिंह, अवधेश खटाना,सुमित अरोड़ा त्रिलोकीनाथ शर्मा, जितेंद्र गुर्जर ज्ञानू जघीना, रविंद्र केमरिया वीरेंद्र पचौरी, पवन कोंतेये, गिरीश शर्मा,उत्तम शर्मा, नरेश खत्री, सूरज शर्मा, प्रेम सिंह, पंकज गोयल, लंकेश सियाराम, गौरव फौजदार, देवेंद्र सिंह कालू पीतम आदि उपस्थित रहे।

स्कूल समय यथावत रखने की मांग

करौली, (निंस.) राजस्थान शिक्षक संघ (राष्ट्रीय) ने राज्य के शिक्षा मंत्री को पत्र लिखकर राज्य में 12 अक्टूबर तक एक पारी विद्यालयों का समय प्रातः साढ़े सात बजे से एक बजे तक यथावत रखने की मांग की है । संघ के जिला प्रवक्ता राजेन्द्र दीवान ने बताया कि संगठन के प्रदेश महामंत्री महेन्द्र कुमार लखारा ने पत्र में लिखा है कि राज्य के अधिकतर जिलों में गर्मी अधिक होने के कारण 1 अक्टूबर से दोपहर बाद तक विद्यालय संचालन से विद्यार्थियों व शिक्षकों को अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ेगा। अतः 12 अक्टूबर दीपावली अवकाश प्रारम्भ होने तक विद्यालय समय प्रातः 7:30 बजे से दोपहर 1:00 बजे तक ही रखने के शिविरा कलेंडर में संशोधन करने की मांग की है। इसके अलावा राजस्थान समठा शिक्षक संघ के प्रदेश अध्यक्ष डॉ उदयसिंह डिंगार के नेतृत्व में संगठन ने राज्य के शिक्षामंत्री मदन दिलावर को ज्ञापन प्रेषित कर विद्यालयों का समय 12 अक्टूबर तक प्रातः कालीन 7:30 से 1:00 तक का ही रखने की मांग की है। करौली के जिला अध्यक्ष रूपसिंह गोरेहार, जिला संरक्षक प्रहलाद मीणा, जिला सभाध्यक्ष राजू लाल गुप्ता, उपसभाध्यक्ष राजेश शर्मा, जिला वरिष्ठ उपाध्यक्ष जयप्रकाश ओड़च, जिला उपाध्यक्ष शिंभू सिंह राजपूत ,घनश्याम डाबिर, इमराज डड़ेला, भरत लाल जोडली, पुरुषोत्तम, जिला मंत्री मदन मोहन तिवारी, जिला कोषाध्यक्ष पीयूष कुमार शर्मा ने बताया कि शिविरा पंचांग अनुसार 1 अक्टूबर से विद्यालय समय प्रातः 10:00 बजे से सायं 4:00 बजे तक का किया जाना है जो कि प्रदेश की वर्तमान परिस्थितियों में गर्मी के प्रकोप के कारण उचित नहीं है। उन्होंने बताया कि दूर दराज के स्कूलों में भीषण गर्मी में अध्यापकों एवं विद्यार्थियों को कई परेशानियों का सामना करना पड़ सकता है।

कॉलेज की बालिकाओं ने श्रमदान किया

हलैना भरतपुर (निस)। पद्मनी देवी गर्ल्स कॉलेज की स्वयंसेविका तथा बालिकाओं ने एक दिवसीय एनएसएस शिविर आयोजित कर श्रमदान किया और स्वच्छता अभियान की शुरूआत कर शहर व कॉलेज परिसर प्लास्टिक मुक्त और विकसित भारत का संकल्प लिया। सथ ही खेल मंत्रालय भारत सरकार के निर्देशानुसार युग कार्यक्रम एवं विकसित भारत यंग लीडर्स डायलॉग क्विज प्रतियोगिता मे अधिकाधिक सहभागिता निभाई। पीडी गर्ल्स कॉलेज के प्राचार्य डॉ.पवन धाकड ने शिविर का शुभारम्भ करते हुए कहा कि मानव जीवन को निरोगी कायम रखने तथा प्रदूषण से छुटकारा प्राप्ति के लिए सभी को स्वच्छता अभियान में जिम्मेदारी अदा करनी पडेगी और शहर,गांव सहित घर के आंगन को साफ रखना होगा साथ ही सार्वजनिक स्थलों पर स्वच्छता कायम रखनी होगी। उन्होने कहा कि एनएसएस सभी को देश,समाज,परिवार की सेवा करना सिखाती है और आमजन को समाजसेवा के प्रति जागरूक करती है। सभी को स्वच्छता अभियान की शुरूआत कर शहर व कॉलेज परिसर प्लास्टिक मुक्त और विकसित भारत का संकल्प लेना होगा। इस अवसर पर एनएसएस के प्रभारी रविके श धाकड़ सतिवान धाकड़ ,रविंद्र सर, चेतन धाकड़, विनीता धाकड़ आदि उपस्थित रहे

सर्राफा संघ करौली का चुनाव संपन्न

करौली (निंस.)सोमवार चुनाव को सर्राफा संघ करौली का चुनाव भंवर विलास पैलेस में संपन्न हुआ जिसमें सर्वसम्मति से गोविंद सर्राफ को अध्यक्ष पद के लिए निर्विरोध चुना गया । नव निर्वाचित अध्यक्ष गोविंद सर्राफ ने बताया कि कार्यकारिणी में महामंत्री पद के लिए जयेश सर्राफ व उपाध्यक्ष पद के लिए सत्य प्रकाश बंसल व अशोक सर्राफ को, कोषाध्यक्ष पद के लिए श्रीभगवान गोयल को निर्विरोध चुना गया है भी वहीं कार्यकारिणी में सदस्यों के लिए रविंद्र गोयनका,रमेश संघई,अखिलेश,कौशल बंसल,पवन गुप्ता,माखन गुप्ता को शामिल किया गया है।

रावला और घड़साना मंडियों में नकली बीज और खाद के खिलाफ कार्रवाई

कृषि मंत्री डॉक्टर किरोड़ीलाल मीणा रावला और घड़साना मंडियों में पहुंचे

- बीज कंपनियों के रिकॉर्ड में भारी गड़बड़ी पाई गई, जिसके बाद बिक्री पर तत्काल रोक लगाई

अनूपगढ़, (निसं)। कृषि मंत्री डॉक्टर किरोड़ीलाल मीणा ने श्रीगंगानगर जिले के रावला और घड़साना मंडियों में नकली बीज और खाद के खिलाफ बड़ी कार्रवाई की। इस दौरान बीज कंपनियों के रिकॉर्ड में भारी गड़बड़ी पाई गई, जिसके बाद उनकी बिक्री पर तत्काल रोक लगा दी गई।

मंत्री किरोड़ी दोपहर घड़साना कृषि उपज मंडी पहुंचे, जहां रीको स्थित दीपक सीड्स पर भी छापा मारा गया। निरीक्षण के दौरान कंपनी के पास किसी भी तरह का रिकॉर्ड नहीं मिला। इस पर कृषि मंत्री ने दीपक सीड्स के संचालक को बीज की बिक्री तुरंत रोकने के निर्देश दिए। रावला मंडी के गांव 19 केएनडी और 11 डीओएल में स्टार एग्री सीड्स प्राइवेट लिमिटेड के रिकॉर्ड में ग्वार की बुवाई दर्ज थी, जबकि मौके पर नरमा और मूंग की फसल मिली।

खेत के किसान गुरतेज सिंह ने बताया कि उन्हें यह जानकारी नहीं थी कि उनका खेत बीज प्रोडक्शन में शामिल है। इस पर मंत्री किरोड़ी ने इसे किसानों के साथ सीधा धोखा बताते हुए कड़ी कार्रवाई का आश्वासन दिया। मंत्री ने बताया कि निरीक्षण में यह भी पाया गया कि स्टार एग्री के गेहूं बीज पैकिंग बैग पर तमिलनाडु का पता दर्ज था, जबकि असल में उत्पादन और पैकेजिंग संगरिया में हो रही थी। सरसों के बीजों पर खतरनाक केमिकल के उपयोग की पुष्टि भी हुई। कंपनी प्रबंधन संतोषजनक जवाब देने में विफल रहा। नतीजतन, सरकार ने 10 हजार क्विंटल सरसों और 34 हजार क्विंटल गेहूं बीज की बिक्री पर तत्काल रोक लगा दी।

कृषि मंत्री ने कहा कि किसानों के साथ धोखाधड़ी किसी भी कीमत पर बर्दाश्त नहीं की जाएगी। बीज कंपनियों की ऐसी करतूतें कृषि क्षेत्र के लिए गंभीर खतरा है। दोषियों के खिलाफ सख्त कार्रवाई सुनिश्चित की जाएगी, ताकि भविष्य में किसानों को इस तरह की परेशानियों का सामना न करना पड़े।

रावला दौरे के दौरान किसानों ने कृषि मंत्री को बताया कि दो साल पहले सरकार के द्वारा सरसों की फसल को सरकारी खरीद की गई थी। मगर कुछ लोगों ने अधिकारियों के साथ मिलीभगत कर सरसों की सरकारी खरीद में धांधली की थी, जिस कारण से किसानों का भुगतान रुक गया था। उन्होंने बताया कि इस मामले में कुछ व्यापारियों के खिलाफ रावला पुलिस थाने में मामला भी दर्ज करवाया गया था। किसानों ने मंत्री से मांग की है कि किसानों का बकाया भुगतान शीघ्र करवाया जाए। मंत्री किरोड़ी लाल मीणा ने उन्हें आश्वस्त किया है कि शीघ्र उनका भुगतान करवाया जाएगा।

मौके पर किसान राजू जाट और सत्यप्रकाश सियाग सहित अन्य किसानों ने अनूपगढ़ कृषि विभाग के सहायक निदेशक जसवंत सिंह पर गंभीर आरोप लगाए। किसानों ने आरोप लगाए कि सहायक निदेशक ने अपने भाई के नाम पर बायोलेक एग्री साइंस और स्टीव एग्री केअर नाम की दो फर्म बना रखी है। उन्होंने आरोप लगाया कि सहायक निदेशक के द्वारा दुकानदारों पर दबाव बनाकर इन दोनों फर्मों का माल बिकवाया जा रहा है। किसानों ने मंत्री से मांग की है कि इन दोनों फर्मों की पिछले 2 सालों की बिक्री का रिकॉर्ड खंगाला जाए और दोषियों के खिलाफ कार्रवाई की जाए। इस पर किरोड़ी लाल मीणा ने तुरंत प्रभाव से कृषि विभाग के उच्च अधिकारियों को मामले की जांच कर आवश्यक कार्रवाई करने के लिए निर्देशित किया।

घड़साना में निरीक्षण के दौरान अनूपगढ़ क्षेत्र के नदी से प्रभावित किसान मंत्री से मिले। किसान कश्मीर सिंह कंबोज ने मंत्री को अवगत करवाया कि घग्घर नदी के पानी के कारण किसानों के हजारों एकड़ में खड़ी नरमें और धान की फसल डूब गई है, जिससे किसानों को करोड़ों रुपए का आर्थिक नुकसान हुआ है। मंत्री ने किसानों को आश्वस्त किया है कि सरकार के द्वारा खराब हुई फसल का सर्वे करवाया जा रहा है। किसानों को शीघ्र ही राहत राशि दी जाएगी।

सड़क दुर्घटना में महिला कांस्टेबल की मौत

महिला कांस्टेबल चूकी देवी (फाइल फोटो)।

- बाइक चलाने के दौरान महिला कॉन्स्टेबल चूकी देवी के सिर पर हेलमेट नहीं था
- महिला कॉन्स्टेबल की बाइक भारी वाहन से टकरा गई थी, चालक गिरफ्तार

सांचौर, (कासं)। सांचौर वृत्ताधिकारी कार्यालय में कार्यरत महिला कांस्टेबल चूकी देवी की सोमवार को सड़क दुर्घटना में मौत हो गई। यह घटना सुबह करीब 11 बजे सांचौर मुख्यालय से बाडमेर की साइड कार्यालय से कुछ किलोमीटर दूर हुई।

पुलिस के अनुसार वृत्ताधिकारी कार्यालय में कार्यरत कॉन्स्टेबल चूकी देवी उसके पति डूंगरी निवासी प्रकाश भादू के साथ सुबह किसी मंदिर में आशीर्वाद लेने गई थी। वापस आते समय पति को फ्रूट गाड़ी के पास छोड़कर चूकी देवी अकेली मोटरसाइकिल पर वृत्ताधिकारी कार्यालय में ड्यूटी के लिए रवाना हो गई। इस दौरान मुख्यालय से कुछ किलोमीटर दूर पर एक भारी वाहन को ओवरटेक करने का प्रयास किया, लेकिन सड़क किनारे पटरी ठीक नहीं होने के चलते बाइक असंतुलित हो गई और भारी वाहन के आगे के हिस्से से टकरा गई।

टक्कर लगने से चूकी देवी मोटरसाइकिल से उछलकर सड़क पर गिर गई। उसके सिर में गंभीर चोट लगने से काफी खून बह गया। जानकारी मिलते ही पुलिस व एम्बुलेंस से उसे गुजरात उपचार के लिए ले जाते समय रास्ते में दम तोड़ दिया। पुलिस ने पोस्टमार्टम प्रक्रिया अपनाने के बाद शव परिजनों को सुपुर्द किया। पुलिस उप अधीक्षक जयराम मुंडेल ने बताया कि भारी वाहन को जब्त कर चालक को गिरफ्तार कर लिया है।

जानकारों ने बताया कि कांस्टेबल चूकी देवी अनुशासित सिपाही थी। वे हमेशा मोटरसाइकिल पर हेलमेट पहनकर ही ऑफिस आती थी, लेकिन सोमवार को जल्दबाजी में हेलमेट भूल गई। जानकारों ने बताया कि जिस प्रकार से चूकी देवी खीचड गिरी है, अगर हेलमेट होता तो सिर में गम्भीर चोट से सम्भवतया बचाव होता, लेकिन ईश्वर को कुछ और ही मंजूर था।

सुरेश शर्मा हत्याकांड के सभी आरोपियों को सुप्रीम कोर्ट ने बरी किया

जोधपुर के डांगियावास क्षेत्र में साल 2006 में हुआ था सुरेश शर्मा हत्याकांड

- कोर्ट ने अपने फैसले में कहा कि जिस पुलिस जांच के आधार पर पूरे केस की नींव रखी गई, वह न केवल कमजोर थी, बल्कि सबूतों के अभाव में न्यायिक कसौटी पर भी टिक नहीं सकी

जोधपुर, (कासं)। जोधपुर के डांगियावास क्षेत्र में साल 2006 में हुए सुरेश शर्मा हत्याकांड में सुप्रीम कोर्ट ने 19 साल बाद सभी आरोपियों को बरी कर दिया है। सुप्रीम कोर्ट के संदीप मेहता और जस्टिस जॉयमाल्या बागची की कोर्ट ने अपने फैसले में कहा कि जिस पुलिस जांच के आधार पर पूरी केस की नींव रखी गई, वह न केवल कमजोर थी, बल्कि सबूतों के अभाव में न्यायिक कसौटी पर भी टिक नहीं सकी।

उच्चतम न्यायालय ने इस केस की आरोपी हेमलता, उसके पति नरपत चौधरी और भंवरसिंह को दोषमुक्त करते हुए स्पष्ट किया कि अभियोजन पक्ष की कहानी सिर्फ अंदाजों और अनुमान पर आधारित थी, लेकिन उसके समर्थन में कोई ठोस, निर्णायक या तकनीकी साक्ष्य न्यायालय के समक्ष पेश नहीं किया गया। यह कहानी 23 जनवरी 2006 की है। जब सुरेश शर्मा के बेटे नवनीत ने पिता की गुमशुदगी की रिपोर्ट दी थी। कुछ घंटों बाद शव मिला। पोस्टमार्टम में गला घोंटने समेत बीस से अधिक चोटों के निशान पाए गए थे।

जमीन विवाद की आशंका पर पुलिस ने जिन लोगों को नामजद किया था, पूरी तफ्तीश लगभग उन्हीं सबूतों के इर्द-गिर्द घूमती रही। जिन्हें कोर्ट ने संदेह के घेरे में रखा। ट्रायल कोर्ट ने इन्हीं साक्ष्यों के आधार पर अभियुक्तों को दोषी ठहरा दिया था, लेकिन हाईकोर्ट ने सबूतों की कड़ी में 'अंतर', गवाहों की गवाही में 'अनिश्चितता', और फॉरेंसिक रिपोर्ट में स्पष्टता के अभाव को देखते हुए तीनों को साल 2011 में बरी कर दिया था।

राज्य सरकार की अपील के बावजूद, सुप्रीम कोर्ट ने हाईकोर्ट के फैसले को बरकरार रखते हुए यह साफ किया कि न तो कथित 'लास्ट सीन' थ्योरी की पुष्टि निर्दोष गवाहों से हो पाई, न ही खून के धब्बों, जब्त किए गए दुपट्टे और वाहन जैसी फोरेंसिक सामग्री को मृतक से जोड़ना तकनीकी रूप से पुख्ता था।

अदालत ने कहा कि, केस का खाका केवल संदेह की कड़ी पर टिक नहीं सकता, जब तक आरोप सिद्ध न हो जाये और दोष की पुष्टि न्यायिक मानकों पर न हो जाए, किसी को सजा नहीं दी जा सकती।

गैस रिसाव के बाद सिलेंडर फटा, पति-पत्नी व दो बेटियां झुलसी

- आग की लपटें इतनी तेज थी कि घर का मुख्य दरवाजा सहित अन्य सामान जल गया

उदयपुर, (कासं)। उदयपुर के कुराबड़ थाना क्षेत्र में गैस सिलेंडर से गैस लीकेज के बाद भभकी आग से एक ही परिवार के चार लोग झुलस गए। आग की लपटें इतनी तेज थी कि घर का मुख्य दरवाजा सहित अन्य सामान जल गया। आग में फंसा परिवार मदद के लिए चिल्लाया तो पड़ोस के लोग पहुंचे और सभी को बाहर निकाला। झुलसी हालत में सभी को हॉस्पिटल ले जाकर भर्ती करवाया गया।

जानकारी के अनुसार घटना कुराबड़ थाना क्षेत्र के बोरी गांव में शंकरलाल मीणा (45) पुत्र नगा मीणा के घर सोमवार सुबह सात बजे की है। पूरा परिवार छत पर सोया हुआ था। छत से उठकर जब परिवार नीचे आया। पत्नी गीता ने चाय बनाने के लिए गैस जलाई तभी आग तेज आग पूरे घर में भभक गई। जिसके चपेट में चारों आ गए। हादसे में शंकरलाल मीणा (45), पत्नी गीता मीणा (40), पुत्री लोगरी (9) व मोनिका (7) बुरी तरह झुलस गए। इनमें सबसे ज्यादा करीब 70 फीसदी गीता झुलसी है। सभी को एमबी हॉस्पिटल लेकर आए हैं जहां इनका इलाज चल रहा है। शंकरलाल व लोगरी 35 प्रतिशत और गीता व सबसे छोटी बच्ची 70 से 80 फीसदी झुलसे हैं।

सूने मकान से 22 तोला सोने के जेवर चोरी

- मकान मालिक परिवार सहित बीकानेर गया हुआ था

सूरतगढ़, (निसं)। यहां वार्ड नं. 22 में अज्ञात चोरों ने एक बंद मकान को निशाना बनाकर लाखों रुपए के सोने के जेवरात पार कर दिए। घटना का खुलासा तब हुआ जब मकान मालिक बीकानेर से अपने घर लौटा।

जानकारी अनुसार वार्ड नं. 22 निवासी राजाराम स्वामी अपने परिवार सहित बीकानेर में रहते हैं और कभी-कभार यहां घर आना-जाना करते हैं। बताया गया कि 21 जुलाई को वे पत्नी के साथ सूरतगढ़ आए थे और बीकानेर वापस लौटते वक्त पत्नी के गहने अलमारी में ही रह गए। इस बीच पारिवारिक व्यस्तताओं के चलते वे लगभग दो महीने तक सूरतगढ़ नहीं आ सके। बीकानेर से 26 सितंबर की रात करीब 10 बजे जब वे घर लौटे तो अंदर का ताला टूटा मिला और कमरों में रखा सामान अस्त-व्यस्त था। चोरी गए आभूषणों में 2 तोले का चन्द्रहार, 3 तोले का एक अन्य चन्द्रहार, 1 तोले की रखड़ी, 4 तोले के 8 बिंटियां, 2 तोले की 4 चूड़ियां, 6 तोले का हार, 2 तोले के 5 कान टोप्स, आधा तोले के 80 मोती, 4 ग्राम की 2 नथ और एक हाथ का पूंचा शामिल हैं। करीब 22 तोला इन गहनों की कीमत लाखों रुपए आंकी जा रही है। सूचना मिलने पर उप निरीक्षक माणकलाल व सिपाही दुर्गादत्त ने पहुंचकर घटना की जानकारी लेने के साथ पड़ोस में लगे सीसीटीवी कैमरों की फुटेज भी खंगाली। इस संबंध में राजाराम ने रविवार देर शाम रिपोर्ट दी जिसके आधार पर पुलिस ने मामला दर्ज कर लिया है। थाना के सहायक उप निरीक्षक रणवीर सिंह ने बताया कि प्रकरण की जांच उन्हें सौंपी गई है। वारदात में शामिल चोरों की तलाश के लिए टीमें गठित कर संदिग्धों से पूछताछ की जा रही है।

पारा 40 डिग्री पार पहुंचा

बीकानेर, (निसं)। मानसून की विदाई के साथ ही बीकानेर में गर्मी बढ़ती जा रही है। तापमान चालीस डिग्री सेल्सियस से ऊपर जा रहा है। न सिर्फ बीकानेर बल्कि बाड़मेर और जैसलमेर सहित समूचे पश्चिमी राजस्थान में बढ़ते पारे ने जनजीवन का प्रभावित किया है। बीकानेर में पारा रविवार को तापमान 39 डिग्री सेल्सियस तक पहुंच गया था। सोमवार को भी पारा 40 तक पहुंच गया है।

मानसून के समय जहां अधिकतम तापमान 32 से 35 डिग्री सेल्सियस के बीच था, वहीं अब इसमें पांच डिग्री सेल्सियस की बढ़ोतरी हुई है। वहीं न्यूनतम तापमान भी 22 से 25 डिग्री सेल्सियस से बढ़कर अब 29 डिग्री सेल्सियस तक आ गया है। आने वाले कुछ दिनों तक बीकानेर में गर्मी का असर जारी रहेगा। मौसम विभाग ने बीकानेर में न तो बारिश की संभावना जताई है और न तापमान में गिरावट की। ऐसे में तापमान में मामूली बढ़ोतरी हो सकती है। पारा चालीस डिग्री सेल्सियस के पार जा सकता है। वहीं रात का पारा तीस डिग्री सेल्सियस से ऊपर हो सकता है। बीते चौबीस घंटे में बीकानेर से ज्यादा तापमान जैसलमेर और बाड़मेर का रहा है। इन दो जिलों के बाद बीकानेर में ही सबसे ज्यादा गर्मी रही है। वहीं जोधपुर, फलौदी सहित पश्चिमी राजस्थान के अधिकांश जिलों में पारे का ग्राफ बढ़ता जा रहा है।

545 बेटिकट यात्रियों पर कार्रवाई

जोधपुर, (कासं)। उत्तर पश्चिम रेलवे मुख्यालय एवं जोधपुर मंडल के विशेष टिकट जांच दस्तों द्वारा संयुक्त टिकट चेकिंग अभियान के बाद ट्रेन में मुफ्त यात्रा करने वालों में हड़कंप मचा हुआ है। जोधपुर मंडल के विशेष टिकट जांच दस्तों द्वारा अभियान के दौरान जयपुर-अजमेर, जयपुर-भरतपुर, जयपुर-सवाई माधोपुर, जयपुर-रेवाड़ी, जयपुर- बीकानेर एवं जयपुर-कोटा रेल खंडों की 19 यात्री गाड़ियों में जांच की गई। इसमें 545 यात्री बिना टिकट यात्रा करते पकड़े गए, जिनसे यात्रा किराया व जुर्माने सहित 2,14,315 रुपये की वसूली की गई।

डूंगरपुर में तेज बारिश, गरबा स्थलों पर पानी भरा

डूंगरपुर, (निसं)। गत दो दिन से मानसून की चेतावनी के बाद लगातार तेज बारिश का दौर कुछ समय के लिए चल रहा है। सोमवार को भी दोपहर तथा देर शाम को 10-15 मिनिट तक तेज बारिश का दौर चला, जिसके कारण शहर के भितरी एवं बाहरी भागों के कई इलाकों में तेज बहाव के साथ पानी बहा तथा पुराने शहर के कानेरा पोल, मोची बाजार मार्ग पर तो दो पहिया व तिहपहिया वाहनों को गुजरने में परेशानी हुई। लगातार तेज उमस व गर्मी के कारण आम जन परेशान रहा। दोपहर में लगभग एक बजे अचानक तेज बारिश का जो दौर चला। शाम साढे पांच बजे बाद फिर से एक बार तेज बारिश का दौर चला, जिससे शहर के घाटी, सर्राफा बाजार, कानेरा पोल, भोईवाडा मोची बाजार आदि क्षेत्रों में तेज बहाव के साथ पानी चला। वहीं दूसरी ओर सिवरेज के कारण खुदी सड़कें गड्ढों में तब्दील हो गई। अचानक चले बारिश के दौर के कारण गरबा स्थलों की सजावट भी प्रभावित हुई तथा कई गरबा स्थलों पर पानी भी जमा हो गया।

बारिश के बाद सड़कों पर भरे पानी में से गुजरते वाहन।

सोते हुये युवक की कुल्हाड़ी से वार कर नृशंस हत्या, आरोपी फरार

बूंदी, (निसं)। बूंदी जिले के डाबी थाना क्षेत्र के चौहानों की झोपड़ियां गांव में रविवार रात हुई वारदात ने पूरे इलाके को हिला कर रख दिया। रविवार रात को नींद में सोते हुए युवक पर कुल्हाड़ी से हमला कर उसकी बेरहमी से हत्या कर दी गई। रात के अंधेरे में हुई यह वारदात इतनी नृशंस थी कि शव को देखकर ग्रामीणों की रूह कांप उठी। घटना की सूचना मिलते ही पुलिस और प्रशासनिक अमला मौके पर पहुंचा, लेकिन इससे पहले ही पीड़ित की कोटा अस्पताल में मौत हो चुकी थी।

डीएसपी हेमंत गौतम ने बताया कि मृतक युवक हरिराम किर गांव में कालूराम गुर्जर के कृषि फार्म पर हाली का काम करता था। रोज की तरह वह बीती रात फार्म पर बने झोपड़े में सो रहा था। रविवार देर रात गांव का ही मुकेश गुर्जर वहां पहुंचा और अचानक कुल्हाड़ी से हरिराम के सिर पर वार कर दिया, नींद में डूबे हरिराम के पास अपनी जान बचाने का कोई मौका तक नहीं था। गंभीर हालत में लहूलुहान हरिराम को लोगों ने तत्काल कोटा अस्पताल में भर्ती कराया, लेकिन थोड़ी ही देर बाद उसने दम तोड़ दिया। घटना की जानकारी मिलते ही डाबी थाना पुलिस और डीएसपी हेमंत गौतम घटनास्थल पर पहुंचे और स्थिति का जायजा लिया।

डीएसपी गौतम ने बताया कि प्रथमदृष्टया आरोपी मुकेश गुर्जर द्वारा हरिराम की कुल्हाड़ी से हत्या की पुष्टि हो रही है। पुलिस ने घटनास्थल से सुराग जुटाए हैं। एसपी राजेंद्र कुमार मीणा ने वारदात को लेकर तुरंत एक विशेष टीम का गठन किया है। यह टीम आरोपी की धरपकड़ के लिए लगातार दबिश दे रही है। पुलिस गांव और आसपास के इलाकों में संभावित ठिकानों की तलाश में जुटी हुई है। हरिराम की मौत की खबर फैलते ही गांव में मातम पसर गया। चौहानों की झोपड़ियां गांव में लोग घरों से बाहर निकल आए और हर किसी के चेहरे पर खौफ साफ दिखाई देने लगा। ग्रामीणों ने बताया कि आरोपी मुकेश का स्वभाव पहले से ही झगड़ालू था। कई बार विवादों में उसका नाम सामने आया, लेकिन इतनी क्रूर वारदात को अंजाम देगा, इसकी किसी ने कल्पना नहीं की थी।

नाटक ''गाइड वंस अगेन'' के मंचन ने दर्शकों का मन मोहा

'गाइड वन्स अगेन' का मंचन आर.एन.टी. ऑडिटोरियम में हुआ।

- उदयपुर में लगभग 60 वर्ष पूर्व फिल्माई देवानंद और वहीदा रहमान की फिल्म गाइड ने बॉक्स ऑफिस पर नए कीर्तिमान स्थापित किए थे
- नाटक में मुख्य पात्र कुलदीप धाभाई ने उदयपुर के गाइड राजू की भूमिका निभाकर दर्शकों का दिल जीत लिया

उदयपुर, (कासं)। मौलिक ऑर्गेनाइजेशन ऑफ क्रिएटिव एंड परफॉर्मिंग आर्ट्स एवं जीआर फिनमार्ट के संयुक्त तत्वावधान में प्रस्तुत संगीतमय नाटक "गाइड वंस अगेन" का शानदार मंचन आर.एन.टी. ऑडिटोरियम में हुआ। दोपहर बाद 4.30 बजे शुरू होकर शाम 7 बजे तक चले इस नाट्य प्रस्तुति ने दर्शकों को भावनाओं के सागर में डुबो दिया। नाटक को देखने के लिए इतनी भीड़ उमड़ी कि सभागार खचाखच भर गया।

नाटक में मुख्य पात्र कुलदीप धाभाई ने उदयपुर के गाइड राजू की भूमिका निभाकर दर्शकों का दिल जीत लिया। वहीं यशस्वी श्रीवास्तव ने रूस से उदयपुर आई स्वेतलाना का किरदार संवेदनशीलता से निभाया। कहानी में स्वेतलाना गाइड फिल्म पर शोध करने के लिए उदयपुर आती है और वहीं राजू से मिलती है। दोनों के बीच प्रेम पनपता है और स्वेतलाना राजू को मॉस्को ले जाती है, लेकिन अपनी मातृभूमि और उदयपुर से गहरे प्रेम के कारण राजू वहां ठहर नहीं पाता और लौटकर उदयपुर आ जाता है। यह प्रसंग दर्शकों को गहराई से छू गया और कई क्षणों पर सभागार तालियों की गडगडाहट से गूंज उठा। 'गाइड वन्स अगेन' महज एक प्रेमकथा नहीं बल्कि मानवीय संवेदनाओं और मनोवैज्ञानिक द्वंद्व को भी सशक्त रूप से प्रस्तुत करता है। नाटक ने प्रेम, त्याग और आत्मचेतना जैसे गहन विषयों पर दर्शकों को सोचने पर विवश किया। मंचन में जीवंत संगीत, गीत और संवादों की खूबसूरत प्रस्तुति ने इसे और प्रभावशाली बना दिया।

नाटक के लेखक गौरीकांत शर्मा ने कलाकारों की अदाकारी की खुलकर सराहना की और कहा कि यह प्रस्तुति न केवल मनोरंजन करती है बल्कि दर्शकों के हृदय को भी गहराई से छू जाती है। जीआर फिनमार्ट के गौतम राठौड़ ने कहा कि यह नाटक गाइड फिल्म की परम्परा को नई पीढ़ी के नजरिए प्रस्तुत करता है। मौलिक संस्था के संस्थापक शिवराज सोनवाल ने बताया कि 'गाइड वन्स अगेन' की लोकप्रियता को देखते हुए इसके और भी शो आयोजित किए जाएंगे। 5 अक्टूबर को शिल्पग्राम स्थित दर्पण सभागार में होने वाला मंचन विशेष आकर्षण रहेगा। उन्होंने दर्शकों से अपील की कि वे आगे भी कला और संस्कृति को प्रोत्साहित करने के लिए इसी तरह सक्रिय भागीदारी निभाएं। अंत में दर्शकों ने खड़े होकर तालियों की गडगडाहट से कलाकारों का अभिनंदन किया। 'गाइड वन्स अगेन' की प्रस्तुति ने न केवल उदयपुरवासियों का दिल जीता बल्कि यह साबित कर दिया कि अच्छा रंगमंच आज भी समाज को जोडने और सोचने पर मजबूर करने की शक्ति रखता है। लगभग 60 वर्ष पूर्व उदयपुर में फिल्माई देवानंद और वहीदा रहमान की फिल्म गाइड ने न केवल बॉक्स ऑफिस पर नए कीर्तिमान स्थापित किए थे, बल्कि उदयपुर को पर्यटन के क्षेत्र में नई ऊंचाइयों पर पहुंचा दिया था। यह फिल्म आज भी फिल्म प्रेमियों की दिल में गहराई तक बसी हुई है। फिल्म की कहानी गीत-संगीत और फिल्मांकन अद्भुत थे। 'गाइड वंस अगेन' ने एक बार फिर से उसे फिल्म की याद को ताज किया और रंगमंच की ओर से फीचर फिल्म को अपनी ओर से भावांजलि अर्पित की।

MUNICIPAL COUNCIL LALSOT

NIB No:- NPL/DEV/2025-26/ 3438 Dated: 23-09-2025

NOTICE INVITING BID

NIB No. : NPL/Dev /2025-26/20

Online Bid is invited up-to 24.10.2025 , 06.00 PM for Construction of Drain, Construction of Road and Beautification Related Work under Chief Minister Budget Announcement No.- 219.10.00/2025-26 at Municipal Council Lalsot. Details may be seen in the Bidding Document at our office or the website of State Public Procurement Portal website www.sppp.rajasthan.gov.in and www.eproc.rajasthan.gov.in.

To participate in the bid, bidder has to be:

1. Registered on e-Procurement Portal of Government of Rajasthan www.eproc.rajasthan.gov.in for online e-Bid submission.

UBN No. DLB2526WLOB19554

Commissioner
Municipal council Lalsot

Raj.Samwad/C/25/11010

कार्यालय नगर निगम, उदयपुर (राज.)

क्रमांक :- राजस्व/2025-26/858 दिनांक :- 29/09/2025

अल्पकालीन ई-निविदा आमन्त्रण सूचना संख्या ई-04/2025-26/829 की संशोधित सूचना

कार्य का नाम :— नगर निगम, उदयपुर द्वारा दीपावली मेला 2025 में सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजन हेतु।

नगर निगम, उदयपुर द्वारा जारी अल्पकालीन ई—निविदा आमंत्रण सूचना संख्या—ई—04 / 2025—26 / 829 दिनांक 22.09.2025 UBN No. UNP2526SLOB00091 की संशोधन सूचना (Corrigendum Notice) का अवलोकन इंटरनेट साईट **www.eproc.rajasthan.gov.in** व **www.sppp.rajasthan.gov.in** पर किया जा सकता है। निविदा जमा कराने की अंतिम दिनांक 03.10.2025 समय दोपहर 01:00 बजे तक की जाती है।

आयुक्त
नगर निगम, उदयपुर

राज.संवाद/सी/25/11103

कार्यालय अधीक्षण अभियन्ता एवं परियोजना प्रबंधक वाटरशेड सेल कम डाटा सेन्टर जिला परिषद जालोर

क्रमांक :- एफ ( )/निविदा/2025-26/1925 दिनांक :- 25/09/2025

NOTCE INVITING BID

NIT No. 29/2025-26

Bids for NRM Works Under PMKSY-2.0 project area in Ahore of estimated Value INR 136.27 Lacs are invited from interested bidders Up to 3.00 PM 15/10/2025, Other particulars of the bid may be visited on the procurement portal (https//eproc.rajasthan.gov.in or https://sppp. rajasthan.gov.in/) of the state.

NIT NO.	Work Name & Block	NIB No.	UBN No.
NIT-29/2025-25	Khadin Farm Pond and Tanka (Ahore)	WSC2526A0779	WSC2526WSRC01352

SE & PMWCDC,
ZILA PARISHAD
JALORE

Raj.Samwad/C/25/11083

OFFICE OF EXECUTIVE ENGINEER FIELD MECH. DIVISION-II IGNP BIKANER

e-mail:- xenfmd2@rajasthan.gov.in Tel:0151-2226431

No: 812 Date: 23.09.2025

Notice Inviting Bid

Bids for (1) Rewinding of 2 Nos (700 KW) HT induction motor at PS-III and PS IV. Servicing & Overhauling 3 Nos. (700 KW) of HT induction Motor at PS-III and PS-IV, 2 Nos. (275 KW) of HT induction Motor at PS-II and 2 Nos. (200 KW) of HT induction Motor at PS-I. at Dr. Karni Singh Lift Scheme during year 2025-26. (approx. value Rs. 64.44 lacs)
(2) Supply, Replacement, Trial run and Commissioning of 2 Nos 415 V LT panel at PS-III and PS-IV. Supply, installation
and testing of CCTV camera at PS-I to PS-VI. Supply, installation and testing of Inverter at PS-I and PS-V. Supply of spare parts for Vertical Turbine pump, 6.6 KV HT panel, 6.6 KV HT motor, 415 V LT panel, transformer, cranes. Rolling Shutter Gates, Supply, installation and testing of exhaust fan, street light, switch, MCB, fan etc at Dr. Karni Singh Lift Scheme during year 2025-26. (approx. value Rs. 68.12 lacs)
(3) Major servicing and overhauling of VT pump at PS-I to PS-II (2.81 cumec) and PS-III to PS-IV (3.14 cumec). Repairing of E.O.T Crane at PS-I to VI. at Dr. Karni Singh Lift Scheme during year 2025-26. (approx. value Rs. 22.18 lacs)
(4) Supply of spares part for VT pump, 415 V LT panel and 415V LT induction motor. Supply, installation and testing of CCTV camera at PS-I to PS-II. Supply, installation and testing of Inverter at PS-I. Supply, installation and testing of exhaust fan, street light, switch, MCB, fan etc. Servicing and overhauling of 4 Nos (55 KW) LT induction Motor at PS-I to PS-II. Repairing and overhauling of 2 Nos (55KW) VT pump with spares at PS-I to PS-II for Veer Tejaji (Bangarsar) Lift Scheme for the year 2025-26. (approx. value Rs.35.70 lacs)
are invited from eligible and interested bidders upto 01:00 PM dated 03.10.2025. Other particulars of the bids may be visited on the procurement portal (http://eproc.rajasthan.gov.in, http://sppp.raj.nic.in) of the state and departmental website.

NIB No: IGB2526A0071

UBN: IGB2526WSOB00284, UBN: IGB2526WSOB00285, UBN: IGB2526WSOB00286, UBN: IGB2526WSOB00287

Executive Engineer
Field Mechanical Dn-II
IGNP Bikaner

DIPR/C/14293/2025

'राज्य सरकार की घोषणाओं को ज़मीन पर उतारना हमारी कार्य संस्कृति है'

मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने 171 करोड़ रुपये के विभिन्न विकास कार्यों का लोकार्पण और शिलान्यास किया

जयपुर। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने कहा है कि राजस्थान सरकार की कार्य संस्कृति का मूल आधार घोषणाओं को समयबद्ध रूप से धरातल पर उतारना है। उन्होंने बताया कि गत दो बजटों की 90 प्रतिशत घोषणाओं का सफल क्रियान्वयन राज्य सरकार ने सुनिश्चित किया है, जिससे प्रदेश में तेज़ी से विकास हो रहा है।

मुख्यमंत्री सोमवार को सांगानेर स्टेडियम में आयोजित लोकार्पण एवं शिलान्यास समारोह में बोल रहे थे। इस अवसर पर उन्होंने लगभग 171

- **मुख्यमंत्री ने परियोजना स्थल पर मॉडल का अवलोकन कर अधिकारियों को निर्देश दिए कि निर्माण कार्य समयसीमा में गुणवत्तापूर्ण ढंग से पूर्ण किया जाए**

करोड़ रुपये के विभिन्न विकास कार्यों का लोकार्पण और शिलान्यास किया। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में केंद्र और राज्य की डबल इंजन सरकार अंत्योदय के संकल्प के साथ प्रदेश को समग्र रूप से विकसित करने में जुटी हुई है।

मुख्यमंत्री ने बताया कि 17 सितंबर से 2 अक्टूबर तक राज्यभर में चल रहे 'सेवा पखवाड़ा' के अंतर्गत ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों में सेवा शिविर लगाए जा रहे हैं, जिससे जनोपयोगी योजनाओं को त्वरित गति से आमजन तक पहुँचाया जा रहा है।

मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने इस अवसर पर सांगानेर क्षेत्र के लिए कई

मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने त्रिवेणी नगर आरओबी से गुर्जर की थड़ी तक बनने वाले एलिवेटेड रोड का शिलान्यास किया।

बड़ी सौगातों की घोषणा की। उन्होंने बताया कि सांगानेर फ्लाईओवर से चौरड़िया पेट्रोल पंप तक एलीवेटेड रोड, मानसरोवर में शहरी सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र, मिनी सचिवालय तथा खुली जेल के पास एक नए चिकित्सालय का निर्माण किया जाएगा। उन्होंने यह भी कहा कि स्थानीय उत्पादों को बढ़ावा देने के लिए यूनिटी मॉल का निर्माण किया जा रहा है, जिसके लिए 15,187 वर्ग मीटर भूमि आवंटित की गई है। यह मॉल स्थानीय कारीगरों और उद्यिमयों को एक व्यापक मंच उपलब्ध कराएगा।

मुख्यमंत्री ने मेट्रो परियोजना के दूसरे चरण की भी जानकारी दी, जिसके तहत 12,000 करोड़ रुपये की लागत से सीतापुरा औद्योगिक क्षेत्र से विद्याधर नगर तक मेट्रो का विस्तार किया जाएगा। यह चरण दो प्रमुख औद्योगिक क्षेत्रों को जोड़ने में मदद करेगा। साथ ही, उन्होंने प्रतापनगर के कोचिंग हब में आईआईटी जोधपुर के कैंपस की स्थापना की भी घोषणा की।

कार्यक्रम में नगरीय विकास मंत्री झाबर सिंह खर्रा, राज्य वित्त आयोग के अध्यक्ष अरुण चतुर्वेदी, सांसद मंजू शर्मा, जयपुर ग्रेटर महापौर सौम्या गुर्जर, उपमहापौर पुनीत कर्णावट सहित अनेक जनप्रतिनिधि एवं अधिकारी उपस्थित रहे। इस दौरान मुख्यमंत्री ने 'सांगानेर - एक सम्पूर्ण परिक्रमा' पुस्तिका का विमोचन भी किया।

इसी क्रम में मुख्यमंत्री ने त्रिवेणी नगर आरओबी से गुर्जर की थड़ी तक बनने वाले एलिवेटेड रोड का शिलान्यास भी किया। यह परियोजना जयपुर के यातायात व्यवस्था को नया आयाम देगी।

गोपालपुरा बाईपास, 10बी, न्यू सांगानेर रोड, रिद्धि-सिद्धि और गुर्जर की थड़ी जैसे भीड़भाड़ वाले क्षेत्रों को राहत मिलेगी। साथ ही मानसरोवर, अजमेर रोड और मालवीय नगर के लिए कनेक्टिविटी में भी सुधार होगा।

इस एलिवेटेड रोड की कुल लंबाई 2160 मीटर और चौड़ाई 17.20 मीटर होगी। 218 करोड़ रुपये की लागत से बनने वाली इस सड़क में 88 पिलर्स होंगे। महेश नगर जंक्शन पर 20 मीटर लंबा अंडरपास प्रस्तावित है। सड़क के दोनों ओर सर्विस रोड, फुटपाथ, यूटिलिटी कॉरिडोर और ड्रेनेज सिस्टम भी बनाया जाएगा।

मुख्यमंत्री ने परियोजना स्थल पर मॉडल का अवलोकन कर अधिकारियों को निर्देश दिए कि निर्माण कार्य निर्धारित समयसीमा में गुणवत्तापूर्ण ढंग से पूर्ण किया जाए।

इन घोषणाओं और शिलान्यास कार्यक्रमों से स्पष्ट है कि राज्य सरकार प्रदेश के समग्र और संतुलित विकास के लिए प्रतिबद्ध है तथा जनता से किए गए वादों को धरातल पर उतारने के लिए तीव्र गति से कार्य कर रही है।

उपमुख्यमंत्री ने मुरलीपुरा में शहरी सेवा शिविर का निरीक्षण किया

जयपुर। उपमुख्यमंत्री दिया कुमारी ने सोमवार को जयपुर के मुरलीपुरा जोन कार्यालय में आयोजित शहरी सेवा शिविर का निरीक्षण किया। उन्होंने शिविर स्थल पर विभिन्न विभागों की ओर से संचालित सेवाओं का अवलोकन किया और अधिकारियों से शिविर की कार्यप्रणाली की जानकारी ली। साथ ही, उन्होंने वहां मौजूद नागरिकों से भी संवाद किया और उनकी समस्याएं तथा अनुभव सुने।

निरीक्षण के दौरान उपमुख्यमंत्री ने कहा कि राज्य सरकार की प्राथमिकता यह सुनिश्चित करना है कि आमजन को सरकारी योजनाओं और सेवाओं का सीधा लाभ मिले और उन्हें कार्यालयों के चक्कर न काटने पड़ें। उन्होंने कहा कि ऐसे सेवा शिविर सरकार की सेवा भावना और आमजन

- **उपमुख्यमंत्री दिया कुमारी ने नागरिकों से संवाद कर जाना सेवाओं का लाभ**

के प्रति जवाबदेही को दर्शाते हैं। दिया कुमारी ने कहा, शहरी सेवा शिविरों के माध्यम से सरकार जनता तक सीधे पहुंच रही है।

वर्षों से परेशान लोग जिनकी समस्याएं लंबित थीं, उनका समाधान अब मौके पर ही किया जा रहा है। यह पहल एक प्रभावी और संवेदनशील प्रशासन की दिशा में महत्वपूर्ण कदम है। शिविर में नागरिकों को जन्म एवं मृत्यु प्रमाण पत्र, वृद्धावस्था और विधवा पेंशन, निशुल्क बिजली-पानी योजना, पट्टों का वितरण, प्रधानमंत्री आवास योजना (शहरी 1.0 और 2.0), खाद्य सुरक्षा योजना और स्वनिधि योजना सहित अनेक सेवाएं एक ही स्थान पर प्रदान की गईं। इससे नागरिकों को विभिन्न कार्यालयों के चक्कर लगाने की बजाय एक ही स्थान पर सभी सुविधाएं उपलब्ध हो सकीं।

कार्यक्रम के दौरान उपमुख्यमंत्री ने स्वदेशी वस्तुओं को अपनाने का भी आग्रह किया और नागरिकों से विदेशी उत्पादों के स्थान पर स्थानीय उत्पादों को प्राथमिकता देने की अपील की। उन्होंने कहा कि स्वदेशी वस्तुओं के उपयोग से न केवल देश की अर्थव्यवस्था को मजबूती मिलती है, बल्कि स्थानीय स्तर पर रोजगार के अवसर भी सृजित होते हैं। सरकार की यह पहल जमीनी स्तर पर प्रभावशाली सिद्ध हो रही है।

मुख्यमंत्री को दिया 251 कुंडीय गायत्री महायज्ञ का आमंत्रण

जयपुर। गायत्री परिवार राजस्थान से समन्वयक ओम प्रकाश अग्रवाल की अगुवाई गायत्री परिवार के प्रतिनिधिमंडल ने सोमवार को मुख्यमंत्री निवास पर मुख्यमंत्री भजन लाल शर्मा से मिलकर भरतपुर के नदबई में 24 से 27 दिसंबर तक होने वाले 251 कुंडीय राष्ट्र जागरण गायत्री महायज्ञ के लिए आमंत्रण दिया। मुख्यमंत्री ने आयोजन में आने की सहमति दी।

गायत्री परिवार राजस्थान से समन्वयक ओम प्रकाश अग्रवाल, गायत्री शक्तिपीठ पुष्कर से श्याम सिंह, शांतिकुंज प्रतिनिधि रवि इंदौरिया, नंदराम शर्मा, दुलीचंद, गायत्री परिवार नदबई के मुख्य ट्रस्टी राधे लाल गुप्ता ने मुख्यमंत्री को मां गायत्री माता की चादर ओढ़ाकर अभिनंदन किया।

पुरस्कार वितरण समारोह का समापन

जयपुर। राजभाषा हिन्दी को बढ़ावा देने एवं रोजमर्रा के सरकारी कार्यों में हिन्दी का अधिकाधिक प्रयोग करने की दृष्टि से हर वर्ष की भांति इस वर्ष भी बीएसएनएल के जयपुर स्थित सभी कार्यालयों में हिन्दी पखवाड़ा संयुक्त रूप से कार्यालय प्रधान महाप्रबंधक दूरसंचार जिला जयपुर में मनाया गया। आज हिन्दी पखवाड़े का समापन समारोह आयोजित किया गया इस अवसर पर कार्यालय प्रधान महाप्रबंधक दूरसंचार जिला जयपुर के सभागार में एक कवि सम्मेलन का आयोजन किया गया, जिसमें श्रद्धा आढ़ा पी के मस्त, किशोर पारीक ने अपनी कविताओं से श्रोताओं को गुदगुदाया। कार्यक्रम के अध्यक्ष मुख्य महाप्रबंधक विक्रम मालवीय ने अपने उद्बोधन में हिन्दी भाषा की प्रासंगिकता व व्यापकता पर प्रकाश डाला तथा हिन्दी भाषा में प्रयोग किये जा रहे नये वैज्ञानिक टूल्स के अधिकाधिक उपयोग करने की सलाह दी ताकि काम में सहजता, सरलता और गति बने रहे।

पुलिस महानिदेशक ने रेंज स्तर के अधिकारियों के साथ समीक्षा बैठक की

जयपुर । राजस्थान में अपराध नियंत्रण और कानून व्यवस्था की स्थिति को सुदृढ़ करने के लिए पुलिस महानिदेशक राजीव कुमार शर्मा ने सोमवार को पुलिस मुख्यालय में रेंज स्तर के अधिकारियों, रेंज प्रभारियों एवम पुलिस मुख्यालय के वरिष्ठ अधिकारियों के साथ एक व्यापक समीक्षा बैठक की। सुबह 11:30 बजे शुरू हुई यह बैठक देर शाम तक चली, जिसमें प्रदेश के सभी रेंज, जिलों और कमिश्नरेट के समस्त पुलिस कार्यों, गतिविधियों व कमियों का गहनता से आंकलन किया गया।

बैठक के शुरुआत में अजमेर, बीकानेर, भरतपुर, जयपुर, जोधपुर, कोटा और उदयपुर रेंज के साथ-साथ जयपुर और जोधपुर कमिश्नरेट की प्रगति रिपोर्ट तथा पुलिस कार्यकलापों पर विस्तार से चर्चा हुई। सभी ने अपने क्षेत्र में दर्ज मामलों, लंबित जांचों की स्थिति और अपराध नियंत्रण के लिए अपनाई गई नई रणनीतियों का ब्यौरा डीजीपी को

- **बैठक में अजमेर, बीकानेर, भरतपुर, जयपुर, जोधपुर, कोटा और उदयपुर रेंज के साथ-साथ जयपुर और जोधपुर कमिश्नरेट की प्रगति रिपोर्ट तथा पुलिस कार्यकलापों पर विस्तार से चर्चा हुई**

सौंपा। डीजीपी शर्मा ने कहा कि हमारी प्राथमिकता सिर्फ अपराधों को कम करने पर ही नहीं बल्कि केस निस्तारण की गुणवत्ता और आमजन के प्रति संवेदनशील व्यवहार और उनकी समस्याओं के निस्तारण पर भी होनी चाहिए।

दोपहर पश्चात बैठक में आधुनिक पुलिसिंग मानक प्रक्रियाओं और तकनीकी समावेशन पर विस्तार से चर्चा हुई। अतिरिक्त महानिदेशक पुलिस अपराध दिनेश एमएन ने स्मार्ट पुलिसिंग के प्रभाव पर बात की और बताया कि कैसे आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस का उपयोग दोषमुक्ति के फैसलों के विश्लेषण के लिए किया जाएगा ताकि अनुसंधान में रह जाने वाली कमियों का पता लगाया जा सके और इन कमियां को दूर करके अनुसंधान की गुणवत्ता बढ़ाई जा सके।

अतिरिक्त महानिदेशक पुलिस ट्रैफिक लता मनोज ने राज्य की यातायात व्यवस्था एवम उनके सुधार पर प्रस्तुति दी तथा ट्रैफिक नियमों की पालना करवाने पर जोर दिया जिससे दुर्घटनाओं व दुर्घटनाओं से मृत्यु में कमी आ सके। तत्पश्चात जयपुर रेंज आईजी राहुल प्रकाश ने लेन ड्राइविंग अनुशासन लागू करवाने के प्रयासों को साझा किया।

समीक्षा बैठक में साइबर क्राइम ब्रांच ने बढ़ते डिजिटल खतरों से निपटने की रणनीति, न्यू क्रिमिनल लॉ के क्रियान्वयन और राष्ट्रीय डेटा प्रणालियों के साथ पुलिसिंग को जोड़ने की आवश्यकता पर प्रकाश डाला गया।

देवनानी ने सेवानिवृत्त कर्मचारियों को दी भावभीनी विदाई

जयपुर। विधान सभा अध्यक्षवासुदेव देवनानीने कहा है कि राज्य सेवा में कार्यरत अधिकारियों और कर्मचारियों कोगोपनीयता और निष्ठाकी भावना के साथ कार्य करना चाहिए। उन्होंने कहा कि लोकतंत्र के मंदिर मानी जाने वाली विधान सभा की गरिमा को बनाए रखना

- **सेवानिवृत्त कार्मिकों कोसाफा पहनाकर, शॉल ओढ़ाकर और स्मृति चिन्ह भेंट कर सम्मानित किया और उनके उत्कृष्ट सेवाकाल के लिए शुभकामनाएं दीं**

हम सभी की सामूहिक जिम्मेदारी है। देवनानी सोमवार को विधान सभा केउप सचिव प्रवीण कुमार मिश्रा और फोटो कॉपीयर सुरेश चन्द्र सैन के सेवानिवृत्ति समारोह को संबोधित कर रहे थे। इस अवसर पर उन्होंने सेवानिवृत्त कार्मिकों कोसाफा पहनाकर, शॉल ओढ़ाकर और स्मृति चिन्ह भेंट कर सम्मानित किया और उनके उत्कृष्ट सेवाकाल के लिए

देवनानी विधान सभा के उप सचिव प्रवीण कुमार मिश्रा व फोटो कॉपीयर सुरेश चन्द्र सैन के सेवानिवृत्ति समारोह को संबोधित किया।

शुभकामनाएं दीं। अध्यक्ष ने कहा,"जो कर्मी समय पालन, ईमानदारी और संस्था के प्रति समर्पण को अपने स्वभाव में ढालते हैं, वे ही संस्था को ऊंचाइयों तक पहुंचाते हैं। राजस्थान विधान सभा देश की सर्वश्रेष्ठ विधान सभाओं में से एक है और इसे श्रेष्ठ बनाए रखने में यहां के प्रत्येक कर्मचारी का योगदान महत्वपूर्ण है।

देवनानी ने कहा कि विधान सभा में कार्य करना एकसौभाग्यहै, जहां विधायकों के साथ सीधा संवाद स्थापित होता है। उन्होंने कर्मचारियों सेसकारात्मक दृष्टिकोण और सहभागिताके साथ कार्य करने का आव्हान किया, जिससे संस्था के हित में सामूहिक प्रयास संभव हो सके। समारोह में विधान सभा के प्रमुख सचिव भारत भूषण शर्मा, विशिष्ट सहायक के. के. शर्मा, वरिष्ठ उप सचिव पुरुषोत्तम शर्मा, कर्मचारी सहकारी साख समिति के अध्यक्ष रवि जैन, सहित अनेक अधिकारी और कर्मचारी उपस्थित रहे। कार्यक्रम के अंत में देवनानी ने सभी उपस्थितजनों को नवरात्रा और विजय दशमी की शुभकामनाएं भी दीं।

बदमाशों ने शॉप में घुसकर दुकानदार से की मारपीट

जयपुर। भट्टा बस्ती थाना इलाके में कुछ बदमाशों ने एक जुट होकर मोबाइल शॉप के मालिक से जमकर मारपीट करते हुए दुकान में तोड़फोड़ कर दी। मौके पर भीड़ जमा होती देख बदमाश मौके से फरार हो गए। सूचना पर मौके पर पहुंची पुलिस ने पीड़ित के बयानों व सीसीटीवी फुटेज के आधार पर मारपीट का मामला दर्ज कर आरोपियों की तलाश शुरु कर दी है।

पुलिस ने बताया कि थाना इलाके में स्थित संजय नगर निवासी समीर अहमद (26) ने मामला दर्ज कराया है कि शास्त्री नगर हाउसिंग बोर्ड में उसकी गुलाब कम्युनिकेशन के नाम से मोबाइल की दुकान है। रविवार दोपहर को वह दुकान पर काम कर रहा था। तभी पड़ोस में रहने वाले मोहम्मद आरीफ, अदनान व अकबर अपने साथियों के साथ शॉप पर आकर गाली-गलौच करने लगे। डंडे व सरिए से लैस होकर आए हमलावरों ने शॉप के बाहर लगे बोर्ड व पोस्टर फाड़ दिए।समीर ने जब इस बात का विरोध किया तो आरोपियों ने पड़ोसी कपड़े की दुकान में ले जाकर उसके साथ जमकर मारपीट की। मारपीट के दौरान पड़ोसी की दुकान में काफी नुकसान हुआ।

उपमुख्यमंत्री दिया कुमारी ने जमवाय माता के दर्शन किए

उपमुख्यमंत्री दिया कुमारी ने माँ जमवाय माता से प्रदेशवासियों की सुख-समृद्धि, शांति और खुशहाली के लिए प्रार्थना की।

जयपुर। उपमुख्यमंत्री दिया कुमारी ने आज जमवारामगढ़ स्थित प्रसिद्ध जमवाय माता मंदिरपहुंचकर विधिवत पूजा-अर्चना की। उन्होंने माँ जमवाय माता से प्रदेशवासियों की सुख-समृद्धि, शांति और खुशहाली के लिए प्रार्थना की। नवरात्रि के पावन अवसर पर मंदिर में दर्शन करने के बाद उपमुख्यमंत्री ने कहा किमाँ जमवाय माता की कृपा से प्रदेश में सदैव सुख, शांति और समृद्धि बनी रहे। माँ सबकी मनोकामनाएं पूर्ण करें।

इस अवसर पर उन्होंने आमजन कोनवरात्रि की हार्दिक शुभकामनाएंदेते हुए सभी से सामाजिक समरसता एवं आध्यात्मिक एकता को बनाए रखने की अपील की।

श्रद्धालुओं की सुविधा को ध्यान में रखते हुए उपमुख्यमंत्री ने मौके पर उपस्थित अधिकारियों को निर्देश दिए कि मंदिर में दर्शन के लिए आने वाले श्रद्धालुओं को किसी प्रकार की असुविधा न हो।

साथ ही, उन्होंने मंदिर परिसर के आसपासउचित पार्किंग व्यवस्था सुनिश्चित करनेके भी निर्देश दिए। मंदिर परिसर में उपमुख्यमंत्री के साथ स्थानीय जनप्रतिनिधि, प्रशासनिक अधिकारी तथा श्रद्धालु बड़ी संख्या में उपस्थित रहे।

सार-समाचार

जावेद सलीम को सचिव के पद पर नियुक्त किया

जयपुर । गोविन्द सिंह डोटासरा, अध्यक्ष, राजस्थान प्रदेश कांग्रेस कमेटी, राजस्थान के अनुमोदन उपरान्त पर्यावरण संरक्षण प्रकोष्ठ की नव प्रदेश कार्यकारिणी एवं जिलाध्यक्षों को पदों पर तत्काल प्रभाव से नियुक्त किया गया हैं, कार्यकारिणी में जावेद सलीम को सचिव के पद पर नियुक्त किया।

दो बदमाश गिरफ्तार

जयपुर। कोटखावदा थाना पुलिस ने दो अलग-अलग मामलों में दो बदमाशों को गिरफ्तार कर उनके कब्जे से दो टोपीदार बंदूक बरामद की है। पुलिस दोनो बदमाशों से गहनता से पूछताछ करने में जुटी है। पुलिस उपायुक्त रार्षि राज ने बताया कि जयपुर दक्षिण इलाके में वांछित बदमाशों की धरपकड़ के लिए विशेष अभियान चलाया गया। जिसमें विशेष टीम ने तकनीकी सहायता व मुखबिर की सूचना पर आरोपी युवराज राजवंश (19) पुत्र चेतन कुमार छाडी, शिवपुरी कॉलोनी कोटखावदा व सुजल पाटीदार (21) पुत्र सोनू पाटीदार नैनुपुरा मोंड ,कोटखावदा निवासी को अलग-अलग टोपीदार बंदूक के साथ अवैध फायर आर्मस के तहत गिरफ्तार कर लिया। पुलिस पूछताछ में सामने आया है कि दोनो बदमाशों ने अपने मौज-शौक के लिए छोटे जंगली जानवरो तीतर,बटेर के शिकार करने के लिए खरीदी थी।

दुपहिया वाहन चोर गिरफ्तार

जयपुर। ट्रांसपोर्ट नगर थाना पुलिस ने दुपहिया वाहन चोरी करने वाले शातिर वाहन चोर को गिरफ्तार कर बड़ी सफलता हासिल की है। पुलिस ने आरोपी की निशानदेही पर चोरी की बाइक भी बरामद की है। पुलिस गिरफ्तार आरोपी से अन्य वाहन चोरी की वारदात और गिरोंह के अन्य लोगों के बारे में गहनता से पूछताछ करने में जुटी है। पुलिस ने संभावना जताई है कि आरोपी से अन्य वाहन चोरी की वारदता खुल सकती है। पुलिस उपायुक्त जयपुर पूर्व संजीव नैन ने बताया कि इलाके में बढ़ती वाहन चोरी और नकबजनी की वारदातों पर अकुंश लगाने के लिए सघन गश्त करने के सख्त निर्देश दिए गए थे। मोहम्मद अमन (21) पुत्र मोहम्मद अयुब ,करीम नगर विस्तार जगतपुरा रोड, खोह नागोरियान को दस्तयाब कर कर गहनता से पूछताछ की। पुलिस पूछताछ में आयोनी ने आजाद नगर मस्जिद के बार से बाइक चोरी करना स्वीकार कर लिया।

सहायक पुलिस उपनिरीक्षक चालीस हजार रुपये की रिश्वत लेते गिरफ्तार

जयपुर। भ्रष्टाचार निरोधक ब्यूरो(एसीबी) की भरतपुर टीम ने सोमवार को कार्रवाई करते हुए पुलिस थाना भुसावर जिला भरतपुर में पदस्थापित सहायक पुलिस उप निरीक्षक (एएसआई) उदयसिंह को परिवादी के रिश्तेदार के घर पर चालीस हजार रुपये की रिश्वत लेते गिरफ्तार किया गया है। भ्रष्टाचार निरोधक ब्यूरो की अतिरिक्त पुलिस महानिदेशक स्मिता श्रीवास्तव ने बताया कि एसीबी भरतपुर टीम को परिवादी ने शिकायत दी कि उसकी और उसके परिवारजनों की जमीन के विवाद के कारण एसडीएम भुसावर द्वारा जमीन को राज्य सरकार के अधीन लेने के लिए पुलिस थाना भुसावर से रिपोर्ट चाही गई थी। उदयसिंह ने उक्त रिपोर्ट को परिवादी के पक्ष में तैयार कर देने की एवज में चालीस हजार रुपये की रिश्वत की मांग की। जिस पर कार्यवाही करते हुए सहायक पुलिस उप निरीक्षक (एएसआई) उदय सिंह को चालीस हजार रुपये की रिश्वत लेते पकड़ा है।

उप मुख्यमंत्री ने किया पुस्तक का विमोचन

जयपुर। उप मुख्यमंत्री दिया कुमारी ने सोमवार को सड़क सुरक्षा नियमों से संबंधित' सड़क सुरक्षा व्यापक दृष्टि ' शीर्षक पुस्तक का विमोचन किया। इस पुस्तक को पीडब्ल्यूडी के मुख्य अभियंता (गुण नियंत्रण)जसवंत खत्री के निर्देशन में अतिरिक्त मुख्य अभियंता कपिल वर्मा द्वारा सम्पादित किया गया है उप मुख्यमंत्री ने इस अवसर पर पुस्तक के संपादक मंडल को बधाई देते हुए कहा की सड़क सुरक्षा के प्रति जागरूकता लाने में यह पुस्तक बहुत उपयोगी साबित होगी । इस अवसर पर उन्होंने सुरक्षित सड़क मार्ग (सुसमा) अभियान के दौरान एकत्रित डेटा, अनुभवों एवं फीडबैक आधार पर संकलित की गई पुस्तक का भी विमोचन किया ।

जीएसटी में कमी से 600 रुपए तक सस्ते हुए सरस उत्पाद : डेयरी मंत्री

जयपुर। केंद्र सरकार द्वारा जीएसटी की दरों में कटौती करने से अब उपभोक्ताओं को सरस के उत्पाद भी सस्ती दरों पर मिलने लगे हैं। यह बात डेयरी मंत्री जोराराम कुमावत ने पत्रकारों से बातचीत के दौरान कही। जयपुर डेयरी द्वारा सचिवालय परिसर में

- **प्रबंध संचालक श्रुति भारद्वाज ने जीएसटी बचत उत्सव पोस्टर का विमोचन कर मंत्री कुमावत ने दीवार पर चस्पा किया**

स्थापित सचिवालय सरस पार्लर का भव्य उद्घाटन राजस्थान सरकार के पशुपालन, गोपालन, डेयरी एवं देवस्थान विभाग के कैबिनेट मंत्री जोराराम कुमावत ने फीता काटकर किया।

इस दौरान उन्होंने कहा कि जहां पहले ट्रेटा पैक दूध व पनीर पर जीएसटी 5 प्रतिशत लगती थी, अब इसे जीएसटी से मुक्त कर दिया गया है। इसके अलावा घी, बटर, फ्लैवर्ड मिल्क पर जीएसटी 12 प्रतिशत से

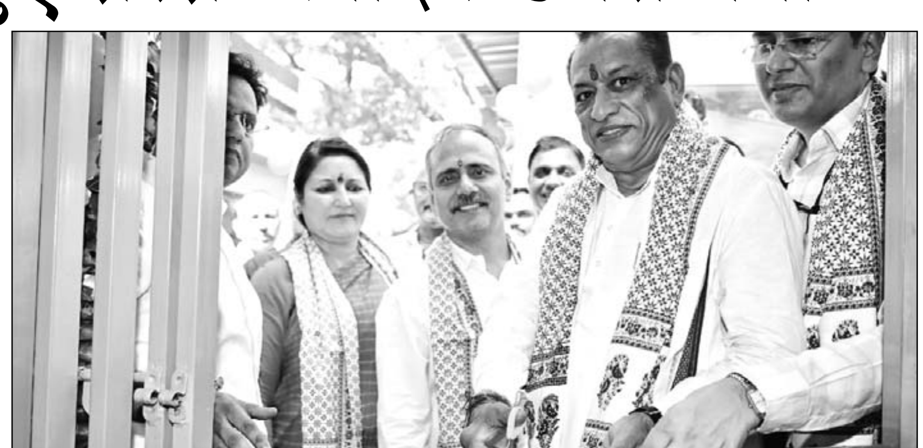

जोराराम कुमावत ने सचिवालय सरस पार्लर का उद्घाटन किया ।

घटाकर 5 प्रतिशत कर दी गई, जिससे अब 15 किलो सरस घी का टीन जहां 600 रुपए सस्ता हो गया है, वहीं, फ्लैवर्ड मिल्क तीन रुपए, टेबल बटर 100 ग्राम चार रुपए, टेबल बटर 500 ग्राम 18 रुपए, पनीर 200 ग्राम तीन रुपए तथा एक किलो 18 रुपए तक सस्ता मिलने लगा है। ऐसा होने से सरस के उत्पादों की बिक्री में बढोतरी होगी, साथ ही दीपावली पर ग्राहकों पर उच्च क्वालिटी के साथ-साथ सरस के उत्पाद सस्ते भी मिल सकेंगे।

इस दौरान मुख्य अतिथि जोराराम कुमावत व विशिष्ठ अतिथि के रूप में मौजूद डॉ. कृष्णकान्त पाठक, शासन सचिव कार्मिक विभाग, डॉ. समित शर्मा शासन सचिव पशुपालन मत्स्य एवं गोपालन विभाग तथा राजस्थान कोऑपरेटिव डेयरी फेडरेशन की प्रशासक एवं प्रबंध संचालक श्रुति भारद्वाज ने जीएसटी बचत उत्सव पोस्टर का विमोचन कर मंत्री कुमावत ने दीवार पर चस्पा किया।

रेंजर को निलंबन अवधि का वेतन व अन्य परिलाभ देने का निर्देश

जयपुर । राजस्थान हाईकोर्ट ने वन विभाग में कार्यरत रहे रेंजर को उसकी निलंबित अवधि का वेतन व अन्य परिलाभ देने का निर्देश दिया है। वहीं राज्य सरकार के 10 अप्रेल 2006 के उस आदेश को मनमाना करार देते हुए रद्द कर दिया जिसमें बिना जांच किए ही कर्मचारी का वेतन व परिलाभ रोक लिए थे।

जस्टिस आनंद शर्मा ने यह आदेश रूपसिंह हरसाना की याचिका पर दिया। अदालत ने कहा कि राजस्थान सर्विस रूल्स के नियमों का प्रावधान केवल उन्हीं मामलों में लागू होता है, जहां विभागीय जांच पूरी होने के बाद कर्मचारी को दोषी ठहराया गया हो।जबकि इस मामले में जांच लंबित रहने के दौरान ही याचिकाकर्ता को अनिवार्य सेवानिवृत्ति दी है। ऐसे में राज्य सरकार का प्रार्थी के वेतन व अन्य परिलाभ रोकने का आदेश गलत है।

याचिका में अधिवक्ता विजय पाठक ने बताया कि प्रार्थी के खिलाफ विभाग ने अनुशासनात्मक कार्रवाई के चलते चार्जशीट जारी की। उसे 22 जुलाई 1996 से 13 मई 1997 तक निलंबित रखा गया। वहीं जांच के दौरान 17 जून 2000 को राजस्थान

- **राजस्थान हाईकोर्ट ने वन विभाग में कार्यरत रहे रेंजर को उसकी निलंबित अवधि का वेतन व अन्य परिलाभ देने का निर्देश दिया**

सिविल सेवा (पेंशन) नियम, 1996 की धारा 53(1) के तहत उसे अनिवार्य सेवानिवृत्ति दे दी गई। वहीं बाद में विभागीय जांच बंद कर दी गई और प्रधान मुख्य वन संरक्षक ने प्रमाणपत्र जारी कर दिया कि उसके खिलाफ कोई जांच लंबित नहीं है, लेकिन फिर भी राज्य सरकार ने 10 अप्रैल 2006 के आदेश से उसे केवल निर्वाह भत्ता देने की बात कही और बाकी वेतन व लाभ रोक दिए।

इसे हाईकोर्ट में चुनौती देते हुए कहा कि जब प्रार्थी के खिलाफ चार्जशीट वापस ले ली है तो इस स्थिति में सरकार के पास निलंबित अवधि का वेतन रोकने का कोई अधिकार नहीं था। इसके विरोध में राज्य सरकार ने कहा कि उसे अनिवार्य सेवानिवृत्ति दी थी, इसलिए वे वेतन व परिलाभ प्राप्त करने का अधिकारी नहीं है।

दोवड़ा थाने में पुलिस हिरासत में युवक की तबीयत बिगड़ने का मामला

युवक की मौत की अफवाह से आक्रोशित भीड़ ने डीएसपी की कार पर पथराव किया

माहौल तनावपूर्ण होने से डूंगरपुर जिले के सभी थानों की पुलिस दोवड़ा में तैनात

डूंगरपुर, (निसं)। दोवड़ा थाने में चोरी के आरोप में पकड़े गए आरोपी की तबीयत खराब होने के दूसरे दिन इलाज के दौरान मौत की अफवाह उड़ी। बीएपी और उसके समर्थक दोवड़ा थाने के पास ही तिराहे पर इकट्ठे हो गए। लोगों ने दो बार जाम लगाया। पुलिस ने लोगों से समझाइश कर जाम खुलवाया। वहीं, सराडा से ड्यूटी पर आए डीएसपी की कार को लोगों ने रोककर पथराव कर दिया। कार का साइड ग्लास भी खींचकर तोड़ दिया। पथराव में कार के शीशे फूट गए।

जानकारी के अनुसार दोवड़ा थाना पुलिस ने देवसोमनाथ कलारिया निवासी दिलीप अहारी को शुक्रवार को अलसुबह डूंगरपुर शहर में उसकी बुआ के घर से चोरी के एक मामले में पकड़ा था। उसके बाद पुलिस उसे लेकर थाने आई। जहां पुलिस ने उससे पूछताछ शुरू की। इस दौरान दिलीप की तबीयत बिगड़ गई। पुलिस ने उसे जिला अस्पताल में लाकर भर्ती करवाया। परिजनों को पता चलने पर परिजन व गांव के लोग जिला अस्पताल पहुंचे और हंगामा कर दिया था। युवक की तबीयत खराब होने और उसे उदयपुर रेफर कर दिया था। जहां सोमवार को इलाज के दौरान युवक की मौत की अफवाह पर लोग आक्रोशित हो गए। परिवार के लोग ओर बीएपी समर्थक भी थाने पहुंच गए।

युवक की मौत की अफवाह के बाद लोगों ने जाम लगा दिया।

लोगों ने सराडा पुलिस उप अधीक्षक की गाड़ी पर पथराव कर दिया।

लोगों ने पुलिस पर युवक से मारपीट का आरोप लगाया और दोवड़ा थाने के पास ही डूंगरपुर, पुनाली, फ्लोज रोड पर तिराहे पर जाम लगा दिया। पुलिस ने समझाइश पर उन्हें हटाया। इस बीच सराडा से ड्यूटी पर आए डीएसपी चांदमल सिंगाडयि अपनी सरकारी कार से थाने की ओर जा रहे थे। इसी दौरान कुछ बदमाश युवकों ने उनकी कार रोक ली। पीछे से कुछ युवकों ने हल्ला करते हुए पत्थर मारा, जिससे कार के शीशे फूट गए। एक युवक डीएसपी की कार के सामने आकर उसकी तरफ का दरवाजा खोलने लगा। दरवाजा नहीं खुलने पर साइड ग्लास तोड़ दिया। उनकी कार पर मुक्के मारे। हालांकि पथराव में डीएसपी को कोई चोट नहीं आई है।

लोगों के हंगामे और माहौल तनावपूर्ण होने से डूंगरपुर जिले के सभी थानों की पुलिस को दोवड़ा में तैनात किया गया है। एडिशनल एसपी अशोक कुमार, डीएसपी समेत कई अधिकारी ओर जवान तैनात किए गए है। वही उदयपुर ओर सलूंबर जिले से भी पुलिस बल की बुलाया गया है।

कलेक्ट्री पहुंचे बीएपी नेता ओर लोग:- दोवड़ा थाने के पास हंगामे के बाद बीएपी नेता और लोग थाने पहुंचे। आसपुर विधायक उमेश डामोर, दिग्विजय सिंह चुंडावत समेत कई लोगों ने कलेक्ट्री पहुंचकर आक्रोश जताया। युवक से मारपीट का आरोप लगाते हुए पुलिसकर्मियों के खिलाफ कार्रवाई की मांग की है।

- **'बीमार युवक का उदयपुर के अस्पताल में इलाज जारी है। जिसकी स्थिति स्थिर बनी हुई है'**

इधर इस पूरे घटनाक्रम को लेकर एसपी डूंगरपुर मनीष कुमार ने बताया कि बीमार युवक का उदयपुर के अस्पताल में इलाज जारी है। जिसकी स्थिति स्थिर बनी हुई है। वहीं, उन्होंने कहा कि परिजन जिन पुलिसकर्मियों पर मारपीट के आरोप लगा रहे हैं, उस मामले की जांच की जाएगी और दोषी पुलिसकर्मियों पर कार्रवाई भी की जाएगी। एसपी ने लोगों से अफवाह पर ध्यान नहीं और कानून व्यवस्था बनाए रखने की अपील की है।

11 क्विंटल मिलावटी व दूषित पनीर नष्ट करवाया

- **मिलावटी पनीर की सूचना पर खाद्य सुरक्षा विभाग की टीम ने कार्रवाई की**

पावटा, (निसं)। "शुद्ध आहार मिलावट पर वार" अभियान के तहत खाद्य सुरक्षा अधिकारियों एवं जांच दल ने बीती रात ककराली छटी मील के पास अलवर से पिकअप में लोड कर विराटनगर के रास्ते पर बड़ी कार्रवाई की। टीम ने एक पिकअप वैन से 11 क्विंटल 10 किलोग्राम मिलावटी पनीर बरामद किया और उसे नष्ट करवाया।

आयुक्त खाद्य सुरक्षा एवं औषधि नियंत्रक डॉ. टी. शुभमंगला, जिला कलक्टर प्रियंका गोस्वामी, एडीएम ओमप्रकाश सहारण के निर्देशन में सिंथेटिक व मिलावटी पनीर को ककराली छटी मील के पास अलवर से पिकअप में लोडकर विराटनगर के रास्ते होते हुए जयपुर जाने की सूचना पर पुलिस द्वारा चेक पोस्ट थाना विराटनगर पर रुकवाया गया। खाद्य सुरक्षा अधिकारियों एवं जांच दल द्वारा मौके पर पहुंचकर पिकअप में रखे बक्सों का निरिक्षण किया गया। जिनमें लगभग 11 क्विंटल 10 किलो पनीर रखा हुआ था। निरीक्षण के दौरान यह पनीर मिलावटी एवं दूषित पाया गया। पिकअप वाहन चालक से इस बारे में पूछताछ की गई तो उसने यह मिलावटी पनीर साहुन डेयरी ककराली अलवर से लाना व विश्वकर्मा इंडस्ट्रियल एरिया जयपुर में देना बताया। जांच टीम द्वारा उक्त मामले में वाहन चालक को डेयरी मालिक से बात करवाने एवं मिलावटी एवं सिंथेटिक पनीर के बारे में दूरभाष के जरिए बात करवाने को कहा। जिस पर बात करने पर डेयरी मालिक द्वारा कोई संतोष पूर्ण जवाब नहीं दिया गया वह फोन बंद कर लिया गया, जिस पर खाद्य सुरक्षा मानक अधिनियम के तहत कार्रवाई करते हुए इस पनीर से दो नमूने जांच हेतु लिए गए। वहीं नमूने लेने के बाद शेष बचे हुए पनीर को जनहित को देखते हुए जेसीबी बुलाकर गड्डा खुदवाकर नियमानुसार उक्त मिलावटी व दूषित पनीर को नष्ट करने की कार्रवाई की गई।

शराब पीकर उत्पात मचाते छह जने गिरफ्तार

टोंक, (निसं)। जिला पुलिस अधीक्षक के निर्देशन वृत्ताधिकारी राजेश विद्यार्थी के सुपरविजन में, मेहन्दवास थानाधिकारी के नेतृत्व गठिम टीम ने रविवार की रात्रि गश्त के दौरान कार्रवाई करते हुए रात्रि को शराब पीकर उत्पात मचाते हुए छह व्यक्तियों को गिरफ्तार कर एक कार जब्त की है। वहीं पांच लीटर अवैध हथकड़ शराब के साथ एक आरोपी को गिरफ्तार किया गया है।

मेहन्दवास थानाधिकारी ने बताया कि रविवार को रात्रि गश्त के दौरान थाना पुलिस टीम ने शराब पीकर उत्पात मचाते हुये नेशनल हाईवे 52 स्थित अरनियानील व छाण चौराहा से छह व्यक्तियों को गिरफ्तार किया एवं एक कार को भी जब्त किया गया तथा वही रात्रि गश्त के दौरान मेहन्दवास-अमीनपुरा मार्ग पर आरोपी भरत मीणा पुत्र पन्ना लाल मीणा निवासी अहमदपुरा उर्फ नयागाव थाना मेहन्दवास को पांच लीटर अवैध हथकड़ शराब के साथ गिरफ्तार कर उसके खिलाफ प्रकरण दर्ज किया गया है। पुलिस द्वारा बीएनएसएस में गिरफ्तार किये गये आरोपियों में अभिजीत पुत्र बनवारी लाल बैरवा, अजीत पुत्र बनवारी लाल बैरवा, महेन्द्र मीणा पुत्र छगन लाल, हीरा लाल कीर पुत्र लक्ष्मण कीर, सानु सैनी पुत्र नन्दकिशोर माली व मुकेश पुत्र गोकुल गुर्जर निवासी मोडियाला थाना मेहन्दवास शामिल है।

अस्पताल के गेट पर मिले नवजात की इलाज के दौरान मौत

- **25 सितंबर की रात में अज्ञात व्यक्ति नवजात को डूंगरपुर जिला अस्पताल के मुख्य द्वार पर छोड़ गया था**

डूंगरपुर, (निसं)। जिला अस्पताल के गेट पर लावारिस मिले एक नवजात शिशु की इलाज के दौरान मौत हो गई। चार दिन पहले यह नवजात अस्पताल के मुख्य द्वार पर मिला था, जिसका जिला शिशु अस्पताल में इलाज चल रहा था। पुलिस ने पोस्टमॉर्टम के बाद शव राजकीय शिशु गृह को सौंप दिया है और मामले की जांच में जुटी है।

राजकीय शिशु गृह के मैनेजर कुलदीप शर्मा ने बताया कि 25 सितंबर की रात करीब तीन बजे एक अज्ञात व्यक्ति नवजात को डूंगरपुर जिला अस्पताल के मुख्य द्वार पर छोड़कर चला गया था।

सूचना मिलने पर पुलिस और शिशु गृह के अधिकारी मौके पर पहुंचे थे। नवजात को तत्काल जिला शिशु अस्पताल में भर्ती कराया गया था, जहां उसकी हालत नाजुक बनी हुई थी। डॉक्टरों ने उसका इलाज शुरू किया, लेकिन रविवार रात इलाज के दौरान नवजात की मौत हो गई। शिशु की मौत के बाद शव को मोर्चरी में रखवाया। सोमवार सुबह पुलिस ने शव का पोस्टमॉर्टम करवाया और फिर उसे राजकीय शिशु गृह को सुपुर्द कर दिया। मैनेजर शर्मा ने बताया कि नगरपरिषद की मदद से नवजात का अंतिम संस्कार किया जाएगा। कोतवाली थाना पुलिस इस पूरे मामले की जांच कर रही है और उस अज्ञात व्यक्ति की तलाश में जुटी है, जिसने नवजात को अस्पताल के गेट पर छोड़ा था।

बीकानेर में 64 हजार बैग नकली उर्वरक जब्त

बीकानेर, (निसं)। कृषि मंत्री किरोड़ीलाल मीणा रविवार को एक बार फिर एक्शन मोड में नजर आए। इस बार उन्होंने बीकानेर जिले में नकली बायो उर्वरक बनाने वाली दो बड़ी इकाइयों पर छापेमारी की। पहली कार्रवाई गजनेर थाना क्षेत्र के खारी गंगापुरा गांव में हुई, जहां से करीब 24 हजार बैग नकली उर्वरक के जब्त किए गए। दूसरी कार्रवाई कोलायत के सांखला फांटे से तीन किलोमीटर कोलायत की तरफ की गई, जहां से 40 हजार बैग प्रथमदृष्टया नकली बायो उर्वरक पाए गए। कार्रवाई के दौरान कृषि विभाग के जॉइंट डायरेक्टर मदनलाल और अन्य अधिकारी भी मौजूद रहे।

मंत्री मीणा ने बताया कि इन इकाइयों से न केवल राजस्थान के विभिन्न जिलों में, बल्कि नेपाल तक माल सप्लाई किया जा रहा था। उन्होंने कहा कि यह नकली उर्वरक किसानों की जमीन को बंजर बना रहा है। ऐसी इकाइयों पर लगातार सख्त कार्रवाई की जाएगी। इससे पहले भी पदमपुर में एक नकली उर्वरक इकाई पर छापा मारकर ठोस सबूत जुटाए गए थे, जिनके आधार पर यह नई कार्रवाई की गई। मीणा ने अधिकारियों को निर्देश दिया कि दोनों इकाइयों को तुरंत सीज किया जाए और उर्वरक की जांच रिपोर्ट तैयार करवाई जाए, ताकि किसानों को नुकसान न हो। कृषि मंत्री ने चेतावनी दी कि जो भी नकली खाद-बीज बनाने और बेचने का काम कर रहा है, उसके खिलाफ कठोर कार्रवाई होगी। किसानों से अपील की गई कि वे केवल प्रमाणित विक्रेताओं से ही खाद-बीज खरीदें और संदेह होने पर तुरंत विभाग को सूचित करें। जानकारी के अनुसार इससे पूर्व तीन बार बीकानेर में किरोड़ी लाल मीणा के निर्देश पर नकली उर्वरक और बीज बनाने वाली इकाइयों के खिलाफ कार्रवाई की गई थी।

आयड़ नदी में बहे युवक का शव 23 दिन बाद मिला

छह सितम्बर को दो युवक बह गए थे, एक को रेस्क्यू किया और दूसरे की तलाश की जा रही थी

उदयपुर, (कासं)। शहर की आयड़ नदी में करीब 23 दिन पूर्व तेज बहाव में बहे एक युवक का शव सोमवार सुबह आयड़ नदी पर बने कानपुर गांव के शमशान की पुलिया के नीचे से बरामद हुआ। पिछले 23 दिन से यह युवक लापता था। इसकी परिजन इसकी लगातार तलाश कर रहे थे। इसके बावजूद इसका पता नहीं चल रहा था। पिछले दो-तीन दिन से लगातार चल रहे रेस्क्यू ऑपरेशन के दौरान गोताखोर छोटू हेला की टीम को इस युवक का शव मिला। शव पूरी तरह से सड़-गल चुका है और केवल हड्डियों का ढांचा ही बचा है। मृतक की पहचान उसके द्वारा पहनी गई पेंट के आधार पर हुई है।

जानकारी के अनुसार छह सितंबर को आयड़ नदी में दो युवक तेज बहाव के बीच में फंस गए थे। इनमें से एक युवक को करीब 8 घंटे की अथक प्रयास के बाद रेस्क्यू कर लिया था। इस नदी में बहे रवि खोखर पुत्र रमेश खोकर नामक युवक का पिछले 23 दिन से पता नहीं चल रहा था और इसकी परिजन काफी परेशान थे।

प्रशासन के निर्देश पर पिछले चार दिनों से छोटू हेला और उसकी टीम द्वारा लगातार आयड़ नदी में रवि खोखर की तलाश की जा रही थी। सोमवार सुबह आयड़ नदी के कानपुर खेड़ा शमशान में पुलिया के पास में एक लोहे के खाट पर एक शव पड़ा हुआ मिला जिसे देखकर लोगों ने पुलिस को सूचना दी। मौके पर सिविल डिफेंस और गोताखोर छोटू हेला की टीम पहुंची। बड़ी मशक्कत से शव को बाहर निकाला। मृतक की पहचान उसके द्वारा पहनी गई जींस और शर्ट के द्वारा की गई। शव पूरी तरह से सड़ गल गया था। पुलिस ने शव कब्जे में ले कर मोरचरी में रखवाया और पोस्टमार्टम के बाद उसके परिजनों को सुपुर्द किया।

नील गाय के बच्चों व मोर की जान बचाई

शाहपुरा, (निसं)। ग्राम बिलान्दपुर में एक खेत में नील गाय के बच्चे पर तीन चार श्वानों ने हमला करके घायल कर दिया। ग्रामीणों ने बच्चे को छुड़ाया और इसकी सूचना पशुधन निरीक्षक गोविन्द भारद्वाज को दी।

सूचना मिलते ही भारद्वाज ने मौके पर पहुंचकर घायल नीलगाय के बच्चे का उपचार किया। भारद्वाज ने बताया कि श्वानों ने बच्चे के तीन चार घाव बना दिये थे, जिनकी ड्रेसिंग की गई। उपचार के बाद भारद्वाज ने बच्चे को खेत में सुरक्षित स्थान पर पास छोड़ा। इसके अलावा भाबरू, मनोहपुर, टसकोला, भौनावास, मंढ I, पावटा आदि गांवो में श्वानों के हमले में घायल एक दर्जन नील गाय के बच्चों एवं एक मोर का उपचार किया। भारद्वाज ने इस सितम्बर माह में अब तक 147 नील गाय के बच्चों का उपचार किया।

शराब से भरी कार जब्त, तस्कर फरार

डूंगरपुर, (निसं)। कुआं थाना पुलिस ने खार-दरियाटी रोड पर शराब से भरी एक कार जब्त की है। पुलिस ने कार से शराब के 29 कार्टन बरामद किए हैं। हालांकि, कार ड्राइवर तस्कर मौके से फरार हो गया। पुलिस ने मामला दर्ज कर आरोपी की तलाश शुरू कर दी है।

- **29 कार्टन अवैध शराब बरामद, आबकारी एक्ट में मामला दर्ज**

थानाधिकारी ने बताया कि जिला पुलिस अधीक्षक मनीष कुमार के निर्देश पर जिले में अवैध शराब तस्करी के खिलाफ ऑपरेशन स्वच्छता चलाया जा रहा है। इसी अभियान के तहत पुलिस को अवैध शराब तस्करी की सूचना मिली थी। सूचना के आधार पर खार दरियाटी मार्ग पर नाकेबंदी की गई। इस दौरान पुलिस ने एक कार को रुकने का इशारा किया, लेकिन चालक कार को घुमाकर भागने लगा। पुलिस टीम ने कार का पीछा किया। चालक कार को रास्ते में छोड़कर फरार हो गया। पुलिस ने कार को जब्त कर लिया। तलाशी के दौरान कार से शराब और एक फर्जी नंबर प्लेट बरामद हुई।

खार-दरियाटी रोड पर शराब से भरी कार को पुलिस ने जब्त किया।

350 लीटर सरस घी व 448 किलो मूंगफली तेल सीज़

भीम, (निसं)। कस्बे के रोडवेज बस स्टैंड टॉडगढ़ रोड स्थित खाद्यान्न वस्तुओं के गोदाम पर सोमवार को जिला खाद्य सुरक्षा अधिकारी प्रेमचंद शर्मा ने टीम सहित कार्रवाई करते हुए 350 लीटर सरस घी एवं 448 किलो मूंगफली का तेल सीज किया है।

जिला खाद्य सुरक्षा अधिकारी प्रेमचंद शर्मा ने बताया कि शुद्ध आहार मिलावट पर वार अभियान के तहत खाद्य सुरक्षा एवं औषधि नियंत्रण आयुक्त टी शुभ मंगला के निर्देशन पर जिला कलेक्टर तथा जिला मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी के आदेश अनुसार राज्य सरकार द्वारा 4 सितंबर से 30 सितंबर तक चलाए जा रहे अभियान के अंतर्गत सोमवार को भीम कस्बे के रोडवेज बस स्टैंड टॉडगढ़ रोड स्थित अरुण ट्रेडिंग कंपनी पर सरस घी एवं मूंगफली तेल के नमूने लेकर सीज किए हैं।

ग्रामीण सेवा शिविर में लोगों को राहत मिली

- **मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा की पहल पर सेवा पर्व पखवाड़े के तहत उदयपुर जिले में आयोजित ग्रामीण सेवा शिविर एक आदिवासी परिवार के लिए खुशियों की सौगात लेकर आया**
- **पंचायत समिति भोपालगढ़ की ग्राम पंचायत देवातड़ा में ग्रामीणों ने नाइयों व नायकों के मोहल्ले में लंबे समय से चली आ रही कम वोल्टेज और पुरानी केबल की समस्या का समाधान हुआ**

जयपुर। जोधपुर के देवातड़ा में ग्रामीणों को बिजली से लेकर संपत्ति अधिकार तक राहत मिली है। पंचायत समिति भोपालगढ़ की ग्राम पंचायत देवातड़ा में ग्रामीणों ने नाइयों व नायकों के मोहल्ले में लंबे समय से चली आ रही कम वोल्टेज और पुरानी केबल की समस्या के बारे में बताया। शिविर प्रभारी और भोपालगढ़ तहसीलदार के निर्देश पर जेवीवीएनएन के सहायक अभियंता ने आरडीएसएस योजना के अंतर्गत गाँव में 40 केवीए का नया ट्रांसफार्मर लगाया गया। साथ ही, पाँच नए पोल और 100 मीटर नई केबल डालकर कम वोल्टेज की समस्या का स्थाई समाधान कर दिया गया। रामदीन के लिए भी यह शिविर एक नई ख़ुशी लेकर आया। केंद्र सरकार की महत्वाकांक्षी स्वामित्व योजना के तहत रामदीन पुत्र देवाराम को प्रॉपर्टी कार्ड और पट्टा प्रदान किया गया। प्रॉपर्टी कार्ड और पट्टा पाकर रामदीन की आँखों में खुशी छलक उठी। उन्होंने सरकार और प्रशासन के इस प्रयास के लिए हृदय से आभार व्यक्त किया। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा की पहल पर सेवा पर्व पखवाड़े के तहत उदयपुर जिले में आयोजित ग्रामीण सेवा शिविर एक आदिवासी परिवार के लिए खुशियों की सौगात लेकर आया। गिर्वा तहसील क्षेत्र की ग्राम पंचायत खजूरी में आयोजित शिविर में आदिवासी बीपीएल परिवार की पुत्री सुगना मीणा के विवाह पर मुख्यमंत्री कन्यादान योजना के लिए आवेदन किया। शिविर प्रभारी के निर्देशन में सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता विभाग की ओर से आवेदक से संपर्क कर दस्तावेजों की पूर्ति कराकर आवेदन अग्रेषित किया गया। सामाजिक सुरक्षा अधिकारी गिर्वा ने 51000 रूपए की सहायता राशि की हाथों-हाथ स्वीकृति जारी करवाई। शिविर स्थल पर ही लाभार्थी को स्वीकृति पत्र भी प्रदान किया गया।

जयपुर जेल से 150 कैदी श्यालावास जेल भेजे

दौसा, (निसं)। श्यालावास स्थित राज्य की एकमात्र विशिष्ट केंद्रीय कारागृह में बंदियों की संख्या में बढ़ोतरी हो रही है। गत तीन दिन में केंद्रीय कारागृह जयपुर से 150 कैदियों को स्थानांतरित किया गया है। जयपुर जेल में जनाधिक्य की समस्या के चलते जेल मुख्यालय ने बंदियों को श्यालावास की जेल में स्थानांतरित करने का निर्णय लिया है। जेल अधीक्षक पारस जांगिड़ ने 150 बंदियों के जेल दाखिल होने की पुष्टि की है। इससे जेल जनसंख्या 450 के पार पहुंच गई है।

व्याख्याता बृजेश कुमार ने एनसीसी थर्ड ऑफिसर रैंक हासिल की

बूंदी, (निसं)। पीएमश्री राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय बूंदी में चित्रकला के व्याख्याता बृजेश कुमार ने राष्ट्रीय कैडेट कोर (एनसीसी) के पीआरसीएन कोर्स में उल्लेखनीय सफलता प्राप्त कर थर्ड ऑफिसर की रैंक स्टार अर्जित की। राउमावि बूंदी में एनसीसी प्रभारी रहे बृजेश कुमार ने ऑफिसर ट्रेनिंग अकादमी, कामठी (नागपुर, महाराष्ट्र) में 30 जुलाई से 27 सितंबर तक प्रशिक्षण पूर्ण कर यह उपलब्धि प्राप्त की। प्रशिक्षण पूर्ण कर विद्यालय लौटने पर प्राचार्य राजेंद्र कुमार माथुर ने उनके कंधे पर सितारा लगा कर सम्मानित किया गया। इस अवसर पर समस्त स्टाफ, एसपीसी बैंड की धुन तथा एनसीसी और एसपीसी कैडेट्स की उपस्थिति में बृजेश कुमार का स्वागत किया गया।

व्याख्याता बृजेश कुमार का विद्यालय परिवार ने स्वागत किया।

शहरी आबादी क्षेत्र में वन्यजीव ने बकरियों का शिकार किया

बूंदी, (निसं)। सोमवार को शिव कॉलोनी उंदालिया की डूंगरी क्षेत्र में वन्य जीव द्वारा चार बकरियों के शिकार किए जाने की घटना सामने आई है। क्षेत्रवासियों का कहना है कि सुबह जब वह उठे तो उन्हें अपने पास स्थित बाड़े में चार बकरियां मृत अवस्था में पड़ी हुई नजर आई। देखते ही देखते वहां लोगों की भीड़ एकत्र हो गई।

क्षेत्रीय निवासी कन्हैया, शिव ने बताया कि रात्रि के समय कोई वन्य जीव बाड़े में आया और चार बकरियों को मार कर उनमें से एक बकरी को पूरी तरह खा गया। बाड़ा मालिक कन्हैयालाल बांगडी जब सुबह पांच बजे उठकर अपनी बकरियों को देखने गया तो उसे तीन बकरियां और एक बकरा मृत अवस्था में मिला। एक बकरी के शरीर का कुछ हिस्सा ही बचा हुआ था। वहीं अन्य के शरीर पर वन्य जीव द्वारा हमला किए जाने के निशान पाए गए। सूचना मिलने पर क्षेत्रिय वन अधिकारी बलराम गोचर अपनी टीम के साथ मौके पर पहुंचे और घटनास्थल का बारिकी से निरीक्षण किया। बलराम ने बताया कि क्षेत्र में पथरीला इलाका और मिट्टी नही होने कारण वन्यजीव के पगमार्ग नहीं मिल सके हैं। शव का पोस्टमार्टम करवाकर अंतिम संस्कार किया गया है। बकरी मालिक को सरकार के नियमानुसार उचित मुआवजा दिया जाएगा। प्रथम दृश्यता में लग रहा है कि वनयजीव द्वारा ही बकरियों का शिकार किया गया है। पैंथर द्वारा शिकार किए जाने की संभावना है, क्योकि अभी बाघिन इस क्षेत्र में मौजूद नहीं है।

शॉर्ट सर्किट से कार पर बिजली का तार गिरा, कार जली

उदयपुर, (कासं)। शहर के भूपालपुरा थाना इलाके में रविवार रात शॉर्ट सर्किट के चलते बड़ा हादसा हो गया, जहां खड़ी कार पर बिजली का तार टूटकर गिर पड़ा। इससे कार में आग लग गई। थोड़ी ही देर में कार जलकर राख हो गई।

घटना उदयपुर शहर के भूपालपुरा स्थित पुलिस चौकी के पास की है। आयड़ नदी से सटे इस इलाके में घर के बाहर ही कार खड़ी कर रखी थी। तभी कार के ऊपर से जा रही लाइन का तार टूटकर कार पर गिर गया। आग की लपटें उठते देख आसपास रहने वाले लोग भी जग गए और बाहर आ गए। घटना के बाद क्षेत्र में रात को अफरा-तफरी मच गई। स्थानीय लोगों ने तुरंत दमकल विभाग को सूचना दी। सूचना मिलते ही दमकल दल मौके पर पहुंचा और आग पर काबू पाया, लेकिन तब तक कार पूरी तरह से जल चुकी थी। फायर स्टेशन की रिपोर्ट में पता चला कि जहां कार खड़ी थी उसके ऊपर से गुजर रही लाइन में शॉर्ट सर्किट हुआ और नीचे एक तार गिरा, जिससे कार ने आग पकड़ ली और पूरी कार जल गई। कार भूपालपुरा निवासी कमल साहित्य की थी। उदयपुर के मुख्य अग्निशमन अधिकारी बाबूलाल चौधरी ने बताया कि आग की सूचना मिलने पर रात करीब एक बजे एक दमकल मौके पर भेजी और आग पर नियंत्रण करने के बाद रात करीब दो बजे गाड़ी वापस फायर स्टेशन आई। फायर की टीम में फायरमैन कैलाश यादव, सुरेश मीणा, कैलाश मेघवाल और वाहन चालक यूसुफ मोहम्मद शामिल थे।

'बाहर वालों पहले अपना घर सुधार लो, हम अपना घर खुद देखेंगे'

- **जैसलमेर विधायक छोटूसिंह भाटी ने प्रेस वार्ता की**

जैसलमेर, (नि.सं.)। भाजपा कार्यालय में प्रेस कॉन्फ्रेंस में जैसलमेर विधायक छोटूसिंह भाटी ने बताया कि बाहरी नेता पहले अपना घर तो सुधार लें, हम अपना घर सुधार लेंगे। भाटी ने कहा कि कई नेता आते हैं, माइक पर भाषणबाजी कर चले जाते हैं। उन्होंने बाड़मेर के नेताओं और अन्य जिलों के नेताओं पर तीखा तंज कसते हुए यह बात कही। विधायक भाटी ने कहा कि मैं आपको आश्वस्त करना चाहता हूं कि मुखिया हम हैं, हम दोनों विधायक (पोकरण और जैसलमेर) पूरे मन से ओरण प्रेमियों के साथ हैं।

उनका इशारा शिव विधायक रविंद्र सिंह भाटी और बीजेपी बाड़मेर के पूर्व जिलाध्यक्ष स्वरुप सिंह खारा को लेकर है। जैसलमेर में हर मुद्दे पर बाहरी जिलों के नेताओं के आने के सवाल करने पर जैसलमेर विधायक ने उन पर तंज कसते हुए ऐसा कहा। गौरतलब है कि जैसलमेर में ओरण-गोचर भूमि को बचाने के लिए चल रहा धरना तेज हो गया है। शुक्रवार 26 सितंबर को ओरण संरक्षण आक्रोश रैली में ग्रामीणों, संतों और जन प्रतिनिधियों ने हिस्सा लिया, जहां प्रशासन को मांगों का ज्ञापन सौंपा गया। पिछले कई दिनों से चल रहे धरने में प्रशासन के आश्वासनों को लॉलीपॉप बताते हुए ग्रामीणों और पर्यावरण प्रेमियों ने बड़ा आंदोलन छेड़ने की चेतावनी दी है।

भारतीय टीम ने साफ कर दिया था कि वे पीसीबी चीफ और एसीसी प्रमुख मोहसिन नकवी के हाथों से एशिया कप की ट्रॉफी नहीं लेंगे। लेकिन मोहसिन नकवी भी अपनी बात पर अड़े रहे।

- सूर्यकुमार यादव

भारतीय बल्लेबाज, एशिया कप की ट्रॉफी न लेने पर बोलते हुए।

खेल जगत

आज का खिलाड़ी

तिलक वर्मा

पाकिस्तान के खिलाड़ी तिलक वर्मा को आउट करने के लिए उन्हें उकसा रहे थे। लेकिन तिलक ने पाकिस्तान के खिलाड़ियों को अपने बल्ले से जवाब दिया। जब तिलक बैटिंग के लिए क्रीज पर आए तो पाकिस्तान के खिलाड़ियों ने उनके खिलाफ 'काफी टीका-टिप्पणी' की। जिसने इस भारतीय बल्लेबाज को उनके अब तक के करियर की सबसे शानदार पारियों में से एक खेलने के लिए प्रेरित किया। शुरुआती ओवरों में विकेट गिरने के कारण भारतीय टीम मुश्किल स्थिति में थी। दोनों टीमों के बीच तनाव वाले माहौल के बीच तिलक को बहुत कुछ कहा भी गया।

क्या आप जानते हैं ?... भारत एशिया कप की सबसे सफल टीम है। टीम इंडिया ने अब तक खेले गए 16 सीजन में 8 बार खिताब पर कब्जा जमाया है। अब भारत की नजर 9वें खिताब पर है।

भरोसे का प्रतीक बन गए हैं तिलक वर्मा

नई दिल्ली, 29 सितंबर। दुबई इंटरनेशनल स्टेडियम में रविवार को खेले गए एशिया कप फाइनल में भारत के माथे पर जीत का तिलक लगाने वाले तिलक वर्मा आज न केवल हर भारतीय की जुबान पर हैं, बल्कि भरोसे का प्रतीक भी बन गए हैं। आठ नवंबर 2002 को आंध्रप्रदेश के हैदराबाद में तेलगु परिवार में जन्में तिलक वर्मा ने 21 की उम्र पार करने से पहले ही अगस्त 2023 में भारत के लिए अपना पहला अंतरराष्ट्रीय टी-20 मैच खेला था। अपने इस पहले मैच में उन्होंने वेस्टइंडीज के खिलाफ दूसरी और तीसरी ही गेंद पर दो शानदार छक्के लगाकर साबित कर दिया कि वह क्रिकेट जगत में अपनी धाक जमाने के लिए आए हैं। एक वक्त था जब इस प्रतिभावान खिलाड़ी के पिता श्री नम्बूरी नागराजू के पास इतने पैसे नहीं थे कि वह निजी कोचिंग की व्यवस्था कर पाते, लेकिन तब तिलक के पहले कोच श्री सलाम बयाश ने न केवल उनके लिए मुफ्त कोचिंग की व्यवस्था की, बल्कि आवश्यक सामान भी जुटाए। तिलक ने उनके भरोसे पर खरे उतरते हुए 2018-19 में हैदराबाद की ओर से प्रथम श्रेणी क्रिकेट में पदार्पण किया। उन्हें जल्द ही, 2020 में दक्षिण अफ्रीका में खेले जाने वाले अंडर-19 विश्वकप के लिए चुन लिया गया, जहां उन्होंने तीन पारियों में महत्वपूर्ण 86 रन बनाए। तिलक घरेलू क्रिकेट में 2021 में हैदराबाद की ओर से खेलते हुए सैयद मुश्ताक अली ट्रॉफी में शानदार प्रदर्शन किया और सात पारियों में 147.26 के स्ट्राइक रेट से 215 रन बनाए। इस प्रदर्शन पर आईपीएल टीमों की नजर गई और 2022 के मेगा ऑक्शन में मुंबई इंडियन्स ने उन्हें 1.70 करोड़ में खरीद लिया। तिलक ने अपने पहले आईपीएल सीजन में सभी 14 मैच खेले और 36.09 की औसत एवं 131.02 की स्ट्राइक रेट से 397 रन बनाए। आईपीएल के इस शानदार प्रदर्शन ने भारतीय टीम में उनके चयन का मार्ग प्रशस्त कर दिया और उन्होंने 2023 में वेस्ट इंडीज के खिलाफ अपना पदार्पण किया। तिलक वर्मा ने अब तक के अपने क्रिकेट कैरियर में 32 अंतरराष्ट्रीय टी-20 मैचों में 30 पारियों में 149 की स्ट्राइक रेट से 962 रन बनाए हैं। अपने टी-20 करियर में उन्होंने दो शतक लगाए हैं और वह भी लगातार दो पारियों में, जो अपने आप में एक रिकॉर्ड है। उनका एक पारी में सबसे अधिक स्कोर 120 नाबाद रन है। तिलक को हालांकि एक दिवसीय मैचों में बहुत मौका नहीं मिला है, लेकिन उन्होंने चार मैचों में एक अर्धशतक जड़ दिया है। उन्होंने प्रथम श्रेणी में 22 मैचों में 34 पारियां खेलते हुए अब तक 1562 रन बनाए है। उल्लेखनीय है कि बाएं हाथ का यह बल्लेबाज, बॉलिंग ऑल राउंडर है, जिसने अंतरराष्ट्रीय टी-20 में छह पारियों में गेंदबाजी करके तीन विकेट भी हासिल किये है। तिलक के पिता श्री नागराजू पेशे से एक इलेक्ट्रीशियन हैं और वह भी हर पिता की तरह चाहते थे कि उनका बेटा एक स्थायी आय वाले पेशे में जाए। वह चाहते थे कि उनका बेटा डॉक्टर बने, लेकिन फिर भी उन्होंने अपने आप को अपने बेटे पर नहीं थोपा। तिलक की मां एक गृहणी हैं और उनके छोटे भाई तरुण वर्मा भी एक खिलाड़ी हैं, वह राष्ट्रीय स्तर पर बैडमिंटन खेल चुके हैं।

स्ट्रोक से वर्ल्ड चैम्पियन तक, रोचक और प्रेरक है पोलैंड की मैग्दलेना की खेल यात्रा

नई दिल्ली, 29 सितंबर। जब मैग्दलेना एंड्रुस्जकिविच ने इंडियनऑयल नई दिल्ली विश्व पैरा एथलेटिक्स चैंपियनशिप 2025 में महिलाओं की टी72 400 मीटर फाइनल रेस का फिनिशलाइन छुआ तो, जवाहरलाल नेहरू स्टेडियम तालियों से गूंज उठा। दर्शकों के लिए यह एक दिव्यांग एथलीट की शानदार जीत थी, लेकिन मैग्दलेना के लिए यह सात वर्षों की संघर्षमय यात्रा, धैर्य और अडिग उम्मीद का प्रतीक था। इस 37 वर्षीय पोलिश एथलीट की कहानी असामान्य है। सात साल पहले, अचानक हुए मस्तिष्क स्ट्रोक ने उनके शरीर के एक हिस्से को निष्क्रिय कर दिया था। मैग्दलेना याद करती हैं, "एक पल में मेरी दुनिया बदल गई। जिंदगी जैसी मैं जानती थी, अचानक खत्म हो गई लग रही थी।" लेकिन यही क्षण उनके जीवन जीवन की एक नई और प्रेरणादायी यात्रा की शुरुआत बन गया। फिजिकल थेरेपी के दौरान फ्रेम साइकिल चलाते हुए उन्होंने धीरे-धीरे खेलों के प्रति लगाव महसूस किया। वह कहती हैं, "शुरुआत में यह केवल अपने पैरों पर खड़े होने की कोशिश थी। फिर यह मेरा जुनून बन गया, और अब यह मेरी ज़िंदगी है।" पांच साल पहले मैग्दलेना ने पैरा एथलेटिक्स को पूरी तरह अपनाया। जापान के कोबे में आयोजित विश्व पैरा एथलेटिक्स चैंपियनशिप के पिछले संस्करण में उन्होंने टी72 कटेगरी में विश्व रिकार्ड के साथ पहला वर्ल्ड चैंपियनशिप खिताब जीता। इससे पहले उन्होंने पेरिस में 2023 में आयोजित विश्व पैरा एथलेटिक्स चैंपियनशिप में टी72 400 मीटर स्पर्धा में रजत पदक जीता था। रविवार को नई दिल्ली में उन्होंने कोबे में जीते गए अपने खिताब का सफलतापूर्वक बचाव किया। उन्होंने एक मिनट 13 सेकंड में दौड़ पूरी की-जो उनके अपने विश्व रिकॉर्ड आधा सेकेंड अधिक था। मैग्दलेना के सपने केवल पदक तक सीमित नहीं हैं। 2028 में लॉस एंजेलेस पैरालिंपिक्स में 72 कटेगरी का डेब्यू होना है। इसे लेकर मैग्दलेना का लक्ष्य साफ है। आंखों में दृढ़ संकल्प के साथ वह मुस्कुराते हुए कहती हैं, "मेरा सपना सोना जीतना है।" भारत ने भी उन्हें खास अनुभव दिया। पहली बार यहां दौड़ते हुए वह दर्शकों की गर्मजोशी और ऊर्जा से प्रभावित हुईं। वह कहती हैं, "मुझे यहां बहुत अच्छा लग रहा है। लोग और माहौल सब कुछ अद्भुत है। भारत शानदार है। अद्भुत है।" स्ट्रोक से पहले मैग्दलेना नर्तकी थीं। यही अनुशासन बाद में उनके खेल जीवन का सहारा बना। उन्होंने कहा, "नृत्य ने मुझे संतुलन, लय और धैर्य सिखाया। इन सबका फायदा मेरी वापसी में हुआ।" मैग्दलेना नई दिल्ली के जवाहरलाल नेहरू स्टेडियम में केवल जीत का जश्न नहीं मना रही थीं। वह साबित कर रही थीं कि चाहें कुछ भी हो जाए, नई शुरुआत की जा सकती है, जीवन फिर से जीया जा सकता है।

भारतीय टीम ने नहीं ली मोहसिन नकवी से एशिया कप की ट्रॉफी

दुबई, 29 सितंबर। भारतीय क्रिकेट टीम ने रविवार को दुबई में पाकिस्तान के खिलाफ फाइनल मैच में जीत के बाद, एशियाई क्रिकेट परिषद के अध्यक्ष और पाकिस्तान क्रिकेट बोर्ड के अध्यक्ष मोहसिन नकवी से एशिया कप ट्रॉफी लेने से इनकार कर दिया। इस घटनाक्रम के कारण रिंकू सिंह द्वारा विजयी चौका जड़े जाने के डेढ़ घंटे से भी अधिक समय बाद पुरस्कार वितरण समारोह शुरू हुआ। क्रिकबज की रिपोर्ट के अनुसार भारतीय टीम ने नकवी से ट्रॉफी लेने से इनकार कर दिया, जबकि नकवी विजेता टीम को ट्रॉफी सौंपने के लिए अपनी जगह से हटने को तैयार नहीं हुए। नकवी, जो कि पाकिस्तान के गृहमंत्री भी हैं, इस बात पर अड़े रहे कि वे अकेले ही ट्रॉफी देंगे। पुरस्कार वितरण का प्रसारण शुरू होने से पहले ही ट्रॉफी को मैदान से हटा लिया गया था। तिलक वर्मा, कुलदीप यादव और अभिषेक शर्मा ने प्रायोजकों से अपने-अपने पुरस्कार प्राप्त किए लेकिन भारतीय टीम को अपने विजेता पदक और ट्रॉफी नहीं मिल पायी। भारत को बिना ट्रॉफी के अपने ड्रेसिंग रूम में लौटना पड़ा। पाकिस्तान ने बीसीबी अध्यक्ष अमीनुल इस्लाम से अपने उपविजेता पदक प्राप्त किए और उसके बाद सीधे अपने ड्रेसिंग रूम में चले गए, उनके साथ उनके मुख्य कोच माइक हेसन भी थे। मैच समाप्त होने के बाद पाकिस्तान की टीम और उसके सदस्य ड्रेसिंग रूम चले गये इसे बाद प्रेस कॉफ्रेंस को लेकर अनिश्चिता का माहौल बन गया। पाकिस्तानी टीम आखिरकार एक घंटा अंदर बिताने के बाद, संभवतः तनावपूर्ण गतिरोध के खत्म होने का इंतजार करते हुए, ड्रेसिंग रूम से बाहर निकली और अपनी टीम को ट्रॉफी उठाते देखने के लिए उत्सुक अधिकतर भारतीय दर्शकों ने जोरदार हूटिंग की। फिर भी पुरस्कार वितरण समारोह में और देरी हुई और दोनों टीमों के खिलाड़ी मैदान पर ही बैठे रहे। ऐसा माना जा रहा है कि अमीरात क्रिकेट बोर्ड के उपाध्यक्ष खालिद अल ज़रूनी और बीसीबी के अमीनुल इस्लाम ने भारत को ट्रॉफी प्रदान करने की पेशकश की थी। यह एक ऐसी व्यवस्था थी जिसे भारत स्वीकार करने को तैयार था। हालांकि, नकवी इसके लिए तैयार नहीं थे और खुद ट्रॉफी देने पर अड़े रहे। अंततः, भारत को कोई ट्रॉफी नहीं दी गयी। भारतीय कप्तान सूर्यकुमार यादव ने पुरस्कार वितरण समारोह में कुछ नहीं कहा, तिलक वर्मा को प्लेयर ऑफ द मैच, सलमान अली आगा (पाकिस्तानी कप्तान) और अभिषेक शर्मा (प्लेयर ऑफ द टूर्नामेंट) का साक्षात्कार लेने के बाद होस्ट साइमन डूल ने घोषणा की, "मुझे एशियाई क्रिकेट परिषद ने सूचित किया है कि भारतीय क्रिकेट टीम आज रात अपने पुरस्कार नहीं ले पाएगी। इसलिए मैच के बाद का पुरस्कार वितरण समारोह यहीं समाप्त होता है।" समारोह समाप्त होने और नकवी के जाने के बाद भारतीय टीम के खिलाड़ी फोटो खिंचवाने के लिए चैंपियंस का साइनबोर्ड थोड़ी देर के लिए बाहर लाया गया लेकिन उसे फिर से हटा दिया गया। खिलाड़ियों ने तुरंत तैयारी की: वे मंच पर बैठे, कैमरों के लिए पोज दिए और फिर उस पर चढ़ गए। सूर्यकुमार ने मुस्कुराते हुए एक काल्पनिक ट्रॉफी उठाने का अभिनय किया, जबकि उनके साथी खिलाड़ी उनके चारों ओर तालियां बजा रहे थे। मैच के बाद प्रेस कॉन्फ्रेंस में सूर्यकुमार ने कहा कि शानदार प्रदर्शन के बाद भारत ट्रॉफी जीतने का हकदार था। सूर्यकुमार ने कहा, "जब से मैंने क्रिकेट खेलना और क्रिकेट देखना शुरू किया है, तब से मैंने कभी ऐसा नहीं देखा कि एक चैंपियन टीम को ट्रॉफी से वंचित कर दिया जाए। हमें ट्रॉफी हासिल करने के लिए कड़ी मेहनत की। हम चार सितंबर से यहां है, लगातार दो अच्छे मैच खेले। मुझे लगता है कि हम इसके हकदार थे। मैं इससे ज़्यादा कुछ नहीं कह सकता, मुझे लगता है कि मैंने इसे बहुत अच्छी तरह से व्यक्त कर दिया है, मैं इसके बारे में और कुछ नहीं कह सकता।" भारत की पांच विकेट की जीत के तुरंत बाद, भारतीय क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड (बीसीसीआई) ने खिलाड़ियों और सहयोगी स्टाफ के लिए 21 करोड़ रुपये के इनाम की भी घोषणा की।

एशेज सीरीज से बाहर होने के बाद क्रिस वोक्स ने लिया संन्यास

लंदन, 29 सितंबर। इंग्लैंड के ऑलराउंडर क्रिस वोक्स ने एशेज सीरीज से बाहर होने के बाद सोमवार को सोशल मीडिया पर अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट से संन्यास लेने की घोषणा कर दी। वोक्स ने सोशल मीडिया मंच इंस्टाग्राम पर अपने संन्यास लेने की घोषणा करते हुए कहा, वह क्षण आ गया है, और मैंने तय कर लिया है कि अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट से संन्यास लेने का यही सही समय है उन्होंने लिखा, इंग्लैंड के लिए खेलना एक ऐसी चीज थी जिसका मैं बचपन से ही सपना देखता था और मैं खुद को बहुत भाग्यशाली मानता हूं कि मैंने उन सपनों को जीया।

पिछले 14 सालों में इंग्लैंड का प्रतिनिधित्व करना, थ्री लायंस जर्सी पहनना और टीम के साथियों के साथ मैदान साझा करना, जिनमें से कई मेरे आजीवन दोस्त बन गए हैं, ऐसी चीजें हैं जिन्हें मैं बहुत गर्व के साथ याद करूंगा। उन्होंने कहा, मैं काउंटी क्रिकेट खेलना जारी रखने और निकट भविष्य में और भी फ्रैंचाइजी अवसरों की तलाश करने के लिए उत्सुक हूं। इस वर्ष जुलाई के आखिर में भारत के खिलाफ पांचवें टेस्ट मैच में कंधे की हड्डी में चोट लगने के बाद फिटनेस हासिल करने की जद्दोजहद के बाद 36 वर्षीय वोक्स को पिछले हफ्ते इंग्लैंड की एशेज टीम से बाहर कर दिया गया था।

इंग्लैंड पुरुष टीम के प्रबंध निदेशक रॉब की ने बाद में कहा कि वोक्स हमारी योजनाओं में बिल्कुल भी नहीं हैं। वोक्स ने 62 टेस्ट, 122 एकदिवसीय और 33 टी-20 अंतरराष्ट्रीय मैचों के बाद इंग्लैंड का प्रतिनिधत्व किया। उनका आखिरी प्रदर्शन भारत के खिलाफ ओवल टेस्ट में 11वें नंबर पर बल्लेबाजी के लिए उतरे थे। उन्होंने पांचवें दिन सीरीज जीतने में मदद करने की नाकाम कोशिश की थी।

खेल व खिलाड़ियों का करियर संवारने को सरकार प्रतिबद्ध : आर्या

अल्मोड़ा, 29 सितंबर। उत्तराखंड के अल्मोड़ा जिले के सोमेश्वर में सोमवार को दो दिवसीय ब्लॉक स्तरीय खेलकूद प्रतियोगिता का शुभारंभ करते हुए खेल मंत्री रेखा आर्या ने कहा कि उनकी सरकार खेल और खिलाड़ियों के उत्थान के लिए पूरी ताकत से काम कर रही है। आर्य ने कहा कि खेल केवल मनोरंजन नहीं हैं बल्कि अनुशासन, आत्मविश्वास और जीवन में आगे बढ़ने की प्रेरणा देते हैं। सरकार ने खिलाड़ियों को प्रोत्साहित करने के लिए मुख्यमंत्री उदीयमान खिलाड़ी उन्नयन योजना और खिलाड़ी प्रोत्साहन योजना शुरू की है। पदक जीतने वाले खिलाड़ियों को सरकारी नौकरी देने का प्रावधान भी हमारी प्रतिबद्धता को दर्शाता है। उन्होंने कहा कि खेल का मैदान जीवन की असली पाठशाला है। जो युवा अनुशासन और परिश्रम के साथ मैदान में उतरते हैं, वे केवल पदक ही नहीं जीतते बल्कि हजारों-लाखों लोगों के लिए आदर्श भी बनते हैं। आने वाले समय में यही खिलाड़ी उत्तराखंड का गौरव बढ़ाएंगे। खेल मंत्री ने कहा कि सरकार उनकी हरसंभव मदद के लिए तैयार है। अगर खिलाड़ी मेहनत करेंगे तो खेल ही आपके लिए करियर का रास्ता खोलेगा। प्रदेश सरकार आपके सपनों को पूरा करने के लिए आपके साथ खड़ी है। इस अवसर पर अनेक गणमान्य लोग उपस्थित रहे।

स्विस सुपरस्टार कैथरीन डेब्रुनर ने पदकों के अपने संग्रह में जोड़ा एक और स्वर्ण

नई दिल्ली, 29 सितंबर। स्विट्जरलैंड की दिग्गज पैरा एथलीट कैथरीन डेब्रुनर ने एक बार फिर साबित किया कि वह इस पीढ़ी की सबसे महान खिलाड़ियों में से एक हैं। उन्होंने रविवार को जवाहरलाल नेहरू स्टेडियम में जारी इंडियनऑयल नई दिल्ली विश्व पैरा एथलेटिक्स चैंपियनशिप 2025 में महिलाओं की 5000 मीटर टी54 फाइनल में स्वर्ण पदक जीतकर अपने शानदार करियर में एक और उपलब्धि जोड़ ली। पिछले साल पेरिस पैरालंपिक खेलों में पांच स्वर्ण और एक रजत पदक जीतने वाली डेब्रुनर को स्वयं को पोडियम पर देखने की आदत हो चुकी है। नई दिल्ली में मिली जीत से पहले ही 30 वर्षीय यह खिलाड़ी विश्व चैंपियनशिप में पांच स्वर्ण और तीन रजत पदक अपने नाम कर चुकी थीं। रविवार को उन्होंने 12:18.29 मिनट समय के साथ फिनिश लाइन पार की और चीन की तियान याजुआन तथा अपनी हमवतन पेट्रीसिया ईचस को पछाड़कर पहला स्थान हासिल किया। भारत में अपने पहले अनुभव पर डेब्रुनर ने कहा, "यह मेरा भारत में पहला मौका है और मुझे कहना होगा कि यह बिल्कुल अलग संस्कृति और देश है, जिसकी मुझे आदत नहीं है। यह वाकई बहुत अलग अनुभव रहा।"

उन्होंने नए मोंडो ट्रैक और प्रतिष्ठित स्टेडियम पर भी अपनी राय दी। उन्होंने कहा, "नया बिछाया गया मोंडो ट्रैक तेज होने में थोड़ा समय लेता है। फिर भी यह अच्छा ट्रैक है। यह एक शानदार स्टेडियम है। हमें यहां स्वागत करने के लिए बहुत-बहुत धन्यवाद।" डेब्रुनर ने महज आठ साल की उम्र में खेलों की दुनिया में कदम रखा था और आज वह पैरा स्पोर्ट्स की वैश्विक प्रतीक बन चुकी हैं। साल 2023 में उन्हें लॉरियस वर्ल्ड स्पोर्ट्सपर्सन ऑफ द ईयर विद ए डिसएबिलिटी अवॉर्ड से भी सम्मानित किया गया था।

अपने लंबे सफर को याद करते हुए उन्होंने कहा, "यह एक बहुत लंबी यात्रा रही है। मैं उन सभी अनुभवों के लिए आभारी हूं जो मुझे मिले। मैंने बहुत सारे अद्भुत लोगों और खिलाड़ियों से मुलाकात की है, जिनमें से कुछ को मैं बीस साल से जानती हूं। हम सबको सिर्फ खिलाड़ी ही नहीं बल्कि इंसान के तौर पर बढ़ते देखना अद्भुत रहा है। इस कम्युनिटी का हिस्सा बनकर मुझे खुशी है। यह मेरा जुनून है और हर दिन उसे जी पाना मेरे लिए सबसे बड़ी खुशी है।" एक और स्वर्ण पदक के साथ, डेब्रुनर ने फिर से साबित किया कि वह धैर्य, उत्कृष्टता और खेल के प्रति गहरी लगन की मिसाल हैं।

फ्रिट्ज ने ब्रूक्सबी को हराकर टोक्यो फाइनल में प्रवेश किया

टोक्यो, 29 सितंबर। अमेरिका के स्टार टेनिस खिलाड़ी टेलर फ्रिट्ज सोमवार को जापान ओपन में अपने हमवतन जेनसन ब्रूक्सबी पर सीधे सेटों में जीत के साथ सीजन के अपने तीसरे एटीपी टूर फाइनल में पहुंच गए।

भारतीय जूनियर महिला हॉकी टीम ने ऑस्ट्रेलिया अंडर-21 पर 1-0 से जीत दर्ज की

कैनबरा, 29 सितंबर। भारतीय जूनियर महिला हॉकी टीम ने सोमवार को कैनबरा के नेशनल हॉकी सेंटर में अपने तीसरे मैच में ऑस्ट्रेलिया अंडर-21 टीम पर 1-0 से जीत दर्ज की। कनिका सिवाच (32वें मिनट) ने भारत के लिए विजयी गोल दागा। आज यहां खेले गये मुकाबले में भारतीय महिला जूनियर टीम ने शानदार प्रदर्शन किया। पहले हाफ में दोनों टीमों के बीच कड़ी टक्कर के बाद, भारत ने आखिरकार तीसरे क्वार्टर के शुरुआती मिनटों में कनिका सिवाच के महत्वपूर्ण मैदानी गोल की बदौलत गतिरोध तोड़कर अपनी टीम को जीत दिलाई। भारत इससे पहले ऑस्ट्रेलिया अंडर-21 टीम के खिलाफ लगातार दो मैच हार चुका था, लेकिन इस जीत के साथ, मेहमान टीम इस नई लय को बरकरार रखते हुए इस दौरे के बाकी मैचों में वापसी करने की उम्मीद करेगी। भारत अपने ऑस्ट्रेलिया दौरे के समापन के लिए 30 सितम्बर और दो अक्टूबर को ऑस्ट्रेलिया के प्रमुख हॉकी वन लीग में खेलने वाले क्लब कैनबरा चिल के खिलाफ दो मैच खेलेगा।

आरसीए अंडर-23 चैलेंजर ट्रॉफी आगामी एक अक्टूबर से जयपुर में खेली जाएगी

जयपुर, 29 सितंबर। आरसीए एडहॉक कमेटी संयोजक डी डी कुमावत के अनुसार बीसीसीआई के आगामी घरेलू क्रिकेट सत्र 2025-26 की अंडर 23 प्रतियोगिता में भाग लेने वाली राजस्थान टीम के संभावितों के चयन हेतु आरसीए के तत्वाधान में आगामी 1 अक्टूबर 2025 से अंडर 23 चैलेंजर ट्रॉफी खेली जाएगी। चैलेंजर ट्रॉफी हेतु 4 टीमों का चयन राजस्थान सीनियर चयन कमेटी ने आरसीए द्वारा आयोजित राज्य स्तरीय अंडर 23 प्रतियोगिता में खिलाडियों के प्रदर्शन के आधार पर किया।

टीम अ : राहुल गर्गोशनिक ग्रोवर, सोहन जयफयाश, शोभित मिश्रा, आयुष अमेरिका, पार्थ यादव, सलाउद्दीन, पुष्पेंद्र सिंह, चेतन शर्मा, शुभम खंडेलवाल, समरजीत सिंह, आर्यन जैनचंद्र पाल सिंह।

टीम बी : सौरभ कुमार गोदारा, मोल चेलानिम्, अरमान, प्रवीण चौधरी, महेंद्र चौधरी, गणेश हिंगरा, अनुभव गहलोत, तनकुश कुमार सर्वज्ञ, पनेरिया व्यांश सिंह, भगवान सिंह, शुभम सिंह, मेहुल पारीक।

टीम सी : सौरभ सिंह राजपूत, धर्मवीर सैनी, दर्शन जैन, मिनफ शेख, राहुल चौधरी, रामेश्वर, गैरी मोहम्मद हैं। सदगणेश सुथार वंश प्रताप, नकित कुमार रोहिल, संग्राम सिंह, देव यादव, सम्राट सिंह.

टीम डी : एनएमेजय सिंह भाटी, दिग्विजय सहारन, निलेष टंकादित्य, लूना पुखराज, कुमार जयंत गठर, विश्वजीत सिंह, मनीष आचार्य, पुलकित गुप्ता, भवानी सुथारन, साचिन लखेसर, सिद्धार्थ गौतम.

राजस्थान के बॉडी बिल्डर विशाल सिंह ने दक्षिण एशिया में जीता कांस्य पदक

जयपुर, 29 सितंबर। भूटान में आयोजित हुई साउथ एशिया में बॉडीबिल्डिंग एंड मैन फिजिक्स चैंपियनशिप में राजस्थान के विशाल सिंह रावत ने 75 किलोग्राम भार वर्ग में ब्रोंज मेडल जीता राजस्थान बॉडी बिल्डिंग एसोसिएशन के अध्यक्ष नवीन यादव ने बताया कि अजमेर के विशाल सिंह पूर्व में भी राष्ट्रीय स्तर पर पदक जीत चुके हैं। राज्य संघ के अध्यक्ष नवीन यादव सचिव अशोक औदिचय कोषाध्यक्ष राजेश यादव सहित संपूर्ण राजस्थान राज्य संघ के सभी पदाधिकारी ने अंतरराष्ट्रीय स्तर पर पदक प्राप्त करने पर विशाल सिंह रावत को बधाई दी।

अरावली क्रिकेट अकादमी जीती

जयपुर, 29 सितम्बर। अंडर 13 पिंकसिटी कप में वर्धमान क्रिकेट अकादमी ने पहले बल्लेबाजी करते हुए 22 ओवर में 49 रन 10 विकेट के नुकसान पर बनाएं। अरावली क्रिकेट अकादमी की ओर से लखन ने 5 और रामनिवास ने 3 विकेट लिए। लक्ष्य का पीछा करने उतरी अरावली क्रिकेट अकादमी ने 6 ओवर में 50 रन 2 विकेट के नुकसान पर बनाकर जीत हासिल कर ली। वर्धमान क्रिकेट अकादमी की ओर से सिद्धार्थ ने दो विकेट लिया। मैन ऑफ द मैच लखन को चुना गया!

पीकेएल-12 : अपने डेब्यू मैच में जमकर दहाडे अंकित दहिया, यूपी योद्धाज को हराकर गुजरात जांयट्स ने लगातार पांच हार के बाद चखा पहली जीत का स्वाद

चेन्नई, 29 सितंबर। प्रो कबड्डी लीग (पीकेएल) में अपना डेब्यू मैच खेलने उतरे रेडर अंकित दहिया ने डिफेंस में हाई फाइव लगाते हुए सोमवार को यहां एसडीएटी मल्टी परपज इनडोर स्टेडियम में खेले गए 12वें सीजन के 53वें मैच में गुजरात जायंट्स को यूपी योद्धाज के खिलाफ 33-27 से जीत दिला दी। गुजरात जायंट्स की इस सीजन में नौ मैचों में लगातार पांच हार के बाद यह पहली और इस सीजन की दूसरी जीत है। टीम के अब चार अंक हो गए हैं। वहीं, यूपी योद्धाज को नौ मैचों में पांचवीं हार झेलनी पड़ी है। विजेता गुजरात के लिए अंकित दहिया के आठ प्वाइंट के अलावा राकेश ने छह और शादलू ने आठ प्वाइंट लिए। यूपी के लिए भवानी राजपूत ने आठ और गगन गौड़ा ने छह अंक जुटाए। पीकेएल में अपना डेब्यू मैच खेलने उतरे अंकित दहिया ने शानदार शुरुआत की। लेकिन शुरुआत पांच मिनटों में दोनों टीमें 5-5 की बराबरी पर थी। गुजरात जायंट्स के लिए एचएस राकेश ने आठवें मिनट में डू ऑर डाई में सुपर रेड लगाकर अपनी टीम को तीन अंक और दिला दिए और इससे गुजरात 8-5 से आगे हो गई। इसी बीच, शादलू ने भी सुपर रेड लगाकर यूपी को ऑलआउट कर दिया। जायंट्स की टीम ने इसके साथ ही पहले 10 मिनट के खेल में 12-7 की लीड बना ली। मैच में गगन गौड़ा के पांच प्वाइंट के बावजूद 15वें मिनट तक यूपी योद्धाज की टीम चार अंक से पीछे चल रही थी। यूपी ने हालांकि फिर डू ऑर डाई में राकेश को टैकल करके डिफेंस में अपना अंक हासिल किया। इसके बाद भवानी राजपूत ने डू ऑर डाई में सुपर रेड लगाकर अपनी टीम को मुकाबले में बनाए रखा। उधर आज शादलू फॉर्म में लौट चुके थे और पहले हाफ में पांच प्वाइंट लेकर उन्होंने शुरुआती 20 मिनटों में गुजरात जायंट्स को 21-16 से आगे रखा। यूपी योद्धाज ने दूसरे हाफ में गुमान सिंह को मैट पर उतारा। लेकिन वो भी अपने लय में नहीं दिखे। जायंट्स के पास 25वें मिनट तक 23-19 की बढ़त बरकरार थी। इसी बीच, शादलू आउट होकर मैट से बाहर चले गए और इसके बाद भी 30वें मिनट तक टीम की चार अंकों की लीड कायम थी। पीकेएल में अपना डेब्यू मैच खेल रहे रेडर अंकित दहिया ने गुजरात के लिए डिफेंस में अपना हाई फाइव पूरा कर लिया। मैच के 35वें मिनट तक गुजरात जायंट्स 29-24 से आगे थी। जायंट्स की टीम ने अंतिम मिनटों में भी अपनी लीड को बरकरार रखते हुए 33-27 से मैच को अपने नाम कर लिया।

हॉकी इंडिया ने सीनियर पुरुष राष्ट्रीय कोचिंग शिविर के लिए 33 सदस्यीय कोर ग्रुप की घोषणा की

बेंगलुरु, 29 सितंबर। हॉकी इंडिया ने मंगलवार से 18 अक्टूबर तक बेंगलुरु स्थित भारतीय खेल प्राधिकरण केंद्र में चलने वाले सीनियर पुरुष राष्ट्रीय कोचिंग शिविर के लिए 33 सदस्यीय कोर संभावित समूह की घोषणा की। यह शिविर भारतीय टीम के लिए आगामी दो प्रमुख अंतरराष्ट्रीय प्रतियोगिताओं 31वें सुल्तान अजलान शाह कप 2025, जो 22 से 29 नवंबर तक मलेशिया के इपोह में खेला जाएगा, आज यहां शिविर को लेकर भारतीय पुरुष हॉकी टीम के मुख्य कोच क्रेग फुल्टन ने कहा, "एशिया कप जीतना और विश्व कप के लिए क्वालीफाई करना हमारे लिए एक महत्वपूर्ण उपलब्धि थी, लेकिन यह केवल शुरुआत है। खिलाड़ी नए जोश के साथ शिविर में वापस आए हैं, और अब हमारा ध्यान पूरी तरह से सुल्तान अजलान शाह टूर्नामेंट के लिए रणनीतिक तैयारी पर केंद्रित है। विश्व कप की तैयारी शुरू करने और अपने बड़े लक्ष्यों की ओर बढ़ने के लिए सीधे दक्षिण अफ्रीका जाने से पहले यह एक और महत्वपूर्ण परीक्षा होगी। सफलता केवल परिणामों के बारे में नहीं है - यह इस बारे में है कि हम एक टीम के रूप में कैसे सीखते हैं, अनुकूलन करते हैं और एक साथ बढ़ते हैं।"

सीनियर पुरुष शिविर के लिए 33 सदस्यीय सूची इस प्रकार है:-

गोलकीपर:- कृष्ण बी पाठक, सूरज करकेरा, पवन और मोहित होन्नेनाहल्ली शशिकुमार

डिफेंडर:- संजय, जुगराज सिंह, हरमनप्रीत सिंह, अमित रोहिदास, सुमित, नीलम संजीप , जरमनप्रीत सिंह, पूवन्ना चंदूरा बॉबी, यशदीप सिवाच, अमनदीप लाकड़ा और वरुण कुमार

मिडफील्डर:- राजिंदर सिंह, राज कुमार पाल, हार्दिक सिंह, विवेक सागर प्रसाद, मनप्रीत सिंह, मोइरांगथेम रबीचंद्र सिंह, विष्णु कांत सिंह, नीलकंठ शर्मा, मोहम्मद राहील मौसीन और मनिंदर सिंह।

फारवर्ड: - अभिषेक, सुखजीत सिंह, सेल्वम कार्थी, शिलानंद लकड़ा, मनदीप सिंह, दिलप्रीत सिंह, अंगद बीर सिंह और आदित्य अर्जुन लालगे।

श्रीलंका के खिलाफ भारतीय महिला टीम विश्वकप में जीत के साथ शुरुआत करने उतरेगी

गुवाहाटी, 29 सितंबर। मजबूत रिकार्ड के साथ प्रबल दावेदार के रूप में भारतीय महिला क्रिकेटर मंगलवार को श्रीलंका के खिलाफ आईसीसी महिला विश्व कप 2025 के पहले मैच में जीत हासिल करने उतरेगी।

एकदिवसीय मुकाबलों की बात की जाये तो भारत ने श्रीलंका के खिलाफ खेले गए 35 मैचों में से 31 में जीत हासिल की है। मेहमान टीम को केवल तीन मैच जीते है और एक बेनतीजा रहा है। यह शानदार रिकॉर्ड भारत को गुवाहाटी के बरसापारा क्रिकेट स्टेडियम में होने वाले मुकाबले में मनोवैज्ञानिक बढ़त दिलाता है। इस साल शानदार फॉर्म में चल रही कप्तान हरमनप्रीत कौर और स्मृति मंधाना का बल्लेबाजी में दबदबा होगा। उन्होंने 14 मैचों में 66.28 की औसत से 928 रन बनाए हैं, जिसमें चार शतक और तीन अर्द्धशतक शामिल हैं। जेमिमाह रोड्रिग्स, हरलीन देओल, दीप्ति शर्मा और प्रतीका रावल एक चुनौतीपूर्ण स्कोर बनाने में सक्षम टीम बनाती है। भारतीय गेंदबाजी की बात की जाये तो स्नेह राणा 4.97 की इकॉनमी रेट से 21 विकेट लेकर शीर्ष पर हैं। रेणुका सिंह ठाकुर, अरुंधति रेड्डी, क्रांति गौड़ और दीप्ति शर्मा, सभी श्रीलंकाई बल्लेबाजों को रोकने और महत्वपूर्ण मौकों पर विकेट झटकने में सक्षम है। वहीं चामरी अटापट्टू की अगुवाई में श्रीलंका इतिहास को फिर से लिखने की कोशिश करेगा। उनकी उम्मीदें भरोसेमंद हर्षिता समरविक्रमा पर टिकी हैं, जिन्होंने इस साल आठ मैचों में 48.00 की औसत से 336 रन बनाए हैं।

स्पिनर देवमी विहंगा उनकी बेहतरीन गेंदबाज रही हैं, उन्होंने चार मैचों में 11 विकेट लिए हैं। इन पर भारत के स्कोर को रोकने की जिम्मेदारी होगी। बरसापारा की पिच बल्लेबाजों के लिए अनुकूल मानी जाती है, इस पिच पर एकदिवसीय मैचों में पहली पारी का औसत स्कोर लगभग 300 रन होता है। बीच के ओवरों में स्पिनर को टर्न मिल सकता हैं। संभावित भारतीय महिला एकादश: हरमनप्रीत कौर (कप्तान), स्मृति मंधाना, प्रतीक रावल, जेमिमा रोड्रिग्स, हरलीन देओल, दीप्ति शर्मा, स्नेह राणा, ऋचा घोष (विकेट कीपर), अरुंधति रेड्डी, क्रांति गौड़ और रेणुका सिंह ठाकुर। संभावित श्रीलंका महिला एकादश: चामरी अटापट्टू (कप्तान), हर्षिता समाराविक्रमा, हासिनी परेरा, विशमी गुणरत्ने, नीलाक्षी डी सिल्वा, अनुष्का संजीवनी (विकेटकीपर), पिउमी बदलगे, देवमी विहंगा, सुगंडिका कुमारी, इनोका राणावीरा और मल्की मदारा।

भारत दौरे से पहले विंडीज को एक और झटका

जोसेफ के बाद एक और गेंदबाज चोट के कारण बाहर

नई दिल्ली, 29 सितंबर। वेस्टइंडीज के तेज गेंदबाज अल्जारी जोसेफ पीठ के निचले हिस्से में चोट के कारण सोमवार को भारत के विरुद्ध टेस्ट सीरीज से बाहर हो गए, जिससे टीम को एक और झटका लगा है। बारबाडोस के बाएं हाथ के तेज गेंदबाज जेडियाह ब्लेड्स को दो अक्टूबर से अहमदाबाद में शुरू होने वाली दो मैच की सीरीज के लिए जोसेफ की जगह टीम में शामिल किया गया है। क्रिकेट वेस्टइंडीज (सीडब्ल्यूआई) ने कहा कि अल्जारी जोसेफ पीठ के निचले हिस्से में चोट के कारण भारत के विरुद्ध आगामी टेस्ट सीरीज से बाहर हो गए हैं। असहजता की शिकायत के बाद स्कैन से पता चला कि पहले ठीक हो चुकी पीठ के निचले हिस्से की चोट फिर उभर आई है। बयान के अनुसार, नेपाल के विरुद्ध मौजूदा सीरीज के बाद होने वाले दो टेस्ट मैच के लिए कवर के तौर पर वनडे और टी20 अंतरराष्ट्रीय मुकाबलों में खेल चुके जेडियाह ब्लेड्स को टीम में शामिल किया गया है। क्रिकेट वेस्टइंडीज ने कहा कि अनुभवी ऑलराउंडर जेसन होल्डर ने पूर्व निर्धारित चिकित्सा प्रक्रिया से गुजरने के लिए भारत में टीम में शामिल होने के प्रस्ताव को ठुकरा दिया।

मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने सोमवार को जयपुर में नारायण विहार, पत्रकार कॉलोनी और खोरा बीसल में तीन नए पुलिस थानों का वर्चुअल शुभारंभ किया। इस अवसर पर स्वायत्त शासन राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) झाबर सिंह खर्रा, पुलिस महानिदेशक राजीव कुमार शर्मा, वरिष्ठ पुलिस अधिकारी, सीएलजी सदस्य उपस्थित थे।

नये थानों से अपराध नियंत्रण व महिला सुरक्षा को गति मिलेगी -भजनलाल

मुख्यमंत्री ने जयपुर में नारायण विहार, पत्रकार कॉलोनी व खोरा बीसल में नये थानों का शुभारंभ किया

■ मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने कहा कि पुलिस का रैस्पॉन्स टाइम सुधारने के लिए 25 इन्टरसैप्टर वाहन, 250 मोटर साइकिलें और 500 मोबाइल यूनिट वाहन प्रदान किये गये हैं।

जयपुर, 29 सितम्बर। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने सोमवार को जयपुर में नारायण विहार, पत्रकार कॉलोनी और खोरा बीसल में तीन नए पुलिस थानों का वर्चुअल शुभारंभ किया। इस अवसर पर उन्होंने कहा कि राज्य में कानून का राज स्थापित करना और अपराधियों पर कठोर कार्रवाई करना सरकार की सर्वोच्च प्राथमिकता है।

मुख्यमंत्री ने कहा कि राज्य में पुलिस व्यवस्था को आधुनिक और सशक्त बनाने के लिए कई क्रांतिकारी कदम उठाए गए हैं। सरकार के कार्यकाल में अपराधों में उल्लेखनीय गिरावट दर्ज की गई है। उन्होंने बताया कि एंटी गैंगस्टर टास्क फोर्स और पेपर लीक मामलों की जांच के लिए एसआईटी का गठन कर सख्त कार्रवाई की जा रही है।

राज्य सरकार द्वारा प्रभावी पुलिसिंग के लिए 22 नए पुलिस थानों का सृजन, 8 चौकियों का थानों में क्रमोन्नयन तथा 35 नई पुलिस चौकियों की स्वीकृति दी गई है। साथ ही, जयपुर में एंटी नारकोटिक्स टास्क फोर्स के लिए एक नया थाना और 9 चौकियों की स्थापना हेतु 255 पद सृजित किए गए हैं। मुख्यमंत्री ने बताया कि राज्य में 65 एंटी रोमियो स्क्वॉड का गठन किया गया है। इसके साथ ही, पद्मिनी, काली बाई और अमृता देवी नामक तीन नई महिला बटालियन गठित की गई हैं। इसके अतिरिक्त, 500 कालिका पेट्रोलिंग यूनिट तैनात की गई हैं और महिला हेल्पलाइन 1090 के माध्यम से त्वरित सहायता उपलब्ध कराई जा रही है। इसके अलावा, गिरफ्तार व्यक्तियों और गुमशुदा लोगों की जानकारी अब पुलिस पोर्टल पर उपलब्ध है। पुलिस का रेस्पॉन्स टाइम सुधारने के लिए 25 इंटरसेप्टर वाहन, 750 मोटरसाइकिलें और 500 मोबाइल यूनिट वाहन प्रदान किए गए हैं। साथ ही, एफएसएल में 123 नए पद सृजित कर जांच की गुणवत्ता और समयबद्धता सुनिश्चित की जा रही है।

इस अवसर पर मुख्यमंत्री ने नारायण विहार थाना परिसर का फीता काटकर उद्घाटन किया तथा अन्य थानों का वर्चुअली लोकार्पण किया। कार्यक्रम में स्वायत्त शासन राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) झाबर सिंह खर्रा, पुलिस महानिदेशक राजीव कुमार शर्मा, वरिष्ठ पुलिस अधिकारी, सीएलजी सदस्य और बड़ी संख्या में आमजन उपस्थित थे।

'राहुल को धमकी देने वाले पर कार्यवाही क्यों नहीं?

नयी दिल्ली, 29 सितम्बर। कांग्रेस ने लोकसभा में विपक्ष के नेता राहुल गांधी को जान से मारने की धमकी की कड़ी निंदा करते हुए कहा है कि यह हैरानी की बात है कि भाजपा गांधी को जान से मारने की धमकी देने वाले अपने प्रवक्ता के खिलाफ कार्रवाई नहीं कर रही है।

■ कांग्रेस पार्टी ने यह सवाल उठाते हुए यह भी कहा कि यह धमकी आवेश में की गई टिप्पणी नहीं बल्कि सोची समझी रणनीति का हिस्सा है।

पार्टी ने सोमवार को कहा कि भाजपा प्रवक्ता की यह धमकी अतिश्योक्ति नहीं है, बल्कि सोची-समझी रणनीति का हिस्सा है। गांधी को पहले भी विभिन्न अवसरों पर धमकियां दी जाती रही हैं, लेकिन भाजपा प्रवक्ता की लोकसभा में विपक्ष के नेता गांधी को लाइव टेलीविजन शो पर जान से मारने की यह धमकी उसकी मंशा पर गंभीर सवाल उठाती है।

कांग्रेस ने एक बयान में सवाल किया कि क्या गांधी के खिलाफ कोई बड़ी और भयावह साजिश हो रही है, इसलिए भाजपा जान से मारने की धमकियों की राजनीति का समर्थन करती है। अगर ऐसा नहीं है तो भाजपा को तत्काल अपने प्रवक्ता के खिलाफ कार्रवाई करनी चाहिए।

कांगेस का कहना है कि यह अत्यंत गंभीर मामला है, इसलिए पार्टी नेता के सी वेणुगोपाल ने इस मुद्दे पर गृहमंत्री अमित शाह को पत्र लिखकर प्रवक्ता के खिलाफ कार्रवाई की मांग की है।

कैनडा ने लॉरेंस बिश्नोई गैंग को आतंकवादी संगठन घोषित किया

कैनडा सरकार ने दावा किया कि बिश्नोई गैंग देश में कई गैंग वॉर व हत्याओं में शामिल है

■ कैनडा के कई राजनेताओं ने लॉरेंस बिश्नोई गैंग पर प्रतिबंध की माँग की थी। जून में ब्रिटिश कोलम्बिया में प्रधानमंत्री ने तथा जुलाई में अल्बर्टा के प्रधानमंत्री ने इस गैंग पर प्रतिबंध लगाने की मांग की थी।

ओटावा, 29 सितंबर। कैनडा ने लॉरेंस बिश्नोई गैंग को प्रतिबंधित आतंकवादी संगठन घोषित कर दिया है। इस गैंग पर प्रतिबंध लगाने की मांग बहुत पहले से की जा रही थी। कैनडा का दावा है कि बिश्नोई गैंग उनके देश में कई गैंगवार और हत्याओं में शामिल है। लॉरेंस बिश्नोई गुजरात के साबरमती सेंट्रल जेल में बंद है। कैनडा के सार्वजनिक सुरक्षा मंत्री गैरी आनंदसांगरी ने घोषणा की कि कैनडा ने बिश्नोई गिरोह को देश की आपराधिक संहिता के तहत, आधिकारिक तौर पर आतंकवादी संगठन के रूप में सूचीबद्ध किया है। एक्स पर पोस्ट किए गए एक बयान में, आनंदसांगरी ने लिखा, "आज हमारी सरकार ने बिश्नोई गिरोह को एक आतंकवादी संगठन के रूप में सूचीबद्ध किया है। कैनडा में हिंसा, आतंक और समुदायों को धमकाना कभी बर्दाश्त नहीं किया जाएगा।"

कैनडा के कई राजनेताओं ने लॉरेंस बिश्नोई गैंग पर प्रतिबंध की मांग की थी। 17 जून को ब्रिटिश कोलंबिया के प्रधानमंत्री डेविड एबी ने कहा, "आतंकवादी घोषित किए जाने से पुलिस को इस गतिविधि की जांच करने और उसे रोकने के लिए आवश्यक उपकरणों का उपयोग करने में मदद मिलती है। इससे पुलिस को महत्वपूर्ण जांच टूल्स मिलते हैं।" जुलाई में, अल्बर्टा के प्रधानमंत्री डैनियल स्मिथ ने भी लॉरेंस बिश्नोई गैंग पर प्रतिबंध की मांग की थी।(कैनडा की अपराध निरोधक राज्य सचिव रूबी सहोता ने कहा कि अगर कोई समूह आतंकवादी समूह होने के पैरामीटर्स पर आधारित है तो उसे बिना कोई देरी किए सूचीबद्ध कर दिया जाएगा।

14 मई को कैनडा के टोरंटो में 51 वर्ष के हरजीत सिंह ढ ड्डा की उनके ऑफिस के पॉर्किंग में हत्या कर दी गई थी। हमलावरों ने हरजीत को गोलियों से छलनी कर दिया था। उनकी अस्पताल में इलाज के दौरान मौत हो गई थी। बाद में बिश्नोई गैंग से जुड़े दो लोगों ने फेसबुक पोस्ट में हरजीत की हत्या की जिम्मेदारी ली थी।

घाटी में ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

कश्मीर संभाग में जिन सात टूरिस्ट स्पॉट को फिर से खोला गया, उनमें अरु घाटी, राफ्टिंग पॉइंट यान्नर, अक्कड़ पार्क, पादशाही पार्क और कमान पोस्ट शामिल हैं।

इसके अलावा, जम्मू संभाग में भी 5 पर्यटन स्थलों को खोला गया है, जिनमें डगन टॉप (रामबन), धग्गर (कठुआ), शिव गुफा (सालाल, रियासी) शामिल हैं। इससे पहले, जून महीने में प्रशासन ने 16 अन्य पर्यटन स्थलों को भी फिर से खोला था, जिनमें पहलगाम के कुछ हिस्से भी शामिल थे।

पाक अधिकृत ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

यूनाइटेड कश्मीर पीपुल्स नेशनल पार्टी ने पाकिस्तानी प्रशासन पर आरोप लगाया है कि वह जानबूझकर संचार व्यवस्था ठप कर रहा है, ताकि क्षेत्र को अलग-थलग किया जा सके और सूचना प्रवाह रोका जा सके।

पार्टी ने संयुक्त राष्ट्र, अमेरिका, यूरोपीय संघ और अन्य वैश्विक शक्तियों से अपील की है कि वे हस्तक्षेप करें और 13 मई 2024 जैसी एक और त्रासदी को रोकें, जब मुज़फ्फराबाद में पाकिस्तानी रेंजरों ने शांतिपूर्ण प्रदर्शन कर रहे लोगों पर गोली चलाई थी, जिसमें तीन नागरिकों की मौत हुई थी, यह मामला अब भी अनसुलझा है।

पार्टी का कहना है कि पाक अधिकृत कश्मीर और गिलगित-बाल्टिस्तान अभी भी राजनीतिक रूप से उपेक्षित क्षेत्र हैं, जहां नागरिकों को बोलने, चलने और स्व-शासन के अधिकार नहीं दिए जाते। यह एक ऐसा आरोप है, जो पाकिस्तान के कश्मीरी आत्मनिर्णय के झूठ को उजागर करता है। यह संकट चीन के रणनीतिक समीकरण को भी जटिल बना सकता है, क्योंकि चीन-पाकिस्तान इकोनॉमिक कॉरिडोर के कुछ हिस्से गिलगित-बाल्टिस्तान से होकर गुजरते हैं। यदि अस्थिरता बढ़ी, तो इससे निवेश प्रभावित होगा, पाकिस्तान की कमज़ोर अर्थव्यवस्था पर और दबाव पड़ेगा तथा बीजिंग-इस्लामाबाद संबंधों में खटास आ सकती है।

यह संकट महज़ कानून-व्यवस्था का मुद्दा नहीं है - यह पाकिस्तान के कब्ज़े वाले क्षेत्रों में विफल शासन का जनमत संग्रह है। दुनिया देख रही है, और इस्लामाबाद के पास अब सिर्फ दो विकल्प हैं सुधार और संवाद के रास्ते से आगे बढ़ना, या पाक अधिकृत कश्मीर को एक और सुरक्षा संकट में बदल देना।

भारत और वैश्विक समुदाय के लिए संदेश स्पष्ट है कि पाक अधिकृत कश्मीर के सुखी होने का भ्रम टूट चुका है।" अब जो सामने आ रहा है, वह एक ऐसा क्षेत्र है जो अपने बुनियादी अधिकारों की माँग कर रहा है, और ऐसा करते हुए, वह दक्षिण एशिया के राजनीतिक भूगोल को नए सिरे से गढ़ रहा है।

क्रिकेट मैच के ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

अपने रुख के चलते, 1974 में रोडेशिया के खिलाफ डेविस कप टेनिस फाइनल खेलने से भी इनकार कर दिया था। वर्ष1971 में, जब भारत-पाकिस्तान युद्ध अपने चरम पर था, तब भी दोनों देशों के खिलाड़ी ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ शेष विश्व 'रेस्ट ऑफ द वर्ल्ड' टीम का हिस्सा थे। कहा जाता है कि उस समय भारतीय और पाकिस्तानी खिलाड़ी एक ही कमरे में ठहरे थे।

कांग्रेस नेता शशि थरूर ने कहा कि मैदान पर हुआ यह ड्रामा दुर्भाग्यपूर्ण था और मौजूदा रिश्तों को देखते हुए, भारत को पाकिस्तान के खिलाफ खेलने का फैसला नहीं करना चाहिए था।

भारतीय रेल नैटवर्क से जुड़ेगा भूटान

भारत सरकार ने 4 हज़ार करोड़ रूपए की परियोजना को मंजूरी दी

■ रेल मंत्री अश्विनी वैष्णव ने विदेश सचिव विक्रम मिसरी के साथ प्रेस कॉन्फ्रेंस में यह जानकारी दी और कहा, यह रेलें बिजली से चलेंगी, जिससे पर्यावरण को भी नुकसान नहीं होगा।

नयी दिल्ली, 29 सितम्बर। भारत ने रणनीतिक दृष्टि से महत्वपूर्ण पड़ोसी देश भूटान को अपने रेलवे नेटवर्क से जोड़ने के लिए सोमवार को कुल चार हजार करोड़ रुपये से अधिक की दो महत्वाकांक्षी रेल-मार्ग परियोजनाओं के निर्माण की घोषणा की।

इसका निर्माण पूरा होने पर भूटान के दो शहर गेलेफू और समत्से क्रमशः असम और पश्चिम बंगाल से सीधे रेलगार्म से जुड़ जायेंगे। इससे दोनों देशों के बीच यात्री और माल परिवहन में भारी सुधार होगा।

रेल मंत्री अश्विनी वैष्णव ने यहां विदेश सचिव विक्रम मिसरी के साथ एक संवाददाता सम्मेलन में बताया कि इनमें से पहली परियोजना असम के कोकराझार से भूटान के गेलेफू और दूसरी पश्चिम बंगाल के बनारहाट से समत्से के बीच रेल संपर्क के लिए तैयार की गयी है । उन्होंने बताया कि बनारहाट और भूटान के औद्योगिक शहर समत्से के बीच 16 किलोमीटर लम्बी रेलवे लाइन विकसित की जायेगी और यह लाइन भूटान को पहली बार रेल संपर्क से जोड़ेगी।

भूटान के महत्वपूर्ण शहर गेलेफू को कोकराझार से जोड़ने वाला रेल मार्ग करीब 70 किलोमीटर लंबा होगा। इस तरह इन परिजनाओं से भूटान में पहली बार करीब 90 किलोमीटर के रेल मार्ग उपलब्ध होंगे, जो भारतीय रेल-नेटवर्क से जुड़े होंगे।

रेल मंत्री ने कहा कि इन दोनों परियोजनाओं को चार साल में पूरा किया जाएगा और इन पर करीब 4033 करोड़ रुपये का खर्च आएगा। भूटान के लिए विकसित किये जाने वाली रेलवे लाइनों को वंदेभारत रेल चलाने के अनुकूल बनाया जाएगा।

उन्होंने कहा कि भूटान के लिए भारत सबसे बड़ा व्यापारिक साझेदार है और उसका बाहरी दुनिया के साथ अधिकांश व्यापार भारतीय बंदरगाहों और भारत के सड़क मार्गों के माध्यम से होता है। प्रस्तावित रेलवे नेटवर्क के तैयार होने के बाद भूटान की अर्थव्यवस्था को काफी फायदा होगा।

भूटान को जोड़ने वाली रेल लाइनें बिजली से संचालित होंगी है और इस तरह रेल परिचालन से पर्यावरण को कोई नुकसान नहीं होगा।

'गौतम-शिल्पी मर्डर केस में लिप्त थे सम्राट चौधरी'

पटना, 29 सितंबर। "जन सुराज" प्रमुख प्रशांत किशोर ने गौतम-शिल्पी मर्डर केस में बिहार के डिप्टी सीएम सम्राट चौधरी की संलिप्ता का आरोप लगाया है। प्रशांत किशोर ने सम्राट चौधरी का नाम लेकर कहा कि बेहतर होगा कि वे खुद इस मामले में अपनी संलिप्ता को लेकर जवाब दे दें। वे अगर ऐसा नहीं करते हैं तो हम लोग अपने अगले प्रेस कॉन्फ्रेंस में इस मामले से जुड़े साक्ष्य को जारी कर पूरी कहानी बता देंगे। जनसुराज के प्रमुख प्रशांत किशोर ने उपमुख्यमंत्री सम्राट चौधरी पर गंभीर आरोप लगाते हुए कहा कि सीबीआई ने बिहार के सबसे चर्चित शिल्पी हत्याकांड में साधु यादव के अलावा, सम्राट चौधरी को भी अभियुक्त बनाया था। सीबीआई की टीम ने सम्राट चौधरी उर्फ राकेश कुमार से लंबी पूछताछ भी की थी। उनका सैंपल भी लिया गया था। लेकिन तत्कालीन लालू- राबड़ी सरकार ने साधु यादव को बचाने के लिए पूरे मामले को रफा दफा कर दिया था। डिप्टी सीएम सम्राट चौधरी ने आरोपों पर जवाब देते हुए कहा, 1997-1998 में ही मुझे कोर्ट ने बरी किया है। उनके आरोपों में दम नहीं है।

सहयोग पोर्टल पर सुप्रीम कोर्ट में अपील करेगा एक्स

एक्स ने कहा, कर्नाटक हाई कोर्ट के आदेश को सुप्रीम कोर्ट में चुनौती देंगे, ताकि "फ्री स्पीच" की रक्षा हो सके

■ सहयोग पोर्टल के जरिए देश भर के पुलिस अधिकारियों को अधिकार मिल गया है कि वे कोई भी "कन्टैंट" सोशल मीडिया से हटा सकते हैं।

नई दिल्ली, 29 सितंबर। एलन मस्क का सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स (पूर्व में ट्विटर) भारत में अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता को लेकर एक बार फिर विवादों के केन्द्र में आ गया है। कंपनी ने सोमवार को कहा कि वह कर्नाटक हाईकोर्ट के उस फैसले के खिलाफ अपील करेगी, जिसमें सरकार के "सहयोग पोर्टल" को मंजूरी दी गई है। इस पोर्टल के जरिए, देशभर के करीब 20 लाख पुलिस अधिकारियों को कंटेंट हटाने का अधिकार मिल गया है।

एक्स ने अपने आधिकारिक बयान में कहा, "हम इस आदेश को चुनौती देंगे, ताकि फ्री स्पीच की रक्षा की जा सके।" कंपनी का आरोप है कि सहयोग पोर्टल अधिकारियों को सिर्फ अवैधता के आरोप के आधार पर कंटेंट हटाने का आदेश देने का अधिकार देता है। इसमें न तो न्यायिक समीक्षा होती है और न ही प्रभावित यूज़र्स को कोई सुनवाई का मौका मिलता है। इसके अलावा प्लेटफॉर्म पर गैर-अनुपालन करने पर आपराधिक कार्रवाई का खतरा भी रहता है। एक्स और भारत सरकार के बीच कंटेंट हटाने को लेकर यह पहली लड़ाई नहीं है। पहले भी कंपनी कई बार सरकार के आदेशों को सेंसरशिप करार दे चुकी है। एलन मस्क खुद को फ्री स्पीच एब्सोल्यूटिस्ट बताते हैं और कई देशों की सरकारों के साथ कंटेंट मॉडरेशन को लेकर उनका टकराव रहा है।

यह पोर्टल अक्तूबर 2023 में शुरू किया गया था। इसके जरिए अधिकृत अधिकारी सीधे टैक कंपनियों तक कंटेंट हटाने का आदेश भेज सकते हैं। हाईकोर्ट ने हाल ही में इसे वैध करार दिया था, जिसके खिलाफ अब एक्स अपील करेगा।अब अदालतों में होने वाली सुनवाई यह तय करेगी कि भारत में डिजिटल प्लेटफॉर्म्स पर कंटेंट मॉडरेशन और अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के बीच संतुलन कैसे बनाया जाएगा।

महाराष्ट्र में भारी बारिश, दो दिन में 10 की मौत

मुंबई, 29 सितंबर। भारत मौसम विज्ञान विभाग (आईएमडी) ने मुंबई और मुंबई उपनगरीय, रायगढ़ , ठाणे और पालघर सहित, चार अन्य जिलों के लिए ऑरेंज अलर्ट जारी किया है, जिनमें अलग-अलग स्थानों पर भारी से बहुत भारी बारिश की चेतावनी दी गई है।

यह चेतावनी तटीय महाराष्ट्र में लगातार हो रही बारिश के बीच जारी की गई है, मुंबई में इस मानसून सीजन में 3,000 मिलीमीटर बारिश का आंकड़ा पार हो गया है।

अधिकारियों के अनुसार, 48 घंटों से अधिक समय में पूरे महाराष्ट्र में बारिश से संबंधित घटनाओं में कम से कम दस लोगों की जान चली गई, जबकि देर रात तक बाढ़ प्रभावित इलाकों से 11,800 से अधिक लोगों को बचाया गया है।

राज्य आपदा प्रबंधन विभाग ने बताया कि अकेले नासिक जिले में चार मौतें हुईं, धाराशिव और अहिल्यानगर में दो-दो मौतें हुईं, और जालना और यवतमाल जिलों में एक-एक मौत हुई।

चीन खुले दिल और मुक्त हाथों से डॉक्टर ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

शिक्षित वैज्ञानिक पहले से ही चीन लौट रहे थे और यह एक मजबूत और शायद "अपरिवर्तनीय" प्रवृत्ति थी।

स्वदेशी विज्ञान और प्रौद्योगिकी आधार विकसित करने की पहल कोई और नहीं बल्कि स्वयं चीनी राष्ट्रपति शी जिनपिंग द्वारा निरंतर की जा रही है। वे लंबे समय से चीनी वैज्ञानिकों और शोधकर्ताओं को प्रोत्साहित और सम्मानित करते आ रहे हैं। हाल ही में एक सैन्य प्रदर्शनी में चीन ने जिस अत्याधुनिक तकनीक और हाई-टेक रक्षा उत्पादों का प्रदर्शन किया, वह तो बस शुरुआत भर है।

असल में, चीन के पास ऐसे नतीजे पाने के दो बड़े कारण हैं। पहला, देश में उच्चतम स्तर पर स्वदेशी विज्ञान और प्रौद्योगिकी विकसित करने की राजनीतिक प्रतिबद्धता। कहा जाता है कि "किसी राष्ट्र की तरक्की उसकी विज्ञान और प्रौद्योगिकी की प्रगति से होती है।"

ऐसे समय में, जबकि अमेरिका विदेशी प्रतिभाओं के प्रवेश पर रोक लगाने के लिए सख्त वीज़ा नियम लागू कर रहा है, तब चीन प्रमुख और युवा वैज्ञानिकों व तकनीकी विशेषज्ञों के लिए "के" वीज़ा नाम का नया वीज़ा प्रोग्राम ला रहा है।

दूसरा, चीन के पास इतना बड़ा कोष है कि वह विज्ञान और अनुसंधान को प्रोत्साहन देने के लिए ऐसे क्षेत्रों में भी निवेश कर सकता है जिनका तुरंत कोई उपयोग न हो, लेकिन भविष्य में बड़ा लाभ हो सकता है। चीनी संस्थान और शोध निकाय आर्टिफिशल इन्टैलिजैंस, रोबोटिक्स और नेटवर्क सुरक्षा जैसे क्षेत्रों के शीर्ष विशेषज्ञों को आमंत्रित कर रहे हैं और उन्हें लगभग पाँच लाख डॉलर तक के पैकेज दे रहे हैं। शीर्ष स्तर से मिले इन साफ निर्देशों के साथ चीन, ट्रम्प प्रशासन की सख्ती और एन्टी-इमिग्रेशन माहौल में फंसे प्रतिभाशाली लोगों को आकर्षक पद और सुविधाएं देकर लुभाने की कोशिश कर रहा है। एच-1बी वीज़ा पर ऊंची फीस लगाने की डॉनल्ड ट्रम्प की "अदूरदर्शी" नीति ने उच्च प्रतिभाओं, मुख्य रूप से वैज्ञानिकों, इंजीनियरों और गणितज्ञों, में डर पैदा कर दिया है, जिन्हें अब प्रतिद्वंदी देश अपने यहां बुलाने की कोशिश कर रहे हैं।

ऐसे हालात में ट्रम्प प्रशासन की कार्रवाइयों पर सिर्फ शिकायत करने के बजाय भारत को युद्धस्तर पर पूरी स्थिति की समीक्षा करनी चाहिए और ऐसे प्रतिभाशाली लोगों को आकर्षित करने के लिए योजनाएं और धन उपलब्ध कराना चाहिए, अगर वे अमेरिका से बाहर आने का सोचते हैं। क्योंकि इस शीर्ष प्रतिभा को आकर्षित करने की होड़ बेहद प्रतिस्पर्धी और महंगी भी हो सकती है। पहले से ही अमेरिका का उत्तरी पड़ोसी देश कैनडा सक्रिय हो चुका है। कैनडा के नए प्रधानमंत्री मार्क कार्नी ने इस सप्ताह वॉशिंगटन में काउन्सिल ऑन फॉरेन रिलेशन्स के सामने कहा कि अमेरिका के वीज़ा नियमों में बदलाव पर उनकी नज़र है। उन्होंने कहा, "शायद हम उनमें से कुछ को अपने यहां ला सकें।"

कार्नी, वीज़ा परिवर्तनों से प्रभावित लोगों के लिए कैनडा को एक स्वाभाविक विकल्प के रूप में पेश कर रहे हैं, जहाँ वे अपनी परियोजनाओं को आगे बढ़ाने के लिए नया कर व जगह पा सकते हैं। देश में अनेक विश्वस्तरीय संस्थान और शोध संगठन हैं जो ऐसे प्रतिभाशाली लोगों का स्वागत करने के लिए तैयार हैं।

जर्मनी भी ऐसा ही कर रहा है और उसे उम्मीद है कि अमेरिका से निकले शीर्ष प्रतिभाशाली लोग उसके देश को विकल्प के रूप में देखेंगे। भारत में जर्मन राजदूत विशेष रूप से इस बात की सराहना करते हैं कि भारतीयों ने सिलिकॉन वैली की कंपनियों और व्यापक रूप से शोध संस्थानों, विश्वविद्यालयों और अन्य जगहों के विकास में बड़ी भूमिका निभाई है।

जो देश अब शीर्ष प्रतिभाओं को पाने की होड़ में हैं, उनमें सबसे बड़ा आकर्षण बनकर जो देश उभर रहा है वो है चीन। इसकी वजह यह है कि चीन के पास पैसा है और पूरे देश में संस्थानों का ऐसा जाल है जो वैज्ञानिकों, इंजीनियरों और एसटीईएम (स्टैम) क्षेत्र के लोगों को जगह दे सकता है।

चीन मुख्य रूप से प्रवासी चीनी नागरिकों को निशाना बना रहा है, लेकिन वह अन्य देशों के विशेषज्ञों का भी उतना ही स्वागत करता है। चीन, खासतौर पर रक्षा और सैन्य एप्लिकेशन्स में, अपने तकनीकी आधार को विकसित करने में अत्यधिक तेजी से आगे बढ़ रहा है।

तथापि, अगर भारत अंतर्राष्ट्रीय परिदृश्य में एक खिलाड़ी, एक प्रमुख अर्थव्यवस्था और सबसे बढ़कर नवाचार और विकास के केन्द्र के रूप में बना रहना चाहता है, तो इसके अलावा कोई विकल्प नहीं है। चीन ने समझ लिया है कि विज्ञान और प्रौद्योगिकी किसी भी देश की प्रगति की असली ताकत है और उसने शीर्ष प्रतिभाओं को आकर्षित करने और इसके लिए संस्थागत ढांचा तैयार करने की योजनाएं बना ली हैं।

सौभाग्य से भारत के पास उच्च विज्ञान संस्थानों की अच्छी श्रृंखला है। भारत के पास इस समय उच्च विज्ञान और इंजीनियरिंग के शोध प्रोजेक्ट्स को फंड करने के लिए पैसा भी है। इन्हें तकनीक और क्षमता के तेज विकास को बढ़ावा देने में इस्तेमाल किया जा सकता है। यह सच है कि पहले से मौजूद एक मजबूत ढांचे के साथ विदेश से आने वालों को समायोजित करना कठिन हो सकता है, लेकिन नए पदों पर इन्हें लाकर व्यवस्था में शामिल किया जा सकता है।

किसी भी हाल में, ट्रम्प की इस कठोर नीति से बाहर हुए प्रतिभाशाली लोगों को समाहित करने के लिए भारत को अब संरचनाएं विकसित करने की शुरुआत करनी ही चाहिए। कम से कम नए और युवा प्रतिभाशाली लोगों को तो यहीं रोकने की कोशिश की जा सकती है, ताकि वे सपनों की किसी दूसरी धरती की ओर भागने के बजाय अपने ही देश में बने रहें।

मोदी ने दिल्ली भाजपा कार्यालय का उद्घाटन किया

नयी दिल्ली, 29 सितंबर। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने सोमवार को दिल्ली भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के नये कार्यालय का उद्घाटन किया। इसके साथ ही, दिल्ली भाजपा को राजधानी के दीन दयाल उपाध्याय मार्ग पर स्थायी कार्यालय मिल गया है।

प्रधानमंत्री मोदी ने इस अवसर पर दिल्ली के 14 जिलों के भाजपा कार्यालयों का भी रिमोट दबाकर उद्घाटन किया। मोदी ने इस अवसर पर कार्यकर्ताओं से कहा कि भाजपा कार्यालय किसी मंदिर और देवालय से कम नहीं हैं।

उन्होंने इस अवसर पर कार्यकर्ताओं से आव्हान किया कि भाजपा कार्यालय जनता की आकांक्षाओं और उम्मीदों का केन्द्र बनें, इसके लिए आप सभी का यही प्रयास होना चाहिए कि यहां आने वाले प्रत्येक व्यक्ति की समस्याओं का समाधान हो।

मोदी ने कहा कि दिल्ली भाजपा के नए कार्यालय की पहचान यहां की सुविधाओं से नहीं बल्कि जनसुनवाई और जन सेवा से होनी चाहिए, यह बात हम सभी को हमेशा याद रखनी होगी।

अडानी को प्रॉपर्टीज़ ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

आवेदन में कहा गया, "24,030 करोड़ की कुल मूल राशि में से, सहारा समूह ने लगभग 16,000 करोड़ की राशि वसूल की है और इसे उपरोक्त खाते में जमा किया है।"

सेबी द्वारा सहारा समूह की संपत्तियों को बेचने में असफलता की ओर इशारा करते हुए, एसआईसीसीएल ने कहा कि रिफंड खाते में जमा की गई पूरी राशि केवल सहारा समूह के प्रयासों से ही एकत्र की गई। एसआईसीसीएल ने आगे बताया कि नवंबर 2023 में सहारा समूह के प्रमुख सुब्रत रॉय के निधन के बाद, समूह ने अपना एकमात्र निर्णय लेने वाला व्यक्ति खो दिया। परिवार के सदस्य अब दैनिक व्यावसायिक संचालन में शामिल नहीं हैं और वे निवेशकों के हितों की रक्षा करना चाहते हैं। याचिका में कहा गया कि यह निर्णय सभी हितधारकों के हित में लिया गया है, ताकि उनके दावे उचित रूप से संतुष्ट किए जा सकें और उन्हें अधिकतम मूल्य प्राप्त हो सके। हालांकि, बाजार की मौजूदा स्थिति और उपयुक्त खरीदारों की अनुपस्थिति के कारण प्रयासों को सफलता नहीं मिल पायी है। इन प्रयासों को उस समय और भी जटिल बना दिया गया, जब कई जांच एजेंसियों ने सुब्रत रॉय के परिवार के सदस्यों और समूह के अन्य वरिष्ठ अधिकारियों के खिलाफ जांच शुरू कर दी। 6 सितंबर की टर्म शीट के तहत 88 संपत्तियों की बिक्री को लेकर अदालत से अनुमति मांगते हुए समूह ने कहा कि प्रस्तावित सौदा एक महत्वपूर्ण प्रगति को दर्शाता है, जिससे समूह द्वारा अदालत के आदेशों के तहत निभाई जाने वाली वित्तीय जिम्मेदारियों का पालन सुनिश्चित हो सकेगा।

प्र.मंत्री मोदी ने ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

योगदान दिया है। रूपा पब्लिकेशन की ओर से प्रकाशित इस आत्मकथा का विमोचन सात अक्टूबर को किया जायेगा। इटली की प्रधानमंत्री ने इस आत्मकथा में अपनी कहानी अपने शब्दों में साझा करते हुए बताया है कि कैसे उन्होंने गारबेटेला में मजदूरों की बस्ती में अपना बचपन गुजारने से लेकर इटली की प्रधानमंत्री बनने तक का कठिन सफर तय किया है।

राष्ट्रदूत (एचयूएफ) के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक सोमेश शर्मा द्वारा वतन प्रेस, जी-1-201, रीको औद्योगिक क्षेत्र, हिण्डौन सिटी, जिला करौली से मुद्रित एवं प्रकाशित। संपादक-राजेश शर्मा, आर.एन.आई. नं. RAJHIN/2008/27147 जयपुर कार्यालयः सुधर्मा एम.आई.रोड, जयपुर। फोनः 2372634, 4103333-34, फैक्स : 0141-2373513, कोटा कार्यालय : पलायथा हाऊस, छत्रपति शिवाजी मार्ग, कोटा। फोनः 2386031, 2386032,फैक्सः0744-2386033, बीकानेर कार्यालय : कुम्भाना हाऊस, हनुमान हत्था, बीकानेर। फोनः 2200660, फैक्स 0151-2527371, उदयपुर कार्यालयः आयड मैन रोड आयड, उदयपुर। फोनः 2413092, फैक्स : 0294-2410146, अजमेर कार्यालयः राष्ट्रदूत भवन, चुंगी नाका के पास, अजमेर। फोनः 2627612, फैक्सः0145-2624665 जालोर कार्यालय :- जी 1/63, इन्डस्ट्रीयल एरिया, फेस प्रथम, जालोर। फोन226422,226423, फैक्सः 02973-226424 चूरू कार्यालय : एच-150, रीको औद्योगिक क्षेत्र, चूरू, फोन : 256906, 256907, फैक्सः 01562-256908